ISBN: 978-93-5636-571-1

विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति के जागरूकता का अध्ययन



राजीव अग्रवाल

दीपक कुमार

सरोज

विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति के जागरूकता का अध्ययन

राजीव अग्रवाल

डीन—शिक्षा संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

(उत्तर प्रदेश)

दीपक कुमार

कला—स्नातक, एम०एड०

सरोज

एम०ए०(भूगोल), एल०एल०बी०, बी०एड०

विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन

राजीव अग्रवाल

दीपक कुमार

सरोज

E-Book संस्करण:2022

मूल्य:99

ISBN: 978-93-5636-571-1

प्रकाशन:

सरोज

ग्राम—शोभा सिंह का पुरवा, कर्वी माफ़ी, जिला—चित्रकूट(उत्तर-प्रदेश)

पिन कोड—210205

मो.नं.—9125850963

ई-मेल—sarojkarwi184@gmail.com

प्राक्कथन

भारत सदैव से ही ऋषि, महर्षियों की पवित्र स्थली रही है। प्राचीन काल से ही यहाँ आध्यात्मिक गुरुओं, योगियों, धर्माचार्य, महापुरुषों का अवतरण होता रहा है। यहां अध्यात्म, सांस्कृतिक, मानवीय एवं जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा भारतीय शिक्षा का अभिन्न अंग रहा है।

अध्यात्म पर आधारित शिक्षा हमें अच्छे संस्कार देती है और संस्कृति हमारे चेतना को परिष्कृत करती है। प्राचीन शिक्षा में संस्कारों, समाजिक, संस्कृति राष्ट्रीय चरित्र, विश्व बंधुत्व, बसुधैव कुटुंबकम्, चरित्र निर्माण एवं नैतिक आदर्शों के लिए पर्याप्त स्थान रहा है। इनके शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन, व्यवहारिक व सामाजिक जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति, भावी पीढ़ी के नव निर्माण के लिए हमारे महापुरुषों की प्रेरणा से भारतीय संस्कृत के मूल संस्कारों से विद्यार्थियों ने महामानव होने की प्रतिष्ठा प्राप्त की है और अपने ज्ञान ज्योति से विश्व को आलोकित किया। वास्तव में शिक्षा ज्ञान के प्रसार एवं प्रचार का एक माध्यम है। इसका प्रमुख उद्देश्य विश्व शांति स्थापित करने, बंधुत्व की भावना विकसित करना, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में ज्ञान संचरण, व्यावसायिक दक्षता का विकास करना, जीवन के सभी मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाना तथा आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक "विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन" है। पुस्तक को छ: भागों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में शिक्षा विकास की प्रक्रिया, चित्रकूट इतिहास का आशय, वर्गीकरण एवं महत्व शिक्षा में इतिहास का स्थान, इतिहास, शिक्षण की समस्याओं का इतिहास, चित्रकूट के ऐतिहासिक विरासत, प्रयुक्त शब्दों की व्याख्याएँ, अध्ययन के उद्देश्य, परसीमांकन, शोध विधि, शोध उपकरण, शोध का महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण प्रस्तावना, ऐतिहासिक विरासतों तथा जागरूकता से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्यों की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है।

तृतीय अध्याय में मड़फा के प्राचीन ऋषि मुनि एवं मड़फा के दर्शनीय स्थलों का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में शोध विधि, अध्ययन समष्टि, निर्धारित लक्षित प्रतिदर्श का चयन, न्यादर्श चयन विधि, जनपद का चयन एवं न्यायोचितता, मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण तथा सांख्यिकीय प्रविधियो पर सविस्तार प्रकाश डाला गया है।

पंचम अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन का सविस्तार वर्णन किया गया है।

षष्ठ अध्याय में निष्कर्ष, शोध अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित हैं। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है; जब तक की वह जनसामान्य के लिए सुलभ ना हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही विद्यार्थियों में मड़पा दुर्ग के प्रति जागरूकता विकसित करने में सहायक होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक हैं। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

दिनांक—27/07/2022 राजीव अग्रवाल

स्थान— अतर्रा दीपक कुमार

सरोज

अध्याय	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
	चित्र सूची	
प्रथम अध्याय	**अध्ययन परिचय**	**01–39**

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है , जो उस समाज के सोचने , विचारने, कार्य करने के स्वरूप में अन्तर्निहित होता है। यह 'कृ' (करना) धातु से बना है। इस धातु से तीन शब्द बनते हैं 'प्रकृति' की मूल स्थिति ,यह संस्कृत हो जाता है और जब यह बिगड़ जाता है तो 'विकृत' हो जाता है। अंग्रेजी में संस्कृति के लिये 'कल्चर' शब्द प्रयोग किया जाता है जो लैटिन भाषा के 'कल्ट या कल्टस ' से लिया गया है , जिसका अर्थ है जोतना , विकसित करना या परिष्कृत करना और पूजा करना। संक्षेप में , किसी वस्तु को यहाँ तक संस्कारित और परिष्कृत करना कि इसका अंतिम उत्पाद हमारी प्रशंसा और सम्मान प्राप्त कर सके। यह ठीक उसी तरह है जैसे संस्कृत भाषा का शब्द 'संस्कृति'।

संस्कृति का शब्दार्थ है - **उत्तम या सुधरी हुई स्थिति**। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता और उन्नत करता रहता है। ऐसी प्रत्येक जीवन-पद्धति , रीति-रिवाज रहन-सहन आचार-विचार नवीन अनुसन्धान और आविष्कार, जिससे मनुष्य पशुओं और जंगलियों के दर्जे से ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है। सभ्यता संस्कृति का अंग है। सभ्यता (Civilization) से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है जबकि संस्कृति (Culture) से मानसिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है। मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों में सुधार करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाता। वह भोजन से ही नहीं जीता, शरीर के साथ मन और आत्मा भी है। भौतिक उन्नति से शरीर की भूख मिट सकती है ,

किन्तु इसके बावजूद मन और आत्मा तो अतृप्त ही बने रहते हैं। इन्हें सन्तुष्ट करने के लिए मनुष्य अपना जो विकास और उन्नति करता है , उसे संस्कृति कहते हैं। मनुष्य की जिज्ञासा का परिणाम धर्म और दर्शन होते हैं।

सौन्दर्य की खोज करते हुए वह संगीत, साहित्य, मूर्ति, चित्र और वास्तु आदि अनेक कलाओं को उन्नत करता है। सुखपूर्वक निवास के लिए सामाजिक और राजनीतिक संघटनों का निर्माण करता है। इस प्रकार मानसिक क्षेत्र में उन्नति की सूचक उसकी प्रत्येक **सम्यक् कृति** संस्कृति का अंग बनती है। इनमें प्रधान रूप से धर्म , दर्शन, सभी ज्ञान-विज्ञानों और कलाओं, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं और प्रथाओं का समावेश होता है।

मडफा दुर्ग में प्राकृतिक जलाशय के समीप दो प्राचीन जैन मंदिर है जो चंदेलकालीन प्रतीत होते है! इन मंदिरों में स्थापित जैन तीर्थंकर प्रतिमाएं इनके पास स्तिथ एक वृक्ष के नीचे रखी हुई है! इसी के पास एक तालाब भी है जिसकी मान्यता है कि इसमें स्नान करने से चर्मरोग नष्ट हो जाते हैं।

इतिहास खुद को जानने और समझने के हजार मौके देता है लेकिन ये हमारे ऊपर है कि हमे कितना समझ पाते हैं। उसी के सहारे हम अपने वर्तमान और फिर भविष्य को संवार पाते हैं। ऐसा ही एक रहस्यमयी किला है मड़फा दुर्ग ,जहां आज मौजूद खँडहर अपनी भव्यता को प्रदर्शित करते हैं। लेकिन सरंक्षण और जानकारी के अभाव में बची हुई सभी धरोहरें खत्म होने की कगार पर हैं। मड़फा दुर्ग चंदेल राजाओं के आठ प्रमुख दुर्ग में से एक है और ऐसा भी असंभव है कि चंदेलों का किला हो और उसमें भव्य जैन मन्दिर न हो! चित्रकूट से लगभग 30 किलो. दूर एक ऊंची पहाड़ी पर स्तिथ मड़फा दुर्ग में तीन प्राचीन जैन मंदिर थे , जो आज जर्जर अवस्था में पुरातत्व विभाग व जैन समाज का अपने संरक्षण हेतु इंतजार कर रहे है! दुर्ग में स्तिथ जैन तीर्थंकर

प्रतिमायें व मंदिर के अवशेष अपनी प्राचीनता की प्रमाणिकता साबित करते नजर आते है लेकिन दुर्ग में खजाने व पुरातत्व के लालची इसकी प्राचीन वैभवता का विनाश करने के लिए तत्पर।

मडफा दुर्ग में प्राकृतिक जलाशय के समीप दो प्राचीन जैन मंदिर है जो चंदेलकालीन प्रतीत होते है! इन मंदिरों में स्थापित जैन तीर्थंकर प्रतिमाएं इनके पास स्तिथ एक वृक्ष के नीचे रखी हुई है! इसी के पास एक तालाब भी है जिसकी मान्यता है कि इसमें स्नान करने से चर्मरोग नष्ट हो जाते हैं। जनश्रुतियों में मडफा क्षेत्र में भगवान आदिनाथ के विहार करने की बात कही जाती है।

मडफा दुर्ग में ही अन्य 12 छोटे-छोटे जैन मन्दिर बने है जिसके कारण स्थानीय लोग इन्हें 'बारादरी' नाम से पुकारते है! यह भी प्रचलित है कि मडफा क्षेत्र से गुजरते हुए एक जैन व्यापारी को अकूत संपदा प्राप्त हुई थी , जिसका उपयोग कर दुर्ग में व्यापारी ने जैन मंदिरों का निर्माण कराया। पंचरथ योजना के अनुरूप बने मंदिरों का अधिकांश हिस्सा ध्वस्त हो चुका है और गर्भगृह से कुछ दूर भगवान आदिनाथ की पद्मासन मुद्रा में तीन फीट ऊँची प्राचीन प्रतिमा रखी है।

भगवान आदिनाथ की प्रतिमा की पादपीठिका में संस्कृत में शिलालेख अंकित है। शिलालेख के अनुसार संवत 1408 माघ सुदी 5 रविवार को प्रतिमा की स्थापना का उल्लेख है! प्रतिमा स्थापित करने वाले गोसल पुत्र छीतम , उसके पिता गोसल व माता सलप्रण , पितामह धने व मातामही तोण के नामों का उल्लेख है।

पुरातत्व विभाग द्वारा 'यूनाइटेड प्रोविन्सस ऑफ आगरा व ओध' में पंजीकृत स्मारको में क्र. 66 पर मडफा दुर्ग में तीन जैन मंदिर स्तिथ होने की जानकारी प्रकाशित की है और वर्तमान में लखनऊ सर्किल द्वारा भी क्र. संख्या 20 पर यही प्रकाशित किया है! मड़फा दुर्ग की जटिल

संरचना का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि यहाँ पर बाहरी लोगों का आना आज भी उतना ही कठिन है जितना कि पुराने जमाने में रहा होगा।

18वीं सदी के मध्य में टीफेन्थलर नामक एक डच पादरी ने दुर्ग को मण्डेफा नाम से प्रसिद्ध लिखा है! मडफा दुर्ग को कालिंजर दुर्ग का ही एक अंग बताया जाता है! कहावत के अनुसार महर्षि अर्थवर्ण और चरक संहिता के रचयिता वैद्य चरक ऋषि का आश्रम भी मड़फा में ही था। केंद्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित दुर्ग को कोई देखने वाला नहीं है , रास्ता ना होने से वहां पर ना कोई अधिकारी जाते हैं और ना ही कोई चौकीदार रहता है! कुछ हिन्दू साधू ही यहाँ शिव मंदिर में रहते है! दुर्ग के किस्से आज भी हैं , मगर ये किस्से ऋषियों या राजाओं के नहीं अपितु अपराधियों के है, जिनके पीछे मड़फा का ऐतिहासिक महत्व छिप गया है क्योकि इन्होने यहाँ के दुर्लभ सुगम ठिकानों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है।

कालंजर का दुर्ग पर्यटन के विश्व-स्तरीय मानचित्र पर है मगर मड़फा आज भी उपेक्षित है क्योकि यहाँ स्तिथ अनेक दुर्लभ प्राचीन मूर्तियाँ धन के लालच की भेंट चढ़ गईं। खजाने के लालच में मंदिरों के गर्भगृह और ऐतिहासिक निर्मितियाँ खोद डाली गईं। मड़फा दुर्ग पूर्ववत वैभव कथाओं तक ले जाने के लिए प्रयास अपेक्षित हैं! यदि इस स्थान का उचित प्रकार से संरक्षण किया जाए तो यह क्षेत्र कालिंजर व चित्रकूट के समान एक महान स्थल बन सकता है।

1.1.1 शिक्षा विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है | शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक , मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है | इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में 'शिक्षा' का महत्वपूर्ण स्थान है| जब से बालक इस संसार में जन्म लेता

है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारंभ कर देता है | वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है|

प्रारंभिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्राय : कम होती है| धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फलस्वरुप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है| बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है , जिसके परिणामस्वरूप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है | शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं सु विकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है|

शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है , अपितु उसका चारित्रिक विकास भी करती है | संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है | शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशु वत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है| सामाजिक प्राणी बनने की प्रक्रिया में परिवार , विद्यालय , समाज तथा समुदाय बालक की सहायता करते हैं | बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक , माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं , जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके | बालक की शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है | उच्च माध्यमिक शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक व्यवसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है, जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है|

समाज की आर्थिक व्यवस्था चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है ब्राह्मण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित , चिंतक, लेखक, विधायक, धार्मिक नेता तथा पथ प्रदर्शक देंगे | क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा , शासक प्रशासक , वैश्य समाज को उत्पादक ,

कृषक, शिल्पकार , व्यापारी देते थे | शूद्र वर्ण छोटे-छोटे कार्यो के लिए भृत्यों या नौकरी की आपूर्ति करते थे| इस प्रकार की प्रणाली में धर्म चिंतन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया | सामाजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं , अपितु व्यक्ति क्षमता व आंतरिक व्यवस्था के आधार पर निर्धारित की गई| वर्णों के आधार पर तदनुरूपी चार पुरुषार्थ स्थापित किए गए जो उस समय की दार्शनिक सोच के द्योतक हैं-ब्राह्मण-मोक्ष, क्षत्रिय-काम, वैश्य-अर्थ, शूद्र-धर्म| कालांतर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणत हुई तथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ | जो आज के सूचना तकनीकी युग में भी यह संघर्ष उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यमान है, चाहे वह राजनीति में हो, शिक्षा में हो, या शासन में हो , यह राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है | इस सामाजिक विघटन को दूर करने के लिए समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितांत आवश्यक है जो हमें संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुं चा सके, और इस सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी युग में एक सकारात्मक सोच का विकास कर सके| वर्तमान समय में उच्च माध्यमिक शिक्षा की जो स्थिति है उसमें कुशल शिक्षक के साथ वर्तमान तकनीकी भी महत्वपूर्ण भूमिका में होती है , क्योंकि उच्च माध्यमिक शिक्षा के संदर्भ भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है|

1.1.2 इतिहास का आशय, वर्गीकरण एवं महत्व

इतिहास मानव जीवन की समस्त क्रियाओं पर प्रकाश डालने वाला एक कथ्य या कहानी है जिसमें मानव की समस्त क्रियाओं तथा उत्थान पतन की झाँकी हमें देखने को मिलती है। इतिहास के द्वारा हम अतीत के उन सारे गुण . दोषों को देख पाते हैं जो मानव के द्वारा सम्पादित किये जाते रहे हैं। वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में इतिहास विषय का शिक्षण व अध्ययन की महती आवश्यकता है। इस विषय का अर्थ ए परिभाषा ए अवधारणा ए उद्देश्य तथा

उपयोगिता अत्यन्त व्यापक एवं दूरगामी है। अतः भविष्य निधि के रुप में इतिहास विषय का अध्ययन व शिक्षण की व्यवस्था आवश्यक है। अतः समस्त मानव जाति को इतिहास विषय के अध्ययन हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए तथा इसकी सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

इतिहास मानव जीवन की समस्त क्रियाओं पर प्रकाश डालने वाला एक कथ्य या कहानी है जिसमें मानव जीवन की समस्त क्रियाओं तथा उत्थान पतन की झाँकी हमें देखने को मिलती है। इसमें समस्त कृत्यों को क्रमवार . ढंग से निष्पक्ष रुप से प्रस्तुत करने की क्षमता है। इतिहास नामक शिक्षा . शाखा की उत्पति सर्वप्रथम यूनान में मिलती है। परीक्षा सिद्ध गवेशणा के अर्थ में स्वयं इतिहास शब्द का प्रयोग उस समय हुआ जब किसी विशेषज्ञ के द्वारा वाद . विवाद के निबटारे के लिए अभ्यर्थना की जाती थी। अतः इतिहासकार से अभिप्राय वाद-विवाद के निर्णय करने वाले व्यक्ति से होता था। सर्वप्रथम हिस्ट्री शब्द का प्रयोग करने वाला इतिहास का जनक हेरोडोटस था। इस प्रकार यह सर्वमान्य है कि हिस्ट्री अथवा इतिहास का उद्गम स्थल प्राच्च संस्कृति का केन्द्र यूनान रहा है। वैसे विद्वानों और इतिहासकारों ने इतिहास शब्द का प्रयोग संकीर्ण तथा व्यापक दोनों अर्थों में किया हैं। सबसे पहले हम इसके शाब्दिक अर्थ पर प्रकाश डालना चाहेंगे तदुपरांत इसके संकीर्ण और व्यापक अर्थों का विवेचन करेंगे।

इतिहास विषय की आवश्यकता पर बल देते हुऐ इतिहासकार रोमिला थापर का मानना है की मानवीय एवं राष्ट्रीय विरासत को समझने के लिये बालकों को इतिहास का ज्ञान देना अत्यावश्यक है। इतिहास विषय के अध्ययन से बालकों में स्थानीय , राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के ज्ञान से परिचित होने का सुअवसर प्राप्त होता है जिससे वे अपने देश के स्थानीय स्तर के इतिहास को जानते हुए राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर के इतिहास को समझ पाते है। 19 वीं शताब्दी के अन्तिम चरण तथा 20 वीं सदी के प्रारम्भ में जब विज्ञान का बोलबाला हो गया था ए तब इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान के रूप में देखा जाने

लगा था। केवल इतिहासकारों ने ही नहीं ए वरन राजनीति शास्त्रियों तथा दार्शनिकों ने भी इसे विज्ञानों के विज्ञान का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया था। फिर भी इतिहास की प्रकृति के सम्बन्ध में विवाद बना रहा। कुछ विद्वानों ने इतिहास को कारण तथा कार्यकारण भाव का सूचक माना। इसके विपरीत दूसरे विद्वानों ने इतिहास की समाज के सच्चे विधान या विज्ञानों के विज्ञान के रूप में देखा। आज कोई भी इस बात से सहमत नहीं होता है कि इतिहास अलौकिक शक्तियों के हस्तक्षेप से प्रभावित होता है। अब सामान्यतः यह विश्वास किया जाने लगा है कि इतिहास को उन्हीं विधियों का अनुसरण करके समझा जा सकता है ए जिनका अनुसरण भौतिक और सामाजिक वैज्ञानिक करते हैं। इसी कारण आज इतिहास को उस अध्ययन क्षेत्र के रूप में देखा जाता है जो वास्तविकता का वर्णन करता है। इस अध्ययन क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करके ही वास्तविकता की खोज की जाती है।

इतिहास को सार्वभौमिक रूप से विद्यालय पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण विषय माना गया है। यह समाज में मनुष्य के विकास का अध्ययन है। इतिहास के अध्ययन के अभाव में न तो हम अपने वर्तमान को समझ सकते हैं और न भविष्य का आंकलन कर सकते हैं। इसी कारण पाठ्यक्रम में इतिहास को स्थान प्रदान किया गया है। इतिहास के शिक्षण से विद्यार्थियों में अपने देश के अतीत के प्रति प्रेम एवं गौरव की भावना उत्पन्न होती है एवं इसके ज्ञान से जाति ए धर्म ए भाषा आदि के बन्धनों को समाप्त कर भावनात्मक एकता का विकास किया जा सकता है। इतिहास के द्वारा छात्रों को ज्ञान का भण्डार प्रदान किया जाता है , अर्थात् इतिहास स्वयं ज्ञान का भण्डार है , जिसमें बालक स्वेच्छानुसार अन्वेषण कर सकते हैं। इतिहास उनको विभिन्न राष्ट्रों , व्यक्तियों, उनके विचारों, परम्पराओं, प्रथाओं तथा समस्याओं का ज्ञान प्रदान करता है। इतिहास में बालक को अपने मस्तिष्क का सबसे अधिक उपयोग करना पड़ता है , उनको स्मरण रखने के लिए स्मरण शक्ति का उपभोग करना पड़ता है। जब बालक इतिहास में विभिन्न सभ्यताओं एवं संस्कृतियों संस्थाओं आदि के विषय में ज्ञान

प्राप्त करता हैए तब उसकी कल्पना . शक्ति को विकसित होने के बहुत से अवसर प्राप्त होते हैं। इन सबमें प्रमुख लाभ इतिहास के अध्ययन से यह होता है कि बालक निष्पक्षता एवं अपनी योग्यता के अनुसार तथ्यों को संकलित ए परीक्षित एवं समन्वित करना सीख जाता है। इतिहास बालक के मानसिक अन्तरिक्ष को विस्तृत करता हैए जिससे वह समस्त वसुधा को कुटुम्ब समझने के लिए उद्यत हो जाता है। वह समस्त विश्व को ऐक्य के दृष्टिकोण से देखता है। इस प्रकार इससे उसमें सत्य , देश, प्रेम के साथ-साथ विश्वबन्धुत्व की भावना भी विकसित हो जाती है।

इतिहास का प्रमुख कार्य यह स्पष्ट करना है कि मानव तथा समाज का विकास किस प्रकार हुआ। उसका यह कार्य नहीं है कि वह राजाओं , रानियों, युद्धों, सन्धियों तथा तिथियों के विषय में ही विवरण प्रस्तुत करे , इतिहास अतीत के वर्णन द्वारा वर्तमान का स्पष्टीकरण करता है। वर्तमान की विशद रीति से सहृदयतापूर्वक व्याख्या करना ही इतिहास का महान उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है। भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता आधुनिक भारत की एक महत्वपूर्ण माँग है जिसे किसी के द्वारा अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। भावात्मक एकता के लिए इतिहास का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है जिसके महत्व को निम्न बिन्दूओं द्वारा स्पष्ठ किया जा सकता है .

1.1.2.1 शैक्षिक महत्व

शैक्षिक दृष्टि से इतिहास का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इतिहास भावी शिक्षा का आधार है। इतिहास मानव जीवन को परिष्कृत ए पुष्पित तथा पल्लवित करती है। यह मनुष्य को परिपक्व , बुद्धिमान तथा अनुभवी बनाने वाला एक उपयोगी विषय है। अतीत के आधारशिला पर वर्तमान का निर्माण करने तथा भावी मार्गदर्शन के लिए इतिहास मनुष्य को सक्षम बनाता है। हीगेल ने लिखा

है कि दृष् मनुष्य इतिहास से वह शिक्षा प्राप्त करता है , जो अन्य विषयों में अप्राप्त है।

1.1.2.2 व्यावसायिक महत्व

व्यावसायिक दृष्टि से भी इतिहास का कम महत्व नहीं हैं। इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने वाले व्यक्ति पुस्तकालयों , संग्रहालयों तथा अन्य संस्थाओं में कार्य करने का सुअवसर प्राप्त कर सकते हैं। पत्रकारिता के लिए तो इतिहास का ज्ञान वरदान हैं। प्रशासकीय सेवा में भी इतिहास का ज्ञान सहायता कराता है क्योंकि इसके ज्ञान के माध्यम से प्रशासक मानवीय एवं सामाजिक समस्याओं को समझने एवं उनके समाधान में समर्थ होता है।

1.1.2.3 नैतिक महत्व

इतिहास का नैतिक दृष्टि से भी महत्व है क्योंकि यह नैतिकता की शिक्षा प्रदान करता है। यह समाज के नैतिक मूल्यों को भी संरक्षित रखता है। विश्व के तमाम महापुरुषों की जीवनी को यह मानव समुदाय के समक्ष परोसकर उसकी नैतिकता का पाठ हमें पढाता है। इसके अतिरिक्त इतिहास अध्ययन के माध्यम से छात्र विश्व के महान व्यक्तियों के जीवन दर्शन से परिचित होता हैं तथा उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। इससे छात्रों व पाठक के व्यक्तित्व में नैतिक गुणों का विकास होता है।

1.1.2.4 अनुशासनात्मक महत्व

इतिहास विषय का अनुशासनात्मक महत्व भी कम नहीं है क्योंकि इतिहास अध्ययन द्वारा छात्रों की मानसिक शक्तियां प्रशिक्षित होती है। अन्य विषयों की तुलना में इतिहास अध्ययन में छात्रों को स्मरण एवं कल्पना के लिए अधिक अवसर प्राप्त होते है। जब छात्र इतिहास अध्ययन में किसी ऐतिहासिक घटना के कारण एवं परिणाम का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं तो वे तथ्यों का परीक्षण एवं विवेचन करके साक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालने

का प्रयास करते हैं। इतिहास पुरुषों की जीवनी से छात्र अनुशासनए समय की उपयोगिताए आचरण आदि की बातों को सीखाता है।

1.1.2.5 सांस्कृतिक महत्व

सांस्कृतिक दृष्टि से भी इतिहास का व्यापक महत्व है क्योंकि यह मानव मस्तिष्क एवं आचरण को सुसंस्कृत बनाने का प्रमुख एंव प्रभावपूर्ण साधन है। इसके अध्ययन से छात्र अपने देश की अतीत कालीन सभ्यता एवं संस्कृति के आधार पर वर्तमान संस्कृति को समझने में समर्थ होते हैं और उसके क्रमिक विकास का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इतिहास द्वारा विद्यमान तथ्यों की अभिव्यक्तिए अपनी रीति . रिवाजए अपनी प्रथाओंए अपनी परम्पराओं आदि का ज्ञान कराया जाता है। प्राचीन सभ्यता . संस्कृति के अनुसार जो हमें आज वर्तमान संस्कृति प्राप्त हुई हैए इसका श्रेय इतिहास को ही जाता है।

1.1.2.6 सूचनात्मक महत्व

इतिहास का सूचनात्मक महत्व भी अधिक है। यह एक तरफ से सूचनाओं का विशाल और अद्भुत भण्डार है। छात्र इसके अध्ययन द्वारा विविध मानवीय समस्याओं के समाधन खोज सकते हैं। इसके वास्तविक अध्ययन से अवबोध के नये आयाम जोडे जा सकते है। अतीत कालीन अनुभवों के अध्ययन से व्यक्तियों में विद्वेश संकीर्णता दूर करने में सहायता मिलती है।

1.1.2.7 राष्ट्रीय महत्व

इतिहास राष्ट्रीय महत्व का विषय है क्योंकि छात्र जब अपने देश के ऐतिहासिक दुर्गोंए खण्डहरोंए भवनोंए राज . प्रसादोंए मीनारों गुफाओंए स्पूतोंए स्तम्भोंए शिलालेखों आदि के विषय में पढ़कर . ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त करता है तो राष्ट्रीय स्तर के महत्व से वह परिचित होता है। आज ताजमहल विश्व के अजूबों में सर्वप्रथम है। इस जानकारी से छात्रों में राष्ट्रीय महत्व के प्रति जागृति पैदा होती है। इसके साथ ही इतिहास अध्ययन द्वारा देश की

गौरवशाली गाथाओं से वह परिचित होता है। एक तरह से इतिहास छात्रों में देशप्रेम की भावना जागृत करने का काम करता है। यह राष्ट्रीय गौरव को प्रदान कर अच्छे नागरिक बनाने का प्रयत्न करता है। इतिहास अध्ययन से छात्र देश के महापुरुषों के शौर्य ए त्याग ए बलिदान एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यों का अध्ययन कर प्रेरणा प्राप्त करता है।

1.1.2.8 अंतर्राष्ट्रीय महत्व

इतिहास का अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना की दृष्टि से भी विशेष महत्व है क्योंकि विष्व इतिहास के ज्ञान द्वारा ही छात्रों को विभिन्न देशों की सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान कराया जा सकता है। इसके साथ ही इतिहास अध्ययन द्वारा विभिन्न राष्ट्रों के संबंधों प्रभावों एवं उनकी सामाजिक ए सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को समझने की क्षमता उत्पन्न की जा सकती हैं परिणामस्वरुप इससे छात्रों में विश्व बंधुत्व की भावना विकसित होगी जो अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना एवं महत्व के लिए आधार बनेगी।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि विभिन्न क्षेत्रों में इतिहास का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। इतिहास के ज्ञान के बिना विश्व की विविध समस्याओं का ज्ञान और उसका समाधान संभव नहीं है। अतः सभी को इतिहास का ज्ञान आवश्य प्राप्त करना चाहिए।

1.1.3 शिक्षा में इतिहास का स्थान

इतिहास-लेख या **इतिहास-शास्त्र** (Historiography) से दो चीजों का बोध होता है- (1) इतिहास के विकास एवं क्रियापद्धति का अध्यन तथा (2) किसी विषय के इतिहास से

सम्बन्धित एकत्रित सामग्री। इतिहासकार इतिहासशास्त्र का अध्ययन विषयवार करते हैं , जैसे- **भारत का इतिहास**, **जापानी साम्राज्य** का इतिहास आदि।

इतिहास के मुख्य आधार युगविशेष और घटनास्थल के वे अवशेष हैं जो किसी न किसी रूप में प्राप्त होते हैं। जीवन की बहुमुखी व्यापकता के कारण स्वल्प सामग्री के सहारे विगत युग अथवा समाज का चित्रनिर्माण करना दु:साध्य है। सामग्री जितनी ही अधिक होती जाती है उसी अनुपात से बीते युग तथा समाज की रूपरेखा प्रस्तुत करना साध्य होता जाता है। पर्याप्त साधनों के होते हुए भी यह नहीं कहा जा सकता कि कल्पनामिश्रित चित्र निश्चित रूप से शुद्ध या सत्य ही होगा। इसलिए उपयुक्त कमी का ध्यान रखकर कुछ विद्वान् कहते हैं कि इतिहास की संपूर्णता असाध्य सी है , फिर भी यदि हमारा अनुभव और ज्ञान प्रचुर हो , ऐतिहासिक सामग्री की जाँच-पड़ताल को हमारी कला तर्कप्रतिष्ठत हो तथा कल्पना संयत और विकसित हो तो अतीत का हमारा चित्र अधिक मानवीय और प्रामाणिक हो सकता है। सारांश यह है कि इतिहास की रचना में पर्याप्त सामग्री , वैज्ञानिक ढंग से उसकी जाँच , उससे प्राप्त ज्ञान का महत्व समझने के विवेक के साथ ही साथ ऐतिहासक कल्पना की शक्ति तथा सजीव चित्रण की क्षमता की आवश्यकता है। स्मरण रखना चाहिए कि इतिहास न तो साधारण परिभाषा के अनुसार विज्ञान है और न केवल काल्पनिक दर्शन अथवा साहित्यिक रचना है। इन सबके यथोचित संमिश्रण से इतिहास का स्वरूप रचा जाता है।

इतिहास न्यूनाधिक उसी प्रकार का सत्य है जैसा विज्ञान और दर्शनों का होता है। जिस प्रकार विज्ञान और दर्शनों में हेरफेर होते हैं उसी प्रकार इतिहास के चित्रण में भी होते रहते हैं। मनुष्य के बढ़ते हुए ज्ञान और साधनों की सहायता से इतिहास के चित्रों का संस्कार , उनकी पुरावृत्ति और संस्कृति होती रहती है। प्रत्येक युग अपने-अपने प्रश्न उठाता है और इतिहास से

उनका समाधान ढूंढ़ता रहता है। इसीलिए प्रत्येक युग , समाज अथवा व्यक्ति इतिहास का दर्शन अपने प्रश्नों के दृष्टिबिंदुओं से करता रहता है। यह सब होते हुए भी साधनों का वैज्ञानिक अन्वेषण तथा निरीक्षण, कालक्रम का विचार, परिस्थिति की आवश्यकताओं तथा घटनाओं के प्रवाह की बारीकी से छानबीन और उनसे परिणाम निकालने में सर्तकता और संयम की अनिवार्यता अत्यंत आवश्यक है। उनके बिना ऐतिहासिक कल्पना और कपोलकल्पना में कोई भेद नहीं रहेगा।

इतिहास की रचना में यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उससे जो चित्र बनाया जाए वह निश्चित घटनाओं और परिस्थितियों पर दृढ़ता से आधारित हो। मानसिक , काल्पनिक अथवा मनमाने स्वरूप को खड़ा कर ऐतिहासिक घटनाओं द्वारा उसके समर्थन का प्रयत्न करना अक्षम्य दोष होने के कारण सर्वथा वर्जित है। यह भी स्मरण रखना आवश्यक है कि इतिहास का निर्माण बौद्धिक रचनात्मक कार्य है अतएव अस्वाभाविक और असंभाव्य को प्रमाणकोटि में स्थान नहीं दिया जा सकता। इसके सिवा इतिहास का ध्येयविशेष यथावत् ज्ञान प्राप्त करना है। किसी विशेष सिद्धांत या मत की प्रतिष्ठा, प्रचार या निराकरण अथवा उसे किसी प्रकार का आंदोलन चलाने का साधन बनाना इतिहास का दुरुपयोग करना है। ऐसा करने से इतिहास का महत्व ही नहीं नष्ट हो जाता, वरन् उपकार के बदले उससे अपकार होने लगता है जिसका परिणाम अंततोगत्वा भयावह होता है।

1.1.4 इतिहास शिक्षण की समस्याएं

1.1.4.1 इतिहास का डरावना ज्ञान

एक सामान्य इतिहास शिक्षक आमतौर पर अपने विषय में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखता है और वह इतिहास के अपने ज्ञान के पूरक के लिए बहुत उत्साही नहीं है जो उसने स्कूल / कॉलेज की उम्र में हासिल किया है। उसे न तो पढ़ने में दिलचस्पी है और न ही सैर-सपाटे में। वह खुद को वैज्ञानिक तरीके से प्रशिक्षित करने के लिए इच्छुक नहीं है। आम तौर पर ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में उनकी गलत धारणाएं हैं और इससे विनाशकारी स्थिति पैदा होती है। इस तरह के शिक्षक से विद्यार्थियों को विकृत तथ्य प्रस्तुत करने की संभावना होती है और इस प्रकार उनके व्यक्तित्व को विकृत किया जाता है।

1.1.4.2 विश्व इतिहास का ज्ञान खो देता है:

आमतौर पर हमारे स्कूलों में इतिहास के शिक्षकों को विश्व इतिहास के ज्ञान की कमी पाई जाती है। ज्ञान की इस कमी के कारण वे ऐतिहासिक तथ्यों को उनके वास्तविक प्रभाव में देखने में विफल होते हैं। दुनिया के किसी भी हिस्से में हर सामाजिक या राजनीतिक आंदोलन का प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ता है , इसलिए किसी के लिए भी अपने देश के इतिहास से काफी हद तक निपटना संभव नहीं है। इस प्रकार विश्व इतिहास का ज्ञान किसी भी सफल इतिहास शिक्षक के लिए जरूरी है, इसके बिना उसका शिक्षण अपूर्ण रहेगा।

1.1.4.3 धार्मिक या सामाजिक पूर्वाग्रह:

अधिकांश शिक्षक ऐसे पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं और इससे पीड़ित कोई भी व्यक्ति इतिहास का सही ज्ञान नहीं दे सकता है। यदि कोई हिंदू शिक्षक कट्टर है और नस्लीय पूर्वाग्रह रखता है तो वह मुसलमानों के इतिहास को सही और निष्पक्ष रूप से नहीं सिखा सकता है। वह निश्चित रूप से शिक्षण में बेईमान होंगे क्योंकि उनके लिए यह समझाना काफी मुश्किल होगा कि मुसलमान कैसे हिंदू शासकों पर विचार करते हैं। अन्य धर्मों के शिक्षक के लिए भी ऐसी ही स्थिति होगी।

1.1.4.4 राष्ट्रीय पूर्वाग्रह:

इतिहास के शिक्षण में , राष्ट्रीय पूर्वाग्रह उतना ही हानिकारक है जितना कि धार्मिक या नस्लीय पूर्वाग्रह। "मेरा देश, सही या गलत" एक निंदा का नारा है। देशभक्ति के महान गुण हैं और एक देशभक्ति होनी चाहिए लेकिन देशभक्ति और राष्ट्रीय पूर्वाग्रह के अलग-अलग अर्थ हैं। एक सच्चा देशभक्त अपने देश की कमजोरियों को देखता है और स्वीकार करता है जबकि राष्ट्रीय पूर्वाग्रह रखने वाला व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता। राष्ट्रीय पूर्वाग्रह से पीड़ित इतिहास का एक शिक्षक अपने बच्चों को उनके देश की कमजोरियों के बारे में कभी नहीं समझाएगा।

यदि भारत में एक इतिहास के शिक्षक के पास राष्ट्रीय पूर्वाग्रह है , तो वह बच्चों के सामने यह नहीं समझाएगा कि अंग्रेज अपने देश की कमजोरियों के कारण इस देश में अपना शासन करने में सक्षम थे। दूसरी ओर , वह छात्रों को बताएगा कि भारतीय शासकों में कोई कमजोरियां नहीं थीं और यह केवल अंग्रेजों की चालाक थी कि वे भारतीयों पर हावी थे। एक इतिहास शिक्षक को देशभक्त होना चाहिए लेकिन उसे कभी राष्ट्रीय पूर्वाग्रह नहीं होना चाहिए , उसे अपने और अपने लोगों में अंतर्राष्ट्रीय समझ विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

1.1.4.5 शिक्षण की दोषपूर्ण विधि:

हमारे देश में आम तौर पर इतिहास को मृत राजकुमारों और बीगोन घटनाओं से निपटने के लिए माना जाता है और इस तरह की शिक्षा निर्जीव हो जाएगी। हालाँकि, इतिहास एक जीवित विषय है क्योंकि यह the मानव के नाटक या दुनिया के मंच से संबंधित है जो अभी भी बढ़ रहा है'। इस नाटक को बच्चों के सामने कक्षा-कक्ष में विशद रूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इसके लिए एक इतिहास शिक्षक को सक्रिय और जीवन से भरा होना चाहिए।

1.1.4.6 सहसंबंध की कमी:

इतिहास पढ़ाने वाले अधिकांश शिक्षक अन्य विषयों के साथ इतिहास को सहसंबंधित करने में विफल होते हैं। चूंकि किसी भी विषय को अलगाव में नहीं पढ़ाया जा सकता है , इसलिए इतिहास को कभी भी इस तरह से नहीं पढ़ाया जाना चाहिए। इतिहास के शिक्षक के लिए भूगोल , नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र या शिल्प या किसी अन्य विषय के साथ सहसंबंध बनाना हमेशा संभव है।

1.1.5 चित्रकूट का इतिहास

1.1.5.1 प्राचीन इतिहास

भारतीय साहित्य और पवित्र ग्रन्थों में प्रख्यात , वनवास काल में साढ़े ग्यारह वर्षों तक भगवान राम, माता सीता तथा श्रीराम के अनुज लक्ष्मण की निवास स्थली रहा चित्रकूट , मानव हृदय को शुद्ध करने और प्रकृति के आकर्षण से पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम है। चित्रकूट एक प्राकृतिक स्थान है जो प्राकृतिक दृश्यों के साथ साथ अपने आध्यात्मिक महत्त्व के लिए

प्रसिद्ध है। एक पर्यटक यहाँ के खूबसूरत झरने , चंचल युवा हिरण और नाचते मोर को देखकर रोमांचित होता है , तो एक तीर्थयात्री पयस्वनी/मन्दाकिनी में डुबकी लेकर और कामदगिरी की धूल में तल्लीन होकर अभिभूत होता है। प्राचीन काल से चित्रकूट क्षेत्र ब्रह्मांडीय चेतना के लिए प्रेरणा का एक जीवंत केंद्र रहा है। हजारों भिक्षुओं , साधुओं और संतों ने यहाँ उच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त की है और अपनी तपस्या , साधना, योग, तपस्या और विभिन्न कठिन आध्यात्मिक प्रयासों के माध्यम से विश्व पर लाभदायक प्रभाव डाला है। प्रकृति ने इस क्षेत्र को बहुत उदारतापूर्वक अपने सभी उपहार प्रदान किये हैं , जो इसे दुनिया भर से तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम बनाता है। अत्री, अनुसूया, दत्तात्रेय, महर्षि मार्कंडेय , सारभंग, सुतीक्ष्ण और विभिन्न अन्य ऋषि , संत, भक्त और विचारक सभी ने इस क्षेत्र में अपनी आयु व्यतीत की और जानकारों के अनुसार ऐसे अनेक लोग आज भी यहाँ की विभिन्न गुफाओं और अन्य क्षेत्रों में तपस्यारत हैं। इस प्रकार इस क्षेत्र की एक आध्यात्मिक सुगंध है , जो पूरे वातावरण में व्याप्त है और यहाँ के प्रत्येक दिन को आध्यात्मिक रूप से जीवंत बनाती है।

चित्रकूट सभी तीर्थों का तीर्थ है। हिंदू आस्था के अनुसार , प्रयागराज (आधुनिक नाम- इलाहाबाद) को सभी तीर्थों का राजा माना गया है ; किन्तु चित्रकूट को उससे भी ऊंचा स्थान प्रदान किया गया है। किवदंती है की जब अन्य तीर्थों की तरह चित्रकूट प्रयागराज नहीं पहुंचे तब प्रयागराज को चित्रकूट की उच्चतर पदवी के बारे में बताया गया तथा प्रयागराज से अपेक्षा की गयी की वह चित्रकूट जाएँ , इसके विपरीत की चित्रकूट यहाँ आयें। ऐसी भी मान्यता है कि प्रयागराज प्रत्येक वर्ष पयस्वनी में स्नान करके अपने पापों को धोने के लिए आते हैं। यह भी कहा जाता है कि जब प्रभु राम ने अपने पिता का श्राद्ध समारोह किया तो सभी देवी-देवता शुद्धि भोज (परिवार में किसी की मृत्यु के तेरहवें दिन सभी सम्बन्धियों और मित्रों को दिया जाने वाला भोज) में भाग लेने चित्रकूट आए। वे इस स्थान की सुंदरता से मोहित हो गए थे। भगवान राम की

उपस्थिति में इसमें एक आध्यात्मिक आयाम जुड़ गया। इसलिए वे वापस प्रस्थान करने के लिए तैयार नहीं थे। कुलगुरु वशिष्ठ, भगवान राम की इच्छा के अनुसार रहने और रहने की उनकी इच्छा को समझते हुए विसर्जन (प्रस्थान) मंत्र को बोलना भूल गए। इस प्रकार , सभी देवी-देवताओं ने इस जगह को अपना स्थायी आवास बना लिया और वहां हमेशा उपस्थित रहते हैं। आज भी , यहां तक कि जब एक अकेला पर्यटक भी प्राचीन चट्टानों , गुफाओं, आश्रमों और मंदिरों की विपुल छटा बिखेरे हुए इस स्थान में पहुंचता है तो पवित्र और आध्यात्मिक साधना में लगे ऋषियों के साथ वह अनजाने में ही खुद को पवित्र संस्कारों और ज्ञानप्राप्ति के उपदेशों और कृतियों से भरे माहौल में खो देता है और एक अलग दुनिया के आनंद को प्राप्त करता है। विश्व के सभी हिस्सों से हजारों तीर्थयात्री और सत्य के साधक इस स्थान में अपने जीवन को सुधारने और उन्नत करने की एक अदम्य इच्छा से प्रेरित होकर आश्रय लेते हैं।

प्राचीन काल से ही चित्रकूट का एक विशिष्ट नाम और पहचान है।इस स्थान का पहला ज्ञात उल्लेख वाल्मीकि रामायण में है , जो पहले सबसे पहले कवि द्वारा रचित सबसे पहला महाकाव्य माना जाता है। एक अलिखित संरचना के रूप में , विकास के इस महाकाव्य को , पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा द्वारा , सौंप दिया गया था। जैसा कि वाल्मीकि , जो राम के समकालीन (या उनसे पहले) माने जाते हैं , और मान्यता है कि उन्होंने राम के जन्म से पहले रामायण का निर्माण किया गया था , से इस स्थान की प्रसिद्धि व पुरातनता को अच्छी तरह से निरूपित किया जा सकता है। महर्षि वाल्मीकि चित्रकूट को एक महान पवित्र स्थान के रूप में चित्रित करते हैं, जो महान ऋषियों द्वारा बसाया गया है और जहाँ बंदर , भालू और अन्य विभिन्न प्रकार के पशुवर्ग और वनस्पतियां पाई जाती हैं। ऋषि भारद्वाज और वाल्मीकि दोनों इस क्षेत्र के बारे में प्रशंसित शब्दों में बोलते हैं और श्रीराम को अपने वनवास की अवधि में इसे अपना निवास बनाने के लिए सलाह देते हैं , क्योंकि यह स्थान किसी व्यक्ति की सभी इच्छाओं पूर्ण करने और उसे मानसिक

शांति देने में सक्षम था। जिससे वह अपने जीवन में सर्वोच्च लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। भगवान राम स्वयं इस जगह के मोहक प्रभाव को मानते हैं। 'रामोपाख्यान' और महाभारत के विभिन्न स्थानों पर तीर्थों के विवरण में चित्रकूट एक को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। यह 'अध्यात्म रामायण' और 'बृहत् रामायण ' चित्रकूट की झकझोर कर देने वाली आध्यात्मिक और प्राकृतिक सुंदरता को प्रमाणित करते हैं। लेखकों के अनुसार बाद में चित्रकूट और इसके प्रमुख स्थानों का वर्णन सोलह कंटो वर्णित है।

राम से संबंधित पूरे भारतीय साहित्य में इस स्थान को एक अद्वितीय गौरव प्रदान किया गया है। फादर कामिल बुलके ने भी 'चित्रकूट-महात्म्य' का उल्लेख किया है जो मैकेंज़ी के संग्रह में पाया गया है। विभिन्न संस्कृत और हिंदी कवियों ने चित्रकूट का वर्णन किया है। महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य 'रघुवंश' में इस स्थान का सुंदर वर्णन किया है। वह यहाँ के आकर्षण से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने मेघदूत में अपने यक्ष के निर्वासन का स्थान चित्रकूट (जिसे वह प्रभु राम के साथ इसके सम्मानित संबंधों की वजह से रामगिरी कहते हैं) को बनाया। हिंदी के संत-कवि तुलसीदास जी ने अपने सभी प्रमुख कार्यों- रामचरित मानस , कवितावली, दोहावली और विनय पत्रिका में इस स्थान का अत्यंत आदरपूर्वक उल्लेख किया है। अंतिम ग्रन्थ में कई छंद हैं , जो तुलसीदास और चित्रकूट के बीच एक गहन व्यक्तिगत बंधन प्रदर्शित करते हैं। अपने जीवन का काफी हिस्सा उन्होंने यहाँ भगवन राम की पूजा और उनके दर्शन की लालसा में व्यतीत किया। यहाँ उनकी उपलब्धियों का एक उल्लेखनीय पल माना जाता है जब हनुमान जी की मध्यस्थता में उन्हें उनके आराध्य प्रभु राम के दर्शन प्राप्त हुए। उनके मित्र , प्रसिद्ध हिंदी कवि रहीम (अब्दुर रहीम खान ए खाना , सैनिक, राजनीतिज्ञ, संत, विद्वान, कवि, जो अकबर के नव-रत्नों में से एक थे) ने यहां कुछ समय बिताया था जब वह अकबर के पुत्र सम्राट जहांगीर के पक्ष में थे। प्रणामी संप्रदाय के बीटक साहित्य के अनुसार , संत कवि महामति प्रणनाथ ने यहां अपनी

दो पुस्तकों- छोटा कयामतनामा नामा और बड़ा कयामतनामा को लिखा था। वह वास्तविक स्थान, जहाँ प्राणनाथ रहे और जहाँ उन्होंने कुरान की व्याख्या और श्रीमद्भागवत महापुराण से इसकी समानताओं से सम्बंधित कार्य किये, का सही पता नहीं लगाया जा सका है।

1.1.5.2 आधुनिक इतिहास

उत्तर प्रदेश में 6 मई 1997 को बाँदा जनपद से काट कर छत्रपति शाहू जी महाराज नगर के नाम से नए जिले का सृजन किया गया जिसमे कर्वी तथा मऊ तहसीलें शामिल थीं। कुछ समय बाद, 4 सितंबर 1998 को जिले का नाम बदल कर चित्रकूट कर दिया गया। यह उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश राज्यों में फैली उत्तरी विंध्य श्रृंखला में स्थित है। यहाँ का बड़ा हिस्सा उत्तर प्रदेश के चित्रकूट और मध्य प्रदेश के सतना जनपद में शामिल है। यहाँ प्रयुक्त "चित्रकूट" शब्द, इस क्षेत्र के विभिन्न स्थानों और स्थलों की समृद्ध और विविध सांस्कृतिक , धार्मिक, ऐतिहासिक और पुरातात्विक विरासत का प्रतीक है। प्रत्येक अमावस्या में यहाँ विभिन्न क्षेत्रों से लाखों श्रृद्धालु एकत्र होते हैं। सोमवती अमावस्या , दीपावली, शरद-पूर्णिमा, मकर-संक्रांति और राम नवमी यहाँ ऐसे समारोहों के विशेष अवसर हैं।

1.1.6 चित्रकूट जनपद की ऐतिहासिक विरासत

1.1.6.1 कामद गिरी

प्रधान धार्मिक महत्व की एक वन्य पहाड़ी , जिसे मूल चित्रकूट माना जाता है। यहीं भरत मिलाप मंदिर स्थित है। तीर्थयात्री यहाँ भगवान कामदनाथ व भगवान श्रीराम का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए कामदगिरी पहाड़ी की परिक्रमा करते हैं।

1.1.6.2 राम घाट

मन्दाकिनी नदी के किनारे स्थित यह घाट एक शांत तीर्थ स्थल है। इस नदी के किनारे इस स्थान कोभगवान राम , देवी सीता और भगवान लक्ष्मण के साथ संत गोस्वामी तुलसीदास का साक्षात्कार स्थल माना जाता है। यह चित्रकूट के प्रमुख घाटों में से एक है जहाँ अध्यात्मिक व धार्मिक गतिविधियों के कारण भीड़ बनी रहती है। प्रातःकाल से यहाँ दर्शनार्थ जाया जा सकता है। नदी के किनारे पररंगीन नौकाओं के सुंदर दृश्यों के साथ यहाँ सायंकाल होने वाली आरती के दर्शन का लाभ अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

1.1.6.3 भरत कूप

भरत कूप, भरतकूप गांव के निकट एक विशाल कुआं है जो चित्रकूट के पश्चिम में लगभग 20 किमी के दूर स्थित है। यह माना जाता है कि भगवान राम के भाई भरत ने अयोध्या के राजा के रूप में भगवान राम को सम्मानित करने के लिए सभी पवित्र तीर्थों से जल एकत्र किया था। भरत , भगवान राम को अपने राज्य में लौटने और राजा के रूप में अपनी जगह लेने के लिए मनाने में असफल रहे। तब भरत ने महर्षि अत्री के निर्देशों के अनुसार , वह पवित्र जल इस कुएं में डाल दिया। यह मान्यता है की यहाँ के जल से स्नान करने का अर्थ सभी तीर्थों में स्नान करने के समान है। यहाँ भगवान राम के परिवार को समर्पित एक मंदिर भी दर्शनीय हैं।

1.1.6.4 भरत मिलाप मंदिर

माना जाता है कि भरत मिलाप मंदिर उस जगह को चिह्नित करता है जहां भरत , अयोध्या के सिंहासन पर लौटने के लिए भगवान श्री राम को मनाने के लिए उनके वनवास के दौरान उनसे मिले थे। यह कहा जाता है कि चारों भाइयों का मिलन इतना मार्मिक था कि चित्रकूट की चट्टानें

भी पिघल गयीं। भगवान राम और उनके भाइयों के इन चट्टानों पर छपे पैरों के निशान अब भी देखे जा सकते हैं।

1.1.6.5 हनुमान धारा*

यह एक विशाल चट्टान के ऊपर स्थित हनुमान मंदिर है। मंदिर तक पहुँचने के लिए कई खड़ी सीढियों की चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। इन सीढियों पर चढ़ते समय चित्रकूट के शानदार दृश्य देखे जा सकते हैं। पूरे रास्ते में हनुमान जी की प्रार्थना योग्य अनेक छोटी मूर्तियां स्थित हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार हनुमान जी के लंका में आग लगा कर वापस लौटने पर इस मंदिर के अंदर भगवान राम , भगवान हनुमान के साथ रहे। यहां भगवान राम ने उनके गुस्से को शांत करने में उनकी मदद की। इस स्थान के आगे भगवान राम , माता सीता और लक्ष्मण जी को समर्पित कुछ और मंदिर हैं।

1.1.6.6 गुप्त गोदावरी

गुप्त गोदावरी चित्रकूट से 18 किलोमीटर दूर स्थित है। पौराणिक कथा है कि भगवान राम और लक्ष्मण अपने वनवास के कुछ समय के लिए यहां रहे। गुप्त गोदावरी एक गुफा के अंदर गुफा प्रणाली है, जहाँ घुटने तक उच्च जल स्तर रहता है। बड़ी गुफा में दो पत्थर के सिंहासन हैं जो राम और लक्ष्मण से संबंधित हैं। इन गुफाओं के बाहर स्मृति चिन्ह खरीदने के लिए दुकानें हैं।

1.1.6.7 सती अनुसूया आश्रम

यह आश्रम ऋषि अत्री के विश्राम स्थान के रूप में जाना जाता है। अत्री ने अपनी भक्त पत्नी अनुसूया के साथ यहां ध्यान किया। कथा के अनुसार वनवास के समय भगवान राम और माता

सीता इस आश्रम में सती अनुसूया के पास गए थे। सती अनसूया ने यहाँ माता सीता को शिक्षाएं दी थी। यहाँ एक रथ पर सवार भगवान कृष्ण की बड़ी सी मूर्ति है जिसमे अर्जुन पीछेबैठे हैं , जो महाभारत दृश्य को दर्शाती है। अंदर पवित्र दर्शन के लिए रखी अनेक मूर्तियां हैं।

1.1.6.8 राम दर्शन

राम दर्शन मंदिर , एक अनोखा मंदिर है , जहां पूजा और प्रसाद निषिद्ध हैं। यह मंदिर लोगों को मूल्यवान नैतिक पाठ प्रदान करके अभिन्न मानवता में प्रवेश करने में मदद करता है। यह मंदिर सांस्कृतिक और मानवीय पहलुओं का एकीकरण है , जो कभी भी इस मंदिर में जाने पर मन में एक निशान छोड़ता है । मंदिर भगवान राम के जीवन और उनके अंतर-व्यक्तिगत संबंधों की जानकारी देता है। परिसर में प्रवेश करने के लिए एंट्री टिकट की व्यवस्था है।

1.1.6.9 स्फटिक शिला

स्फटिक शिला एक छोटी सी चट्टान है , जो रामघाट से ऊपर की ओर मंदाकिनी नदी के किनारे स्थित है। यह ऐसा स्थान माना जाता है जहां माता सीता ने श्रृंगार किया था। इसके अलावा , किंवदंती यह है कि यह वह जगह है जहां भगवान इंद्र के बेटे जयंत , एक कौवा के रूप में माता सीता के पैर में चोंच मारी थी। ऐसा कहा जाता है कि इस चट्टान में अभी भी राम के पैर की छाप है।

1.1.6.10 गणेश बाग

चित्रकूट नाम सुनने पर आपके मन में सबसे पहला ख्याल चित्रकूट के प्रसिद्ध धामों का ही आता होगा। यह होना लाज़मी भी है क्यूंकि हमारे पौराणिक कथाओं में कई बार इनका

उल्लेख किया गया है। लेकिन आपको यहां सिर्फ धार्मिक ही नहीं बल्कि ऐतिहासिक कहानियां और स्थल भी मिलेंगे, जिनके बारें में अधिकतर लोग नहीं जानते। आप यह तो जानते ही होंगे की मराठों ने हमारे देश में कई महल , किले, मंदिर और बाड़वड़ियाँ बनवायीं। मध्यप्रदेश और यूपी में आपको ऐसी ही कई किले देखने को मिलेंगे , जैसे- कालिंजर किला , अजयगढ़ का किला , खजुराहो मंदिर आदि। इन जगहों पर लोग अक्सर घूमने भी आते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं की चित्रकूट में भी एक **खजुराहो** जैसा मंदिर है जिसे मराठों ने बनवाया था। जिसका नाम है गणेश बाग।

चित्रकूट से 3 किलोमीटर दूर कर्वी के देवांगना रोड पर स्थित गणेश बाग यहां के सबसे पसंदीदा बागों में से एक है। इस बाग का निर्माण पेशवा राजाए विनायक राव द्वारा 1800 ईसवीं से पहले हुआ था। इस बाग का उपयोग पेशवाओं द्वारा गर्मियों में शाही खेल खेलने के लिए किया जाता था। इसका विशाल तालाब और लम्बीए गहरी बावड़ी विशेष रूप से गर्मियों में इस्तेमाल की जाती होगीए ऐसा प्रतीत होता है।


चित्र संख्या - 1.1 गणेश बाग

यहां का खुबसूरत और विशेष तरह की नकाशी से बना शिव मंदिर इस बाग का मुख्य आकर्षण है। जिसे स्थानीय लोग ष्गणेश मंदिरष् के रूप में जानते हैं। इस मंदिर में कामुक मूर्ति कला देखने को मिल सकती है। खास कर इस मंदिर के गुंबदों पर खजुराहो मंदिर की तरह मूर्ति कला उकेरी गई है। मंदिर के बरामदे में चारों ओर से सीढ़ियों से घिरा एक तालाब है जो मंदिर के सौन्दर्य को बढ़ाता है।

इस मंदिर के अलावा यहां सात मंजिला बनी बावड़ी भी देखने को मिलती है। यह पानी एकत्र करने का बेहतरीन तरीका और कला का एक शानदार नमूना है।

यही नहींए इसी के आस.पास पेशवाओं के आवास भी बने हैं जो लगभग खंडर हो चुके हैं लेकिन उनकी बनावट आज भी आकर्षित करती है। गणेश बाग घूमते हुएए इसके पास के रामघाट और जानकी कुंड भी देखे जा सकते हैं।

गणेश बाग उत्तर प्रदेश के चित्रकूट में सबसे अधिक देखे जाने वाले पर्यटक आकर्षणों में से एक है। कर्वी-देवांगना रोड पर स्थित, यह सौंदर्य और ऐतिहासिक महत्व दोनों का स्थान है। इस जगह का मुख्य आकर्षण मंदिर, महल और बावड़ी है।

यहां जो महल खड़ा है , उसका निर्माण 19वीं शताब्दी के दौरान मराठा शासक पेशवा विनायक राव ने करवाया था। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा बनाए रखा जाता है और आगंतुकों को अपने सौंदर्य अनुपात से आकर्षित करता है। माना जाता है कि एक समय में , इस संरचना ने शाही परिवार के ग्रीष्मकालीन रिसॉर्ट के रूप में कार्य किया था। भले ही इसका अधिकांश भाग अब खंडहर में पड़ा हो , लेकिन वे आपको एक समय में इसकी भव्यता का अंदाजा देते हैं।

यहां का अन्य आकर्षण भगवान शिव मंदिर को समर्पित मंदिर है। मंदिर, अपने उत्कृष्ट नक्काशीदार गुंबदों और इसके स्तंभों और स्तंभों पर कामुक मूर्तियों के साथ , आपको तुरंत मध्य प्रदेश के खजुराहो मंदिरों की याद दिलाता है। इससे इसे मिनी-खजुराहो भी कहा जाने लगा है। धनुषाकार द्वार और स्तंभ भी मंदिर की समग्र सुंदरता में बड़े पैमाने पर योगदान करते हैं।

मंदिर परिसर में एक विशाल बावड़ी (मूल भाषा में बावली के रूप में जाना जाता है) भी शामिल है, जो अपने आप में एक आकर्षण है। हालांकि इसे कई सालों से छोड़ दिया गया है ,

लेकिन यह कुछ रोमांचक दर्शनीय स्थलों की यात्रा करता है। आप इसकी सीढ़ियों पर बैठ सकते हैं और दृश्यों का आनंद ले सकते हैं या महल को देखने का विकल्प चुन सकते हैं।

- **कामुक और देवी-देवतों के उकेरे गए हैं चित्र**


चित्र संख्या - 1.2 उकरे चित्र

इसमें **खजुराहों शैली** पर आधारित काम और कला का सुंदर रूप से चित्रण किया गया है। पेशवा ने गणेश बाग के साथ पुरानी कोतवाली किला , गोल तालाब और नारायण बाग भी बनवाया था। गणेश बाग की दीवारों को काट-काट कर, उन पर देवी-देवताओं की मूर्तियों को गढ़ा गया है। पंच मंजिलों के समूह को पंचायतन कहा जाता है। इसमें सबसे ऊपर शिखर पर काम और कला के बहुत से भीतरी चित्र खोदे गए हैं। कुछ चित्रकारी तो खुले तौर पर कामुक मुद्रा में बनाये गए हैं और कुछ चित्र पुराणों और रामायण पर भी आधारित है। यहां पर आपको काम , योग और भक्ति का एक अद्भुत और खूबसूरत मेल देखने को मिलेगा।

- **मंदिर के बीच में है गहरी बावली**


चित्र संख्या - 1.3 गहरी बावली

मंदिर की बाहरी दीवारों पर सात अश्वों के रथ पर सवार सूर्यदेव, कहीं विष्णु और अन्य देवी-देवताओं के चित्र बनाये गए हैं। मंदिर के निर्माण में नागर शैली का प्रयोग किया गया है। जिसकी वजह से गणेश बाग को मिनी खजुराहो कहा जाता है। नागर शैली की विशेषता है कि ऊँची जगह बनाकर ही मूर्ति बनाई जाती

है। यहां के मंदिर में बनी मूर्तियां खजुराहों के मंदिर में बनी मूर्तियों की तरह ही है। साथ ही बाग में एक बावली भी है , जिसमें सात खंड है। सात में से छह खंड पाने में डूबे रहते हैं और एक खंड खुला रहता है। यह बावली गर्मियों के समय ठंडक पहुँचाने का काम करती है।

- **शिव मंदिर है, मुख्य आकर्षण**


चित्र संख्या - 1.4 शिव मन्दिर

यहां का खुबसूरत और विशेष तरह की नक्काशी से बना शिव मंदिर इस बाग का मुख्य आकर्षण है। जिसे स्थानीय लोग 'गणेश मंदिर' के रूप में जानते हैं। इस मंदिर में कामुक मूर्ति कला देखने को मिल सकती है। खास कर इस मंदिर के गुंबदों पर खजुराहो मंदिर की तरह मूर्ति कला उकेरी गई है। मंदिर के बरामदे में चारों ओर से सीढ़ियों से घिरा एक तालाब है जो मंदिर के सौन्दर्य को बढ़ाता है।

- **मंदिर के सामने है एक तालाब**


चित्र संख्या - 1.5 तालाब

मंदिर के ठीक सामने एक तालाब भी है , जिसमें दो छिद्रों से पानी आता है। इसका आकार चौकोर है। कहते हैं कि कर्वी पेशवाकालीन राजमहल से गणेश बाग तक आने का एक गुप्त रास्ता भी है। जो पेशवाओं के पारिवारिक सदस्यों के आने-जाने के लिए प्रयोग किया जाता था। यही नहीं , इसी के आस-पास पेशवाओं के आवास भी बने हैं, जो लगभग खंडहर हो चुके हैं लेकिन उनकी बनावट आज भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

आप चित्रकूट के साथ कालिंजर किले का भी आनंद ले सकते हैं जो यहां से 50 किलोमीटर है। यहाँ आस-पास में जानकी कुंड , राम घाट , सती अनुसुइया मंदिर,हनुमान धारा आदि जगहें भी हैं , जहां आप घूम सकते हैं।


चित्र संख्या - 1.6 तालाब

➔ **खुलने का समय :** रोज़ सुबह 6 से शम के 6 बजे तक।

➔ **कैसे पहुंचे**

- **ट्रेन से :** चित्रकूट से सबसे नज़दीक कर्वी रेलवे स्टेशन है, जिसकी दूरी 8 किमी. है।
- **हवाईजहाज से :** सबसे करीब खजुराहो हवाई अड्डा , बमरौली हवाईअड्डा (इलाहबाद)
- **बस से :** झाँसी, वाराणसी, बाँदा, इलाहबाद, फैज़ाबाद, लखनऊ, दिल्ली आदि अन्य जगहों से यहां तक आने सड़कों का अच्छा जनसंपर्क है।

1.1.6.11 सोमनाथ मन्दिर चर

प्रभु श्रीराम की तपोभूमि के स्थलों की महिमा को विश्व पटल पर रखने और मानव सभ्यता के विकास की इन अति महत्वपूर्ण धरोहरों को यूनेस्को सहित पुरातत्व विभाग की



चित्र संख्या - 1.7 सोमनाथ मन्दिर चर

सूची में शामिल कराने के प्रयासों के साथ- साथ केंद्र सरकार द्वारा संचालित योजनाओं में शामिल कराने के उद्देश्य को लेकर आयोजित की गई 'चित्रकूट की अध्ययन यात्रा' नौ वें दिन चर स्थित सोमनाथ मंदिर पहुंची।

चित्रकूट-कर्वी से 12 किलोमीटर पूर्व कर्वी-मानिकपुर रोड के मध्यवर्ती ग्राम चर में वाल्मीकि नदी के तट पर एक पहाड़ी पर भगवान सोमनाथ शिव जी का भव्य प्राचीन मन्दिर है। मन्दिर के गर्भगृह की दीवार पर एक शिलालेख अंकित है जिसमें लिखा हुआ है कि इसका निर्माण 14 वीं शताब्दी के अन्त में तत्कालीन नरेश राजाकीर्ति सिंह ने कराया है। ऐसा बताया जाता है कि जिस पहाड़ी पर इस मन्दिर का निर्माण हुआ है उस पहाड़ी को सौरठिया पहाड़ी कहते थे। उस समय सौरठिया का अर्थ लोगों की समझ में नहीं आया था पर अब स्पष्ट हो गया है कि सौराष्ट्र का अपभ्रंश सौरठिया है। इसके समीप ही तत्कालीन शासकों की उपराजधानी भी थी जिसका नाम मदनगढ़ था। आजकल लोग इसे 'मदना' नाम से पुकारते हैं। उसके ध्वंशावशेष आज भी विद्यमान हैं। मन्दिर प्रागण तथा इसके आस पास विभिन्न आकार प्रकार वाली देवी , देवताओं, गन्धवरें, अप्सराओं, किन्नरों, भूत- प्रेतों, और गंगा यमुना की देवी स्वरूप मूर्तियों के साथ साथ पशु पक्षियों की लगभग दो हजार छोटी बड़ी मूर्तियों और उनके अवशेषों को देखकर ऐसा लगता है जैसे यहा मूर्तिकला सिखाने का कोई विश्वविद्यालय रहा होगा। यहा जीर्णावस्था में बिखरे पड़े असंख्य भग्नावशेषों से एक भी पत्थर ऐसा नहीं है जिसमें नक्काशी न हो। पत्थर की कटाई करके उकेरी (उत्कीर्ण) गयी देवी-देवताओं की मूर्तियां प्राचीन शिल्प कला का अद्भुत नमूना हैं।

कहते है कि व्याघ्रदेव ने सौराष्ट्र के सोमनाथ मन्दिर की तर्ज में चर के इस 'सोमनाथ मन्दिर' का निर्माण कराया था। अध्ययन दल का कहना है कि वर्तमान में मंदिर परिसर में लोगों

द्वारा अवैध निर्माण कराया जा रहा है जिससे ऐतिहासिक और पुरातात्विक धरोहरों को समेटे इस स्थान के नष्ट हो जाने की पूरी संभावना है। चित्रकूट के महत्वपूर्ण स्थल दुर्दशा को प्राप्त हैं। इन स्थलों के विकास के लिए किसी बड़े जन आन्दोलन की जरूरत है। सोमनाथ मंदिर की अद्भुत शिल्पकला का अवलोकन कर अध्ययन यात्रा दल बाल्मीकि आश्रम पहुंचा। आदि कवि और रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि चित्रकूट में निवास करते थे। वनवास काल में भरद्वाज मुनि के कहने पर भगवान श्रीराम सीता और लक्ष्मण के साथ वाल्मीकि आश्रम में पहुंचे थे और उनसे वनवास व्यतीत करने के लिए उपयुक्त स्थान बताने का आग्रह किया था। महर्षि बाल्मीकि के निर्देश पर ही उन्होंने चित्रकूट में डेरा डाला था। वाल्मीकि जी तथा उनके आश्रम का अध्यात्म रामायण तथा तुलसीकृत रामायण में विस्तार से उल्लेख हुआ है। रामनगर के पास मुख्य सड़क के एकदम बगल में स्थित कुंवर द्वय तालाब और इससे जुड़े मंदिर की पौराणिक महत्ता है। वनवास बिताने के लिए जब राम चित्रकूट आ रहे थे तब उन्होंने लक्ष्मण और सीता के साथ इस सरोवर मंत स्नान किया था।

1.1.6.12 मड़फा



चित्र संख्या - 1.8 मड़फा

मड़फा दुर्ग भी एक चन्देल कालीन किला है यह दुर्ग चित्रकूट के समीप चित्रकूट से 30 किलोमीटर की दूरी पर है। भरतकूप मार्ग पर बरिया मानपुर के समीप दुर्ग एक पहाड़ी पर है। चन्देल शासन काल में इस दुर्ग का महत्वपूर्ण स्थान था। तथा दुर्ग के भग्नावशेष यहाँ आज भी उपलब्ध होते है। सुरक्षा की दृष्टि से इस दुर्ग का विशेष महत्व था। तथा यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य भी सराहनीय है। यह दुर्ग कालिंजर से 26

कि0०0मी0० दूर उत्तर पूर्व में है। यहाँ तक पहुँचने के लिए कच्चा रास्ता है तथा इसके थोडी दूर बघेलाबारी गाँव है। इस दुर्ग में चढ़ने के लिए तीन रास्ते है। पहला मार्ग उत्तर पूर्व से मानपुर गाँव से है। तथा दूसरा मार्ग दक्षिण पूर्व से सवारियाँ गाँव से है। तथा तीसरा मार्ग कुरहन गाँव से है। तथा ये मार्ग दक्षिण पश्चिम में है।

अब इस दुर्ग में प्रवेश करने के लिए एक ही द्वार बचा है। इस द्वार को हाथी दरवाजा के नाम से पुकारा जाता है यह द्वार लाल रंग के बलुवा पत्थर से निर्मित है। चन्देलों के दुर्ग और मन्दिर समस्त स्थलो पर इन्ही पत्थरों से निर्मित हुए थे यहाँ से कुछ दूरी पर खभरिया के समीप चन्देलकालीन दो मन्दिर मिलते होते है। तथा यहीं पर एक सरोवर है और उसके ऊपर छत है जो चार स्तम्भो से रूकी हुई है। मड़फा दुर्ग समुद्र तल से 378 मी0 की ऊचाई पर है , इसी दुर्ग के पश्चिमी किनारे पर एक अन्य तालाब है इसका निर्माण चट्टान काटकर किया गया है। तथा करहन दरवाजे के समीप कुछ चन्देलकालीन मन्दिर भी है।

मड़फा दुर्ग की खोज अंग्रेज इतिहासकार ने 18वीं शताब्दी में की थी। और इसे मडफा नाम प्रदान किया था। इस दुर्ग में कालान्तर में बघेलों और बुन्देलों नरेशों का राज्य रहा। यहाँ का अन्तिम शासक हरवंश राय था जिसका पतन चचरिया युद्ध के पश्चात हुआ। यह युद्ध सन् 1780 में बाँदा के राजा और पन्ना के राजा के मध्य हुआ था। सन् 1804 में ब्रिटिश सैनिकों ने इसे अपने अधिकार में ले लिया था।

- **मड़फा दुर्ग के दर्शनीय स्थल**

इस दुर्ग के चारो ओर जंगल है। मड़फा दुर्ग में अनेक दर्शनीय स्थल है हाथी दरवाजे के सन्निकट भगवान शिव का एक विशालकाय मन्दिर है , जिसमें भगवान शिव की विशाल मूर्ति है ,

तथा उनके अनेक भुजाये है , तथा उन भुजाओं में अनेक प्रकार अस्त्र-शस्त्र भी है। तथा वे गले में नरमुण्डो की माला पहने हुए है।

थोडी दूर चलने पर एक सरोवर मिलता होता है जिसकी बनावट कालिंजर के स्वर्गारोहण ताल जैसी है तथा इसी के बगल में एक चन्देल कालीन मन्दिर है। इसमें कोई प्रतिमा नही है थोडी दूर चलने पर दो अन्य मन्दिर मिलते है। ये दोनो मन्दिर जैन धर्म से सम्बन्धित है। इन मन्दिरों के समीप जैन तीर्थाकरों की अनेक मूर्तियां है।

यही से शोडी दूरी पर अनेक छोटे-छोटे मन्दिर मिलते होते है इन मन्दिरों को यहाँ के लोग बारादरी के नाम से पुकारते है। ये मन्दिर पूरी तरह सुरक्षित नही है यहीं से थाडी दूर चलने पर दुर्ग से नीचे उतरने के लिए सीढ़िया लगी हुई है। सीढ़ियों के नीचे गौरी शंकर गुफा नामक एक स्थान है। यहाँ अनेक अर्थ निर्मित मूर्तियाँ है तथा साधू सन्तो ी की एक प्राकृतिक गुफा भी है। इतिहास के साक्ष्यों के अनुसार यह स्थल माण्डव ऋषि की तपस्थली थी तथा यही पर शकुनन्तरला ने दुश्यन्त के संयोग से अपने पुत्र भरत को जन्म दिया था।

यह स्थली कर्म कण्व ऋषि , यवन ऋषि, चरक ऋषि, और महाआर्धवर्ण की कर्म स्थली रही है। महाआर्धवर्ण व्यास के ससुर थे तथा उनकी पुत्री का नाम वाटिका था जो व्यास की पत्नी थी जब इस क्षेत्र में बघोलों का शासन स्थापित हुआ उस समय यह बघेल नरेश ब्याघ्ठ देव की राजधानी रही। रामचन्द्र बघेल के शासनकाल तक यह क्षेत्र बघेलों के शासन के अर्न्तगत रहा बाद में रामचन्द्र बघेल ने इस क्षेत्र को मुगल बादशाह अकबर को दे दिया।

सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ तानसेन और राजा बीरबल पहले रामचन्द्र बघोल के राज्य में भी मडफा में निवास किया करते थे। यह दुर्ग वास्तव में सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण दुर्ग था जो विभिन्नक नरेशों

के शासन के अधीन रहा। आज के समय मे मड़फा दुर्ग अपनी क्षीण अवस्था में है। अब यहां इसके सिर्फ भग्नावशेष ही देखने को मिलते है। जो इतिहास में रूची रखने वाले पर्यटकों को खूब आकर्षित करता है।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

अनुसंधान समस्या की उत्पत्ति प्रायः इस अनुभूति के द्वारा होती है कि किसी क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारू ढंग से संचालन में कोई बाधा है एवं उस बाधा को दूर किया जा सकता है| वस्तुतः आवश्यकता , जिज्ञासा व असन्तोष को आविष्कार की पृष्ठभूमि तैयार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है|

किसी भी राष्ट्र का इतिहास उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है | देश का इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊंचा माना जाएगा | यूं तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारतें और लिखे गए साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाए रखते हैं | यही वजह है कि ऐसी वर्षों पुरानी या यूँ कहें कई सदियों पुरानी ऐतिहासिक इमारतें जो संबंधित राष्ट्र के वर्षों पुरानी इतिहास की गौरव गाथा कहती हैं , उनके संरक्षण का पूरा-पूरा प्रयास किया जाता है | भारत में भी कई ऐतिहासिक मंदिर , पुरास्थल एवं अन्य इमारते हैं जो स्वयं हमारे विशाल और सम्मानजनक इतिहास की कहानी कहती हैं | लेकिन समय के साथ-साथ इन इमारतों और उनमें रखे गए साहित्य को बहुत नुकसान पहुंचा है | हमने भी परवाह किए बगैर उन अनमोल धरोहरों को मनमाने ढंग से खंडित किया है|

यह भी सत्य है कि वक्त रहते यदि हम अपनी भूल को पहचान नहीं पाए तो अपनी विरासत को धीरे-धीरे खो देंगे| आज आवश्यकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक हो| साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि पुरानी हो चुकी जर्जर

इमारतों की मरम्मत की जा ये तथा भवनों और महलों को पर्यटन स्थल बना कर उनकी चमक को बनाये रखने का प्रयास किया जाये| किताबों और स्मृति चिन्ह को संग्रहालय में जगह दी जाए | यह तभी सम्भव होगा जब प्रत्येक व्यक्ति अपनी विरासतों के प्रति जागरूक और जिम्मेदार होगा| विरासतों को संभाल कर रखना इतना आसान नहीं है इसलिए यूनेस्को द्वारा हर वर्ष विश्व विरासत दिवस मनाया जाता है जिसका स्पष्ट उद्देश्य इन इमारतों और उनमें रखी गई धरोहरों की देखभाल करना है|

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है | इस समस्या के अध्ययन से केवल विद्यार्थियों का ही नहीं अपितु अभिभावक , शिक्षक, समाज तथा राष्ट्र को भी लाभ होगा|

1.3 समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन इस प्रकार है **"विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन|"**

1.4 अध्ययन समस्या का औचित्य

शोधकर्ता को समस्या का चयन करने से पूर्व उसके औचित्य एवं उपयोगिता के सम्बन्ध में विचार कर लेना चाहि ये| शोध वस्तुतः ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में व्यवस्थित संज्ञान है | शोध में गहन निरीक्षण का प्रत्यय होता है | इसमें किसी सीमित क्षेत्र की किसी समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण होता है| उसकी निरीक्षण प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण ही क्रमबद्ध सौद्देश्य सुनियोजित होते हैं|

प्रस्तुत अध्ययन में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया जा रहा है| हमारी ऐतिहासिक विरासतें हमें अतीत के बारे में बहुत कुछ सिखाती और बतलाती है| साथ ही इस ऐतिहासिक विरासत को देखने के लिए दूर- दूर से पर्यटक यहाँ आते हैं| वर्तमान समाज एवं आने वाली पीढ़ी को ऐतिहासिक स्थलों को देखने की जिज्ञासा होती है दर्शनीयता , कलात्मकता दृश्यों के प्रति आकर्षण व्यक्ति को बार-बार उस स्थल पर आने की प्रेरणा प्रदान करता है | उन्हें दुर्गम स्थलों गुफाओं , प्राकृतिक दृश्यों को देखने की जिज्ञासा रहती है साथ ही विभिन्न सामाजिक संगठनों, वर्गों, समुदाय के लोग जब किसी स्थान विशेष पर आते हैं तो स्थानीय जनता का उनसे संपर्क होता है | वे उन्हें आवश्यकतानुसार आश्रय, भोजन आदि संसाधनों को उपलब्ध कराते हैं | उनकी हर प्रकार से व्यवस्था करते हैं | इस प्रकार से उनमें एक दूसरे को समझने व परखने के साथ-साथ उत्तरदायित्व पूर्ण भावना की अनुभूति होती है | किन्तु आज हमारी ऐतिहासिक विरासतों को पर्याप्त संरक्षण एवं लोगों को सही जानकारी न होने की वजह से इनका अस्तित्व समाप्त हो रहा है | इसके आस-पास साफ सफाई न होने से लोगों का रुझान इस ओर कम होता जा रहा है | इस समय कई स्मारक अतिक्रमण का शिकार हो गए हैं| आस-पास बस्ती होने की वजह से इ सके अस्तित्व को खतरा हो रहा है| जब तक लोग अपने ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरुक नहीं होंगे तब तक इन विरासतों को आरक्षण दे पाना मुश्किल होगा | अतः प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है|

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

परिभाषीकरण से तात्पर्य अध्ययन की समस्या को चिंतन द्वारा सम्पूर्ण समस्या क्षेत्र से बहार निकल कर स्पष्ट करना है| प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक में प्रयुक्त कठिन शब्दों की व्याख्या निम्नानुसार है-

1.5.1 विद्यार्थी- According to wikipedia - **विद्यार्थी** वह व्यक्ति होता है जो कोई चीज सीख रहा होता है| विद्यार्थी दो शब्दों से बना होता है- "विद्या" + "अर्थी" जिसका अर्थ होता है 'विद्या चाहने वाला'| विद्यार्थी किसी भी आयु वर्ग का हो सकता है बालक, किशोर, युवा या वयस्क| लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि वह कुछ सीख रहा होता है|

1.5.2 मड़फा दुर्ग - मड़फा से तात्पर्य चित्रकूट जनपद में "25.1262831"N "80.7013517"E अक्षांश देशांतर पर स्थित और चंदेल शासकों द्वारा 10 वीं शताब्दी में निर्मित **दुर्ग** से है|

1.5.3 जागरूकता- जागरूकता यानी सजग जीवन - चैतन्य जीवन अर्थात चिंतन पर आधारित जीवन, मंथन से निकला जीवन| जागरूकता यानी बाहरी संसार भीतरी संसार की संपूर्ण जानकारी, उचित-अनुचित की जानकारी| प्रस्तुत लघु शोध में **जागरूकता** से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत की जानकारी से है|

वेबस्टर डिक्शनरीज के अनुसार- "जागरूकता का अर्थ देखना, समझना, विचारना या ज्ञान को प्राप्त करना है|"

1.5.4 अध्ययन-किसी विषय के सब अंगों या गुण तत्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे समझने या पढ़ने की क्रिया अध्ययन कहलाती है|

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

- ❖ छात्र-छात्राओं में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता के अध्ययन हेतु मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना।
- ❖ मड़फा दुर्ग के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना|

❖ मड़फा दुर्ग के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना|

❖ मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता संवर्धन के संबंध में सुझाव प्रस्तुत करना|

1.7 अध्ययन के चर

शोध अध्ययन के संदर्भ में निम्नलिखित चरों को प्रमुख रूप से लिया जाएगा|

मापदंड चर:-

मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता

वर्गीकरण चर:-

लिंग

1.8 परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत लघु शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं-

1. छात्र-छात्राओं की मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है|

1.9 अध्ययन का परिसीमांकन

किसी भी अनुसंधान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना है| कोई भी शोधकर्ता शोध कार्य के लिए किसी विशेष समस्या ग्रस्त क्षेत्र का चुनाव कर ता है तथा विस्तृत अध्ययन के स्थान में गहन अध्ययन को वरीयता दे ता है| समस्या का स्वरुप साधारणत:

अधिक व्यापक होता है| समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है| सीमांकन अध्ययन की चाहरदीवारी होता है| शोध कर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सीमांकन किया है|

- प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के बाँदा एवं चित्रकूट जिले के विद्यार्थियों तक सीमित है|
- प्रस्तुत अध्ययन हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों तक सीमित है|
- प्रस्तुत अध्ययन नियमित विद्यार्थियों के अध्ययन तक सीमित है|

1.10 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

भारत की कला-संस्कृति एवं इसका इतिहास अत्यंत समृद्ध है एवं हमारी कला-संस्कृति की आधारशिला हमारे विरासत स्थल हैं। इन स्थलों के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व के साथ-साथ इनका व्यापक आर्थिक महत्त्व भी है | हमारी एक बहुत बड़ी समस्या ऐतिहासिक विरासतों को सुरक्षित रखने की भी है | पूरे देश में ऐसी अनगिनत प्राचीन और ऐतिहासिक महत्व की इमारतें हैं जिनकी देखभाल ठीक से नहीं हो रही हैं | कुछ इमारतें तो पूरी तरह उपेक्षित हैं और अगर उन पर ध्यान न दिया गया तो वे गिर जाएँगी | सरकारी विभाग अपनी सीमा और साधनों की कमी के कारण केवल उन्हीं विरासतों की देखभाल करते हैं जो उनकी सूची में शामिल हैं पर यह काफ़ी नहीं है| देश की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की ज़िम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं है वरन यह लोगों का मौलिक कर्तव्य भी है| किन्तु यह तभी सम्भव होगा जब लोग अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होंगे| अतः इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत लघु शोध कार्य किया जा रहा है|

अध्याय द्वितीय
सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

शोध कार्य के पूर्व सम्पन्न अनुसंधानों को सामूहिक रुप में अनुसंधान साहित्य की संज्ञा दी जाती है| सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों , ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित -अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता का अपनी समस्या के चयन , परिकल्पनाओं के निर्माण , अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है | एक अनुसंधान दूसरे अनुसंधान के लिए सहायक सिद्ध होता है | इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती है, दूसरे पहले जिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला गया उन पर प्रकाश डालकर शोधग्रन्थ को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है| *(गुप्ता, एस. पी.पृष्ठ 54)*

अनुसंधान कार्य में साहित्य सर्वेक्षण की समीक्षा करने की आवश्यकता , उपयोगिता तथा महत्व स्वयं सिद्ध हैं | अनुसंधान के क्षेत्र में संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान हो जाता है | साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा ही अनुसंधानकर्ता किसी क्षेत्र में क्या हो चुका है ? किस क्षेत्र में क्या करना शेष है? से अलग करके अपनी समस्या को सार्थक , मौलिक तथा अद्वितीय बनाता है एवं अनुसंधान की एक उपयुक्त रूपरेखा तैयार करने में मदद करता है | अनुसंधान में साहित्य सर्वेक्षण की आवश्यकता तथा महत्व के बारे में विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से विचार व्यक्त किए हैं|

जॉन डब्लू. बैस्ट के अनुसार "व्यवहारिक दृष्टि से समस्त मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है | अन्य जीवों, प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारंभ करना पड़ता है, से भिन्न मान पूर्व में संग्रहित व अभिलेखित ज्ञान से निर्माण करता है | ज्ञान के अथाह भण्डार में उसके सतत योगदान ही मानव प्रयासों के सभी क्षेत्रों में प्रगति को संभव बनाते हैं|"

डब्लू.आर. बोर्ग ने साहित्य सर्वेक्षण की आवश्यकता तथा महत्व की चर्चा करते हुए कहा है कि , "किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला की रचना करता है जिस पर समस्त भावी कार्य किया जा ता है| यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा ज्ञान की इस आधारशिला को दृढ नहीं कर लेते हैं हमारा कार्य सतही व नवसिखुआ होने की संभावना है एवं प्राय : पूर्व में किसी अन्य के द्वारा अच्छे ढंग से किया गया कार्य को दोहराना रहता है|

किसी भी अनुसंधान कार्य को उचित रुप से संपादित करने के लिए सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक होता है, क्योंकि इसके माध्यम से वह अपने अभीष्ट अनुसंधान क्षेत्र में अर्थपूर्ण प्रश्न की पहचान करने एवं ठोस तथा वस्तुनिष्ठ आधार प्राप्त करने में समर्थ होता है तथा वह पूर्वान्वेषित अनुसंधान क्षेत्र या किसी समस्या पर पहले किए गए शोध द्वारा उत्तर पुनः शोध का विषय बनने की दिशा में पुनरावृत्ति दोष से बच सकता है | सम्बन्धित साहित्य से अधोलिखित जानकारी उपलब्ध होती है

- ❖ किसी पूर्व अन्वेषित क्षेत्र में शोधों के अंतर्गत ऐसे चरों के विषय में संकेत प्राप्त होते हैं जिन्हें महत्वपूर्ण प्रमाणित किया जा चुका है|
- ❖ पूर्व सम्पादित कार्यों तथा अन्य कार्यों की, जिन्हें सार्थक ढंग से आगे बढ़ाया जा सकता है या लागू किया जा सकता है, सूचना प्राप्त होती है|

❖ किसी क्षेत्र विशेष के अंतर्गत निष्कर्षों की दृष्टि से संपन्न कार्यों की यथास्थिति का पता लगता है|

❖ लिए गए अनुसंधान विषय में किस विधि का प्रयोग उपयुक्त होगा , कौन से उपकरण उचित होंगे , किस प्रकार की सांख्यिकी का प्रयोग किया जाएगा इत्यादि कि जानकारी मिलती है|

❖ लिए गए अनुसंधान विषय की सफलता तथा इसकी उपयोगिता के संबंध में पूर्व अनुमान लगाया जा सकता है|

❖ समस्या के समाधान हेतु अनुसंधान की समुचित विधि का सुझाव देता है|

❖ यह अब तक उस क्षेत्र में से हो चुके कार्य की सूचना देता है तथा समस्या के अध्ययन में सूझ पैदा करता है|

2.2 ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित शोध अध्ययन

प्रस्तुत लघु शोध में कालिंजर दुर्ग से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया, जिसमें शोधकर्ता द्वारा प्राप्त निष्कर्षों को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है-

- **सिंह रमिता (2001)** ने *"कालिंजर की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व तथा पर्यटन विकास की संभावनाएँ"* पर अध्ययन किया| परिणामस्वरुप उन्होंने यह पाया कि पर्यटकों की दृष्टि से अभी तक कालिंजर अभावग्रस्त है| यहाँ पर आवागमन के साधनों का, पर्यटकों हेतु, मार्गदर्शक और बहुत सी सुविधाओं का अभाव है, जिसके कारण यहाँ का विकास संभव नही हो सका|

- **चौरसिया, पूजा (2019)** ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
- विद्यालयों में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्य किए जाएं।
- लोगों को जागरूकता के लिए संगोष्ठिओं एवं कार्यशाला का आयोजन किया जाए।
- कालिंजर क्षेत्र के ऐतिहासिक स्थलों की विश्व ऐतिहासिक धरोहर घोषित किया जाए।
- कालिंजर तक आवागमन में साधनों का विकास तीव्र गति से किया जाए।
- कलिंजर में विकास प्राधिकरण की स्थापना तथा इसे मॉडल टाउन के रूप में विकसित किया जाए।

2.3 जागरूकता से सम्बन्धित शोध अध्ययन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अन्य ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित विभिन्न सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया, जिसमें शोधकर्ताओं द्वारा प्राप्त निष्कर्षों को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है-

- **राव, भार्गव दिगमुरती (1995)** ने "भावी शिक्षकों में जनसंख्या के प्रति जागरूकता स्तर का अध्ययन करना" विषय पर शोध कार्य किया। प्रमुख शोध उद्देश्य में भावी शिक्षकों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता स्तर को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
- **भट्टाचार्य, जी.सी. (1996) ने "** वाराणसी में प्राथमिक कक्षाओं की छात्राओं व उनके अभिभावकों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन" विषय में शोध कार्य किया। उपरोक्त शोध कार्य के शोध उद्देश्यों में वाराणसी में तृतीय और पंचम कक्षाओं में पढ़ने

वाली छात्राओं और इनके अभिभावकों में पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर ज्ञात करना था। अनुसंधानकर्ता ने न्यादर्श में कक्षा तृतीय के 110 लड़के व 180 लड़कियाँ तथा कक्षा पंचम के 91 लड़के व 89 लड़कियाँ व उनके 269 अभिभावक पाँच विद्यालयी वर्गों के अन्तर्गत चयन किए। सिंह और राव द्वारा प्रयोग किया गया पर्यावरणीय जागरूकता मापनी उपकरण के रूप में आँकड़ों के संकलन हेतु प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि कक्षा तृतीय व पंचम के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता के उन्मुखीकरण , अभिवृत्ति और उत्तरदायित्व संबंधी कारों के संबंध में कोई भेद नहीं पाया गया। कक्षा तृतीय व पंचम के छात्राओं व उनके अभिभावकों में पर्यावरणीय जागरूकता में सह-संबंध सार्थक पाया गया।

- **अग्रवाल, प्रदीप कुमार (2002)** ने "माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में चल रही जनसंख्या शिक्षा के प्रति अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के ज्ञान एवं अभिवृत्ति और अभिभावकों की जागरूकता का विभिन्न संगठनों द्वारा किये जाने वाले विविध प्रयासों के संदर्भ में" विषय पर शोध कार्य किया गया। उपरोक्त शोध कार्य के शोध उद्देश्य में जनसंख्या शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों के ज्ञान एवं अभिवृत्ति की जागरूकता का अध्ययन करना था।

- **रामसजीवन (2006)** ने *"बुंदेलखंड के दुर्ग एक ऐतिहासिक अध्ययन"* में पाया की सम्पूर्ण बुंदेलखंड में प्राचीनकाल से लेकर उत्तर मध्य युग तक 400 से अधिक दुर्ग थे| जिनमें से अधिकाँश दुर्ग नष्ट हो चुके हैं| शोध प्रबंध के माध्यम से दुर्ग का पर्याप्त बोध हुआ इनकी वास्तु विधि का बोध हुआ |दुर्ग में उपलब्ध आवासीय स्थल , धर्मस्थल, जलाशय तथा सामाजिक स्थलों का बोध हुआ | अनेक दुर्गों में प्राचीन वेशभूषा के चित्र

अस्त्र-शस्त्र आभूषण आदि भी देखने को मिले जो विभिन्न संग्रहालयों में संग्रहित हैं | साथ ही इस शोध प्रबंध के माध्यम से बुंदेलखंड में पर्यटन व्यवसाय को प्रोत्साहन मिलेगा जो व्यक्ति बुंदेलखंड में पर्यटन के दृष्टिकोण से आते हैं, वह इन दुर्गों को देखेंगे जिससे सरकार की आर्थिक आय उपलब्ध होगी तथा जो समस्याएं पर्यटन के लिए यहाँ हैं उनका भी समाधान होगा| इसके साथ ही आवासीय स्थल बनेंगे तथा बेरोजगार युवकों को अनेक प्रकार के रोजगार पर्यटन व्यवसाय के माध्यम से उपलब्ध होंगे|

2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन से संबंधित पिछले शोध अध्ययनों की समीक्षा की है| इसमें कुछ समाचार पत्रों तथा शोध अध्ययनों से जानकारी प्राप्त की| संबंधित अध्ययनों की समीक्षा से पता चलता है कि, बुंदेलखंड के चित्रकूट जिले की ऐतिहासिक विरासत से संबंधित अध्ययनों की संख्या बहुत कम है | शोध से संबंधित **बुंदेलखंड में पर्यटन विकास नियोजन मड़फा के विशेष संदर्भ में** तथा **बुंदेलखंड के दुर्ग एक ऐतिहासिक अध्ययन** का अध्ययन किया इसके अलावा **मड़फा की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व तथा पर्यटन विकास की संभावना** एँ का अध्ययन किया | अध्ययनों के उपरांत शोधकर्ता ने **"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन "** को वर्तमान में आवश्यक मानते हुए शोध अध्ययन करना उचित समझा| प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों में ऐतिहासिक विरासत के प्रति समझ विकसित करने में मदद करेगा|

अध्याय तृतीय
मडफा दुर्ग: एक परिचय

3.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बुंदेलखंड क्षेत्र में चित्रकूट जिले में स्थित पौराणिक संदर्भ वाला एक ऐतिहासिक दुर्ग है भारतीय इतिहास में सामरिक दृष्टि से यह किला काफी महत्वपूर्ण रहा है। विश्व धरोहर स्थल प्राचीन नगरी कालिंजर दुर्ग के निकट ही स्थित है।यह एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। इस किले में अनेक स्मारकों और मूर्तियों का खजाना है। इन चीजों से इतिहास के विभिन्न पहलुओं का पता चलता है चंदेलो द्वारा बनवाया गया यह किला चंदेल वंश के शासनकाल की भव्य वास्तुकला का उदाहरण है इस किले के अंदर कई भवन व मंदिर है। इस विशाल किले में जिन पर बारीक डिजाइन और नक्काशी दार की गई है किले में भगवान शिव की पंचमुखी मूर्ति भी है।

मडफा दुर्ग ,भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिला स्थित एक दुर्ग है। बुंदेलखंड क्षेत्र में विंध्य पर्वत पर स्थित एक श्रंखला है। मड़फा उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश में विस्ताण विन्ध पर्वत श्रंखला से वेष्टित है और इसी की एक पर्वतीय चोटी पर स्थित है यह देश के जिस भूभाग में स्थित है वह प्राक मौर्य युग में चेदि गुप्त युग में डंहला, वर्दन युग चन्देली युग में जे जाक भक्ति और वर्तमान में बुंदेलखंड के नाम से अभिहित किया जाता है। शैल मालाओं से आवृत इस स्थान की आकृति मण्डप के सदृशा हैं। कुछ विद्वान इसके नामकरण का आधार इसी आकृति को मानते हैं, जबकि स्थानीय परंपरा और उनके बुद्धिजीवी मड़फा को माण्डव्य का अपभ्रंश कहते हैं ।मेरी दृष्टि से मड़फा का लोग विश्रित होना अधिक संभव एवं समाचीन है प्राचीन ग्रंथों में इसका

मण्डप नाम मिलता है। यहां पर वि .स. 1404 के एक अभिलेख में इस स्थान का नाम मधप्पा अंकित है। इसमें मुर्धन्य संघोष अल्पप्राण ड का दन्त्य सघोष महाप्राण ध हो जाना संभव है। विदेशी इतिहासकार टीफेन्थेलर द्वारा 18वीं सदी ईस्वी के मध्य में यहां किये गये सर्वेक्षण के दौरान इस स्थान का नाम मंडेफा ज्ञात हुआ था। मंडेफा शब्द मण्डप का ही विकसित रूप है। इस ग्रंथ में मडफा के वृहद अध्ययन की दृष्टि से कर्वी तहसील के दक्षिणी पश्चिमी भाग के साथ बांदा जनपद की अतर्रा तहसील के दक्षिणी पूर्वी तथा मध्यप्रदेश के सतना जनपद की रघुराजनगर तहसील के अतर्रा भाग को सम्मिलित किया गया है क्योंकि मड़फा से संबंधित कई महत्वपूर्ण धार्मिक पुरातात्विक स्थल,जिन्हें इससे प्रथक करने करके देखना समाचीन नहीं है ,इस विस्तृत भूभाग के अंतर्गत स्थित है। प्रस्तुत अध्ययन में इस समूचे भूभाग को मड़फा क्षेत्र की संज्ञा से अभिहित किया गया है।

3.2 भौगोलिक स्थिति

मड़फा दुर्ग जिस पर्वत पर निर्मित है वह दक्षिणी पूर्वी विंध्याचल पर्वत श्रेणी का भाग है यह समुद्र तल से 378 मीटर की ऊंचाई पर बना है। प्रस्तुत अध्ययन का केंद्र (मुख्य या प्रधान स्थान) मड़फा है। यह 25'9 उत्तरी अक्षांश तथा 80'45 पूर्वी देशांतर के मध्य उत्तर प्रदेश के वर्तमान चित्रकूट जनपद की कर्वी तहसील के दक्षिण पश्चिम भाग में करवी कलिंजर मार्ग पर स्थित है। मानपुर के समीपी धरातल से लगभग 316 मीटर है। यह विंध्य पर्वत के अन्य पर्वत जैसे कालिंजर पर्वत , फतेहगंज पर्वत, पाथर कछार पर्वत, बृहस्पति कुंड पर्वत आदि के किनारे बना हुआ है। ये पर्वत बड़ी चट्टानों से युक्त है इस क्षेत्र की मानवीय दशा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए यहां की भौगोलिक परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है। यह क्षेत्र कर्क रेखा के समीप स्थित है और इसकी भूरचना अधिकांश चट्टानी है अतएव ग्रीष्म ऋतु के मई एवं जून के महीने में यहां

का तापमान 40 सेंटीग्रेड तक बढ़ जाता है। यहां ये दो महीने बहुत गर्म सूखे और झुलसाने वाले होते हैं। इन महीनों में यहां जो गर्म हवाएं चलती हैं, उन्हें लू कहते हैं। शीतकाल में दिसंबर एवं जनवरी में यहां का तापमान 16 सेंटीग्रेड से लेकर 25 सेंटीग्रेड के बीच रहता है। इस क्षेत्र में औसतन वर्षा 94 सेंटीमीटर होती है। जिससे जुलाई से अक्टूबर के मध्य 85 सेंटीमीटर तथा शेष 10 सेंटीमीटर अगले 8 महीनों में होती है। इधर कई वर्षों में यहां वर्षा अपर्याप्त मात्रा में हो रही है, वर्षा की अपर्याप्त के कारण इस क्षेत्र में कुछ गांवो में पीने की जल की भी कमी हो जाती है। ग्रीष्म ऋतु में तालाब, पोखर व कुएं या तो सुख जाते हैं अथवा पानी बहुत कम हो जाता है, जिसमें पानी के लिए क्षेत्र के अधिकांश भाग में त्राहि-त्राहि मच जाती है।

3.3 पुरातन तपोवन मड़फा

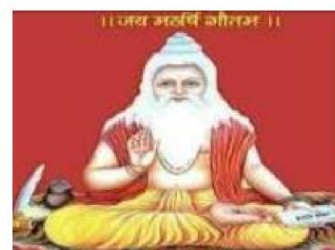
वैदिक आर्य ऊर्ध्वचेता जाति के लोग थे। उनकी चिन्ता हर प्रकार से व्यक्ति और जाति को ऊँचा उठाने की थी। वे जीवन को सर्वाङ्ग सम्पूर्ण बनाना चाहते थे और इसके लिए वे तप करते थे। उस समय तप ही समस्त उद्देश्यों का दाता था। तप अर्थात् जीवन की प्रयोगशाला में यथार्थ परख द्वारा कठोर साधना। प्राचीनकाल में आर्य तपस्वियों के साधना-मनन केन्द्र या आश्रम प्राय: एकान्त कानन में बिखरे हुए थे। वाल्मीकि रामायण (करीब ६००० वर्ष पूर्व) से ज्ञात होता है कि श्रीराम के में चित्रकूट क्षेत्र में वाल्मीकि , अत्रि, शरभंग, सुतीक्ष्ण, माण्डकर्णि, अगस्त्य आदि ऋषि-मुनियों ने अपने-अपने तपोवन बड़ी सात्विक भव्यता के साथ बना रखे थे। उस समय इस देश में तपोवनों का जाल बिछा हुआ था। तपोवन जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है तपस्या करने के ये स्थान वनों में हुआ करते थे। यहाँ यह बता देना न होगा कि इन तपोवनों में पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन था और ये आत्मनिर्भर थे। प्रायः सभी तपोवनों में विद्याकुल थे , जहाँ छात्र एवं छात्राएँ ज्ञान विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का अध्ययन करते थे। ये तपोवन हमारे देश की संस्कृति के अद्भुत केन्द्र रहे हैं। यहाँ वेद , आरण्यक तथा उपनिषदों आदि विराट् साहित्य की

रचना हुई है और यहीं उस युग के महान् विचारक (ऋषि-मुनि) आवश्यकतानुसार समय-समय पर एकत्र होकर देश की तत्कालीन सामाजिक वैचारिक स्थिति आदि पर अति गंभीर विचार-विमर्श कर आवश्यक नियम बनाते थे। इन तपोवनों में बनाये गये नियमों से हमारे देश का समाज प्रेरणा व मूल्यबोध प्राप्त करता रहा है।

चित्रकूट के सन्निकट स्थित मड़फा भी पुरातनकाल से ही ऋषियों-मुनियों का प्रिय तपोवन रहा है। विविध पुराणों के अनुसार यहाँ सृष्टिकालीन महर्षि भृगु को पुलोमा नामक पत्नी से उत्पन्न उनके पुत्र च्यवन रहा करते थे । यही वह विश्वामित्र का स्वर्ग की अप्सरा मेनका से संपर्क स्थापित हुआ था। यहां यह ध्यातव्य है कि विश्वामित्र कि यह पूरी वंश परंपरा है। यहां सभी को विश्वामित्र कहा जाता है । जिन विश्वामित्र ने राम लक्ष्मण को शिक्षा दी थी । वह बिस्वा मित्र के पूर्ववर्ती हैं। जिन्होंने मेनका से संपर्क स्थापित कर शकुंतला को जन्म दिया था । महर्षि मांडव के पूर्व यहां कई ऋषियों द्वारा तपस्या किए जाने के उल्लेख मिलते हैं किंतु इस तपोवन को लेखनी ख्याति मांडप द्वारा यहां कठोर तप किए जाने के बाद मिली है । आइए अपनी संस्कृत के विभिन्न अंगों की नीव डालने वाले तपोवन मड़फा से संबंधित अपने कतिपय महान पुरखों के परिचय और महिम्मगान द्वारा उन्हें अपनी श्रद्धांजलि चढ़ाएँ।

3.3.1 महर्षि गौतम

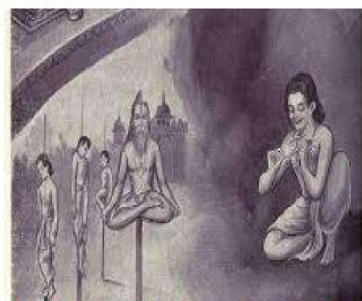
महर्षि गौतम अंगिरस वंशीय दीर्घतमस के पुत्र थे। उनके वंशज का उद्गम अंगीरा ऋषि से हुआ था और अंगीरा ऋषि मड़फा क्षेत्रअंतर सामसूत्र आश्रम में रहते थे। उनके संबंध में एक स्वतंत्र लेख किसी ग्रंथ में आगे दिया जा रहा है । महर्षि गौतम



चित्र संख्या - 3.1 महर्षि गौतम

न्याय दर्शन के प्रणेता ऋषि थे। उनका नाम भारतीय परंपरा का एक अति प्राचीन नाम है । वैवस्वत मन्वंतर के सप्तऋषियों में गौतम जी एक कृषि हैं । महाराज मनु ने उन्हें गोत्र प्रवर्तक ऋषि माना है । पदम पुराण तथा स्कंद पुराण के अतिरिक्त महाभारत में भी उनका उल्लेख हैं । महाभारत के अनुसार गौतम मेघा अतीत के नाम से प्रसिद्ध थे । प्रथम शताब्दी ईस्वी के महाकवि भास ने मेधातिथि में न्याय दर्शन के रूप में उल्लेख किया है।

3.3.2 महर्षि माण्डव्य



चित्र संख्या - 3.2 महर्षि माण्डव्य

महर्षि माण्डव्य का प्राचीनतम ऐतिहासिक सन्दर्भ महाभारत के आदि पर्व में मिलता है , जिससे ज्ञात होता है कि वे परम धैर्यवान्, सब धर्मों के ज्ञाता , सत्यनिष्ठ एवं तपस्वी थे। वे अपने आश्रम के द्वार पर एक वृक्ष के नीचे मौनव्रत धारण करके तपस्या कर रहे थे। एक दिन उनके आश्रम पर चोरी का माल लिये हुए कुछ लुटेरे आये। उन लुटेरों का बहुत से राजसैनिक पीछा कर रहे थे। लुटेरे चोरी का माल महर्षि के आश्रम में रखकर वहीं छिप गये। शीघ्र ही उनका पीछा करने वाले सैनिक भी वहाँ महर्षि माण्डव्य आ पहुँचे। सैनिकों ने तपस्यारत महर्षि माण्डव्य को देखकर उनसे लुटेरों के सम्बन्ध में जानकारी चाही ; किन्तु तपस्यारत महर्षि मौन रहे। तब सैनिकों ने आश्रम में ही | लुटेरों को खोजना प्रारम्भ किया और वहीं छिपे हुए चोरों तथा चोरी के माल को पा लिया।सैनिकों के मन में महर्षि के प्रति संदेह उत्पन्न हो गया। वे चोरों के साथ उन्हें भी बाँधकर राजा पास ले गये और राजा से सब बातें बतायीं।राजा ने चोरों के साथ महर्षि को भी प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी। रक्षकों ने महर्षि को शूली पर चढ़ा दिया। धर्मात्मा ब्रह्मर्षि माण्डव्य दीर्घकाल तक महर्षि माण्डव्य शूली पर उस वहाँ शूल भोजन के न अग्र मिलने भाग पर पर भी बैठे उनकी रहे। रक्षकों मन्त्रियों ने बहुत के दिनों साथ तक परामर्श उन्हें करके शूल पर राजा बैठे ने देख शूली राजा पर बैठे को

सूचना हुए महर्षि दी। माण्डव्य के लिये प्रार्थना से अज्ञानवश की। महर्षि किये ने गये राजा अपने को क्षमा अपराध कर के दिया लिए। राजा क्षमा ने माँगते उन्हें हुए शूली प्रसन्न से उतार होने कर शूल के अग्रभाग के सहारे उनके शरीर के भीतर से शूल को निकालने का प्रयास किया; किन्तु सफल न होने पर उन्होने उस शूल को मूलभाग में काट दिया। तब से महर्षि माण्डव्य शूलाग्रभाग को अपने शरीर के भीतर लिए हुए ही विचरने लगे थे। शूल के अग्रभाग को अणी कहते हैं, उससे युक्त होने के कारण वे महर्षि तभी से 'अणी-माण्डव्य' कहलाने लगे। वाल्यावस्था में पतिंगों के पुच्छभाग में सींक घुसेड़ने के फलस्वरुप धर्मराज ने उन्हें यह दण्ड दिया था ; जबकि धर्मशास्त्र के अनुसार जन्म से लेकर बारह वर्ष की आयु तक बालक जो कुछ भी करेगा , उसमें अधर्म नहीं होगा; क्योंकि उस समय तक बालक को धर्मशास्त्र के आदेश का ज्ञान नहीं हो पाता। इसी आधार पर महर्षि माण्डव्य के शाप से धर्मराज ने शूद्र योनि में विदुर के रुप में जन्म लिया था। महाभारत के शान्ति पर्व में भीष्म द्वारा युधिष्ठिर से माण्डव्य तथा परम वैराग्यवान् ('मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दहति कश्चन्' का उत्तर देने वाले), निमि के वंशज देवरात जनक के संवाद का उल्लेख किया गया है। इससे भी पता चलता है कि महर्षि माण्डव्य महाभारत के पूर्व के एक अति प्रतिष्ठित ऋषि थे। महर्षि माण्डव्य दीप्त तेजस्वी भृगु के गोत्र-प्रवर्तकों में से एक हैं। इनके तपोबल के सम्मुख बड़े-बड़े तपोनिष्ठों को भी झुकना पड़ा है। इनका तप: सामर्थ्य इनके शापों में दृष्टिगत होता है। आनुवांशिक क्रम से संजीवनी विद्या पर इनका भी आधिपत्य था।

पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण महर्षि माण्डव्य ने 'पाप प्रमोचन तीर्थ' के नाम से ख्यात मड़फा की सुरम्य पहाड़ी पर अपना आश्रम बनाया था। यहाँ का पर्वतीय प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त आकर्षक, मनोरम तथा सुषमा सम्पन्न है। पहाड़ी से अनेक झरने झरते हैं तथा नीचे 'पाप मोचन' नामक एक प्रसिद्ध सरोवर है। इसका पौराणिक नाम 'न्यानोदक कुण्ड' है। मान्यता है कि इसके जल में नियमित स्नान करने से कुष्ठ ठीक हो जाता है। यहाँ पर पहाड़ी में अनेक गुफाएँ प्राप्त हैं,

जिनमें तपस्वियों का निवास बताया जाता है। पहाड़ी पर स्थित वर्तमान कुटी नामक स्थान से दक्षिण की ओर थोड़ी नीचे एक प्राकृतिक गुफा है। लगभग २०० वर्ष पूर्व कुटी में निवास करने वाले प्रतिष्ठित संत सूरदास जी के अनुसार न्यानोदक कुण्ड, मड़फा यह गुफा महर्षि माण्डव्य की पायी क्षेत्रीय में इसी , जो मान्यतानुसार गुफा दूसरों के समक्ष के लिये माण्डव्य अत्यन्त दुर्लभ के घोर हैं। नाम तपस्या पौराणिक काल में यह बड़ा प्रसिद्ध स्थान था। क्षेत्रीय मान्यता अनुसार माण्डप के नाम पर ही इसका नाम मड़फा पड़ा।

3.3.3 महर्षि जाबालि


चित्र संख्या - 3.3 महर्षि जाबालि

भृगुकुल गोत्राकार श्रषि जाबालि भी मड़फा में बहुत समय तक रहे। यही दनकी पुत्री पिंगला से जिसका दूसरा नाम बटिका था महर्षि वेदव्यास का विवाह हुआ था। । समीपस्थ व्यास कुण्ड इस पौराणिक सम्बन्ध की मधुर स्मृतियों का आज भी गवाह है। पुत्री पिंगला के विवाहोपरान्त जाबालि अपने दूसरे पैतृक तपस्या स्थल भृगुतुङ्ग च ले गये थे। जबकि वेदव्यास जी व्यास कुण्ड के समीप पर्याप्त समय तक रहे हैं। महाभारत के वन पर्व में तीर्थ यात्रा के क्रम में उनके द्वरा यहाँ के वनाञ्चल महर्षि जाबालि में विद्यमान विभिन्न तीर्थाश्रमों के विशद वर्णन से यह सुस्पष्ट होजाता है कि उन्हें यहाँ का सूक्ष्म और प्रत्यक्ष ज्ञान था। इससे इस क्षेत्र में उनके दीर्घकालीन निवास एवं परिभ्रमण की पुष्टि होती है। यहाँ संक्षेप में महर्षि व्यास के इस विवाह की ऐतिहासिक कहानी की पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर देना भी अनुचित न होगा। इस विवाह के पूर्व व्यास जी ने कश्यप और प्राधा की कन्या घृताची से शुकदेव नामक परम ज्ञानी तथा वैराग्यवान् पुत्र उत्पन्न किया था ; किन्तु शुकदेव को वाल्यावस्था में ही वैराग्य हो गया। वे सब कुछ छोड़कर जंगल की ओर चल पड़े। विरह में पागल पिता व्यास उन्हें बुलाते रहे-द्वैपायनो विरह कातर आजुहाव (भागवत पुराण,

मंगलाचरण) परन्तु वे चले गये और जब शुकदेव ने निर्णय कर लिया कि अब उन्हें शरीर यात्रा कर लेनी है ; तो उन्होंने कैलाश के शिखर पर जाकर समाधि लगा ली और प्राण त्याग दिये। वेदव्यास अपने ज्ञानी पुत्र द्वारा योगमृत्यु का वरण कर लिये जाने पर पुत्र वियोग से सन्तप्त होकर अत्यन्त दु: खी रहने लगे। कुछ दिनों बाद अपनी माता सत्यवती का स्मरण करके उस श्रेष्ठ पर्वत को त्याग कर व्यास जी अपने जन्म स्थान पर चले आये।

3.3.4 महर्षि पतञ्जलि

भारतीय दार्शनिक चिन्तन तत्व-निरुपण की विविध प्रणालियों में बँटकर छह प्रमुख धाराओं में वर्गीकृत है। इन्हें ही सांख्य , न्याय, वैशेषिक, योग, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा या वेदान्त के नाम से अभिहित किया जाता है। सामूहिक रुप से ये' षड्दर्शन कहलाते हैं। महर्षि पतञ्जलि योग दर्शन के आद्य प्रवर्तक थे। उनकी माता का नाम गोणिका था और वे गोनर्द देश के रहने वाले थे। किन्तु उन्होंने चित्रकूट के



चित्र संख्या - 3.4 महर्षि पतञ्जलि

सुरम्य वन्य प्रदेश मड़फा महर्षि पतञ्जलि अपना साधना केन्द्र बनाया था। की पतञ्जलि वे प्रसिद्ध पतञ्जलि आयुर्वेदज्ञ समीपस्थ ग्रन्थ ने ने भविष्य योगिराज विशेष योग मड़फा तथा-पुराण प्रतिभा दीर्घायुषी सूत्र दत्तात्रेय की ' तथा के पहाड़ी प्राप्त अनुसार व्याकरण का थे पर। की मानसिक कहा साधना सरस्व ती थी के जाता , जिसके महान् शिष्यत्व की मन्त्र है थी ग्रन्थ कि आधार। से स्वीकार योग' दुर्गा महाभाष्य पर जी के उन्होंने कर प्रधान को ' की उनकी प्रसन्न रचना योग स्तम्भ कर जन्मभूमि दर्शन की महर्षि महर्षि थी के। उपलब्ध महापुरुषों नहीं उल्लिखित ने है भी। कहा यहाँ विभूतियों जाता तपस्या है कि की के महर्षि है अतिरिक्त किन्तु मार्कण्डेय उन भी सबकी समय, चिकित्सा प्रामाणिक-समय विज्ञान पर जानकारी कतिपय के प्रारम्भिक आज अन्य आचार्य पुनर्वसु और पराशर , जैनधर्म के' गणधर मण्डिक , करुणावतार भगवान् बुद्ध, योगेश्वर

गोरखनाथ की शिष्य परम्परा के सिद्धगुरु दीपक नाथ तथा महाराज छत्रसाल के धार्मिक गुरु महामति प्राणनाथ ने भी यहाँ कुछ काल तक साधना की है। विन्ध्यपर्वत श्रृंखला का यह श्रृंग प्राचीन ऋषियों-मुनियों का पावन तपोवन है। यहाँ आज भी सन्त-महात्मा साधना करते रहते हैं।

3.3.5 मड़फा और श्रीराम

वाल्मीकि रामायण से इस जनश्रुति की पुष्टि होती है कि श्रीराम ने अपनी वनवास-अवधि के दस वर्ष चित्रकूट क्षेत्र के इसी भूभाग में व्यतीत किये हैं। इस अवधि में उन्होंने कहीं दस महीने, कहीं साल भर, कहीं चार महीने, कहीं पाँच या छह महीने, कहीं इससे भी अधिक समय (अर्थात् सात महीने), कहीं उससे भी अधिक (आठ महीने), कहीं आधे मास अधिक अर्थात् साढ़े आठ महीने, कहीं तीन महीने और कहीं ग्यारह महीने तक निवास किया है। अपने इस भ्रमण काल में श्रीराम ऋषियों की तप: स्थली मड़फा भी पहुंचे थे और अपना कुछ समय यहाँ बिताया था। पहाड़ी के ऊपर जैन मन्दिरों के उत्तर-पूर्व ढलान की ओर अरी में सीता-रसोई नामक स्थान है। यद्यपि समय-समय पर इसके जीर्णोद्धार के साक्ष्य दृष्टिगत हो रहे हैं, तथापि प्राचीन कक्ष का मूल स्वरुप अद्यावधि विद्यमान है। इसके उत्तर दिशा में मणिकूट पर्वत पर सीता-शैय्या नामक स्थान है। स्थानीय परम्परा और बुद्धिजीवी श्रीराम आदि के यहाँ आगमन और निवास के साक्ष्य के रूप में इनका उल्लेख करते हैं। कहा जाता है कि द्वापर के अन्त में, महाभारत युद्ध के कुछ समय पहले अपने वनवास के समय पाँडवों ने भी अपना कुछ समय यहाँ बिताया था। पहाड़ी के पार्श्व में प्रवाहित ' पाण्डवा नाला' को पाँडवों के यहाँ आगमन और निवास के स्मारक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

3.3.6 आचार्य चरक और मड़फा

स्थानीय परम्परा इस स्थान को आरोग्य मनीषी आचार्य चरक का निवास स्थल मानती है। ध्यातव्य है कि आचार्य चरक केवल संहिता ग्रन्थों के प्रणयन में ही संलग्न नहीं रहते थे, अपितु वे घूम-घूम कर इधर से उधर विचरण कर , जहाँ भी रोगियों की सूचना मिलती थी , वहाँ पहुँच कर, उनकी चिकित्सा किया करते थे। इसी कल्याणकारी विचरण क्रिया से उनका ' चरक' नाम प्रसिद्ध हो गया। संभव है इसी संदर्भ में अथवा इस क्षेत्र में बहुतायत से उपलब्ध अनेक दुर्लभ औषधीय वनस्पतियों की दृष्टि से उनका यहाँ आना-जाना रहा हो। इस अप्सरा स्थल के ' की द्वारा चरक प्रसिद्धि यहाँ' शब्द स्थित कुष्ठ कुष्ठ निवारक न्यानोदक अर्थ में तीर्थ भी कुण्ड प्रयुक्त के में रूप स्नान होता में रही रहा करने है है से। और कुष्ठग्रसित उसके पौराणिक कुष्ठ दीर्घा-मुक्त काल नामक होने में दिया इस वेदवती का है अपमान। उल्लेख आश्रम ; एक जिसका द्वारा से अन्य स्थित मिलता कुपित क्षमा प्रचलित अनुपालन न्यानोदक-याचना इन्द्र है और ने कथा उसे कर किये तभी कुण्ड वह कुष्ठ के जाने से अनुसार में पुनः ग्रसित यह स्नान पर पूर्ववत् कुण्ड दया होने रूपवती करने-'द्रवित दीर्घा का सौन्दर्यमयी से शाप कुष्ठ अप्सरा बावली इन्द्र दे-ने मुक्त दिया ' उसे वेदवती हो के। होने गयी माण्डव्य नाम शापित। का द्वारा से उपाय कुष्ठ किये भी ऋषि ख्यात ग्रसित बता गये के इन कथाओं में दो तथ्यों से सत्यांश आभासित होता है , प्रथम यह कि पुराणों कहा गया में ऋषिराजनगर है और द्वितीय से यह अभिहित कि यहाँ इस स्थित पहाड़ी न्यानोदक पर अप्सराओं कुण्ड में का स्नान आवास करने-स्थल तथा समीपस्थ बनिहारिक , नामक गाँव-जहाँ गेरु की खदान है- के पानी का क्वाथ पीने से अनेक कुष्ठी कुष्ठ-मुक्त हो गये हैं। कुछ विद्वानों के मतानुसार इसकी चरक (कुष्ठ) निवारक क्षमता के कारण ही कालान्तर में इस स्थान को आरोग्य-मनीषी आचार्य चरक से सम्बद्ध कर दिया गया है। प्राचीनकाल में हमारे देश में ऋषियों के आश्रमों में कभी छोटे और कभी बड़े स्तरों पर धार्मिक साधकों की सभाएँ , संगोष्ठियाँ एवं शास्त्रीय चर्चायें

होती रहती थीं। महर्षि दधीचि के वंशधर पिप्पलाद ; स्वाध्याय, और तपस्या के धनी आचार्य श्वेताश्वतर तथा कुलपति शौनक के आश्रम की संगोष्ठी , धर्मसभा विख्यात है। कालंजर उन स्थानों में से एक है , जिन स्थानों पर इस प्रकार की सभाएँ होती थीं। विल्सन ने कालंजर को धार्मिक साधकों की सभा अथवा एकत्रित होने का स्थान बतलाया है। उस समय कुछ विद्वान् ऐसे होते थे ; जो स्थान-स्थान पर विचरण कर शास्त्रीय चर्चा किया करते थे और इस प्रकार अपने ज्ञान से लोगों को लाभान्वित किया करते थे। इन्हें चरक कहते थे ।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट कर देती है कि मड़फा पुरातन तपोवन एवं धार्मिक साधकों की संगोष्ठियोंका स्थल रहा है। प्राचीन काल में देश क बुद्धिजीवी अर्थात श्रषिमुनि यहाँ एकत्र होकर इन संगोष्ठियों में भाग लेते थे। उनकी संगोष्ठियों के कारण यह स्थान तीर्थस्थल माना जाने लगा। यहाँ इन संगोष्ठियोंका आयोजन महर्षि गौतम (मेधातिथि) के समय से आरम्भ हुआ प्रतीत होता है। इसलिये महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास ने महाभारत नेइस स्थान का "मेधाविक तीर्थ" के रूप में उल्लेख किया है।

3.4 मडफा के दर्शनीय स्थल

मड़फा दुर्ग उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद में मानपुर के समीपस्त पर्वत शिखर पर स्थित है। समीपी धरातल से इसकी ऊंचाई 221 मीटर है ।पूर्व मध्यकाल में चंदेल राज्य में मड़फा, कलिंजर ,अजयगढ़ (जय दुर्ग) , महोबा(महोत्सव नगर) ,वारि दुर्ग, खजुराहो (खजूर वाटक),कीजिए गिरि (देवगढ़)तथा ग्वालियर (गोप गिरी), के आठ दुर्ग विशेष प्रसिद्ध थे। उस समय राज्य के प्रमुख अंगों में पर्वतीय दुर्गों की गणना की जाती थी ।यही कारण है कि सिर्फ शास्त्रों में दुर्ग सम्बन्धी पर्याप्त निर्देश प्राप्त है।

मडफा दुर्ग में अनेक दर्शनीय स्थल हैं जो पुरातात्विक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। वास्तुशिल्प की दृष्टि से उनका वास्तुशिल्प अत्यन्त उच्चकोटि का है। यह वास्तुशिल्प गुप्त युग से चंदेल युग तक का है। यहां पर ऐसे स्थल ही प्राप्त हुए हैं, जहां वास्तु कारों ने वास्तु विद्या का परिचय भी दिया है। यह स्थल निम्नलिखित है।

3.4.1 हाथी दरवाजा


चित्र संख्या - 3.5 हाथी दरवाजा

जैसे ही हम दुर्ग के ऊपर चढ़ते हैं तो सर्वप्रथम हमें एक द्वार के दर्शन होते हैं यह द्वार हाथी दरवाजा के नाम से प्रसिद्ध है। इसका निर्माण बलुए पत्थर से हुआ है। इसके विषय में यह कहा जाता है कि चंदेल शासक अपने युद्ध के दौरान हाथियों को वाहन के रूप में प्रयोग करते थे और इसी द्वार से उनका आना-जाना था। इसलिए इस द्वार का नाम हाथी दरवाजा पड़ा। यह चंदेलयुगीन वास्तुशिल्प का उत्कृष्ट नमूना है। इसकी तुलना कालिंजर दुर्ग के ऊपर नीलकंठ जाने वाले रास्ते में द्वार है, इसी प्रकार का एक द्वार जौहरा के सन्निकट है। इन द्वार स्तम्भों में उच्चकोटि की नक्काशी है तथा अन्दर अनेक स्तंभ है।

यह दुर्ग का मुख्य और अन्तिम अवशिष्ट द्वार है परकोटे के अंदर स्थित 8. 54 मीटर लंबा, 2.29 मीटर चौड़ा तथा 4. 42 मीटर ऊंचा अलंकृत द्वार स्थानीय लाल बलुए पत्थरों से निर्मित है। द्वार के अन्दर दोनों और 91 सेंटीमीटर की कुर्सी के ऊपर 6.25 मीटर लम्बी, 2.34 मीटर चौड़ी दलाने बनी है, जिन पर 2.62 मीटर ऊंचे 9-9 नक्काशीदार स्तंभों के ऊपर पत्थर की कड़ी रखकर छत बनाई गई है। इस दरवाजे के बाहर दोनों और दो बुर्ज बने हुए हैं, जिन पर दुर्ग की सुरक्षा के लिए तोपें रखी जाती थीं। वर्तमान में यह द्वार प्राचीर से सम्बद्ध नहीं है। प्राचीर धस्त हो जाने के कारण इसका प्रयोग भी नहीं होता। आगन्तुक इसके पास से सीधे दुर्ग में प्रविष्ट हो जाते हैं। हाथी

दरवाजा के अतिरिक्त दुर्ग में दो द्वार और थे। एक पश्चिम दिशा में कुरूहूं की ओर और दूसरा दक्षिण-पूर्वी कोने में खमरिया की ओर। पूर्व काल में इसके नाम दिशाओं पर थे, किन्तु वर्तमान में इन्हें समीपस्थ गांव के नाम के आधार पर क्रमशः 'कुरूहूं दरवाजा' तथा 'खमरिया' द्वार' कहा जाता है।

'कुरूहूं दरवाजा' दुर्ग की रसद आपूर्ति का गुप्त मार्ग था। इसके सामने एक बुर्ज उपलब्ध है। कहा जाता है कि इस पर भी तोप रखी जाती थी दुर्ग के दक्षिणी-पूर्वी कोने में भी एक भव्य राजद्वार के भग्नावशेष प्राप्त हैं। इसे 'खमरिया द्वार' कहा जाता है। प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से यह इस दुर्ग का सबसे सुरम्य भाग है। इस द्वार से खमरिया की ओर का जो दृश्य दिखाई देता है, इस द्वार के सामने भी दो बुर्ज बने हैं कहा जाता है कि राज परिवार इन्हीं बुजुर्गों में बैठकर मनोहरी दृश्य का अवलोकन किया करता था।

3.4.2 शिव मंदिर-

हाथी दरवाजे से थोड़ी दूर एक विशालकाय शिव मंदिर है। इस मंदिर की यह विशेषता है कि इसमें शिवलिंग नहीं है अपितु शिव की विशालकाय मूर्ति है, जिसकी तुलना नीलकंठ मंदिर के समीप सरग्वाह से लगे हुए निचले कुंड में की प्राप्त कालभैरव की मूर्ति से की जा सकती है। शिव की इस प्रतिमा में लगभग 18 भुजाएं हैं जो अनेक अस्त्र-शस्त्रों से युक्त हैं तथा शिव के कण्ठ में नरमुण्डो की माला है पैरों के नीचे दैत्य का शरीर है। ऐसा प्रतीत होता है कि तांडव नृत्य की मुद्रा है। यह मंदिर चंदेलकालीन है किंतु इनके भग्न होने के कारण यहां के निवासियों ने इसका पुनः जीणोद्धार कराया।


चित्र संख्या - 3.6 शिव मन्दिर

शिव मंदिर से लगभग 500 मीटर आगे कुटी नामक स्थान के वन मार्ग में दाहिनी ओर बारादरी एवं राज महल के ध्वसावशेष से प्राप्त हैं। राजमहल के समीप 'सीताराम स्वामी मंदिर' के भग्नावशेष देखे जा सकते हैं। इन भवनों की भव्यता का अनुमान उपर्युक्त शिव मंदिर के चतुर्दिक नवनिर्मित दालान में लगे बारादरी के अलंकृत, कलात्मक स्तम्भों से लगाया जा सकता है।

3.4.3 सरोवर एवं मंदिर अवशेष-

कुछ दूर चलने पर एक सरोवर उपलब्ध होता है जो जमीन के अंदर है।यह कालिंजर में नीलकण्ठ के समीप सरग्वाह नामक जलाशय जैसा प्रतीत होता है। इस सरोवर में लगा हुआ एक मंदिर भी है, जिसमें अब किसी प्रकार की कोई मूर्ति नहीं है परन्तु फिर भी यहां अनेक साधू संत अपना डेरा जमाए हुए हैं ऐसा लगता है कि



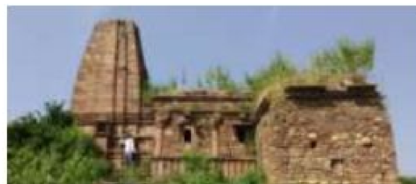
चित्र संख्या - 3.7 मन्दिर



चित्र संख्या - 3.8 सरोवर

चंदेल युग में इस स्थान पर कोई शिवमंदिर रहा होगा क्योंकि इसकी निर्माण शैली चंदेल युगीन है। इसके बाहर का भाग चन्देलयुगीन वास्तुशिल्प से सुसज्जित है।अनेक प्रकार की मूर्तियां अलंकरण की दृष्टि से इस स्थल की शोभा में वृद्धि करती है।

3.4.4 जैन मंदिर


चित्र संख्या - 3.9 जैन मन्दिर

इस स्थल से थोड़ी दूर पर दो जैन मंदिरों के अवशेष उपलब्ध होते हैं। ये जैन मंदिर वास्तुशिल्प की दृष्टि से पंचायतन नागरीय शैली के है। इनमें से एक मंदिर के ऊपर का शिखर ध्वस्त हो चुका है तथा दूसरा सुरक्षित है किन्तु इन मंदिरों में किसी प्रकार की मूर्ति अब गर्भग्रह में नहीं है।

3.4.5 मूर्ति अवशेष


चित्र संख्या - 3.10 मूर्ति


चित्र संख्या - 3.11

इन्हीं मन्दिरों से थोड़ी दूरी पर अनेक मूर्तियां वृक्षों के नीचे रखी हुई है। इनमें से कुछ मूर्तियां पूरी तरह सुरक्षित हैं और कुछ मूर्तिया लापरवाही के कारण खण्डित हो गई है। ऐसा है कि मूर्ति चोरों ने यहां की बेस कीमती मूर्तियां समय-समय पर चुराकर बेच डाली है। ये मूर्तिया ज्यादातर सम्बन्धित है तथा जैन तीर्थाकारों की भी हैं।

3.4.6 बारादरी-

यहां से कुछ दूर आगे बढ़ने पर जैन धर्म मंदिर से सम्बन्धित 12 छोटे-छोटे मंदिर उपलब्ध होते हैं, इन मंदिरों में ज्यादातर खण्डित मूर्तियां हैं। यहां के ग्रामीण वासियों ने धन के प्रलोभन में

प्रत्येक मंदिर के गर्भगृह को गहराई से खोदकर स्थल को नष्ट करने का प्रयास किया है। वास्तुशिल्प की दृष्टि से यह मूर्तियां और मंदिर दोनों ही उच्च कोटि के प्रतीत होते हैं।

इन मंदिरों के संदर्भ में एक कहावत प्रचलित है कि जैन व्यापारी यहां से किसी स्थल की ओर जा रहा था, उसे मार्ग में अचानक असंख्य धन प्राप्त हुआ। इसलिए उसने यह सोचा कि वह मडफा पर्वत के ऊपर चैत्यालय का निर्माण कराएगा। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर उसने मडफा दुर्ग पर अनेक मंदिरों का निर्माण कराया। यह घटना चंदेलयुग की है।

3.4.7 सरोवर

जैन मंदिरों के निकट की एक अति सुंदर सरोवर में मिलता है। जिसके चारों ओर पक्की दीवारें है तथा जल तक पहुंचने के लिए सोपान बनें हुए हैं। इस सरोवर में वर्षा ऋतु में जल उपलब्ध रहता है, शेष समय में जल नहीं रहता। अनुमान यह है कि मडफा के कभी यह सरोवर जलापूर्ति का प्रमुख स्थान रहा होगा।



चित्र संख्या - 3.12 सरोवर

3.4.8 गौरीशंकर गुफा

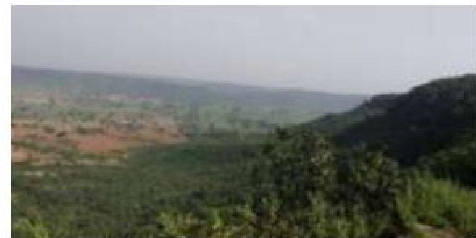
जैन बारादरी के आगे यहां पर्वत की सीमा समाप्त होती है वहां नीचे उतरने के लिए एक सकरा सा रास्ता है और कुछ दूर पर प क्की सीढ़ियां बनी हुई है। सीढ़ियों से नीचे उतरने पर गौरी शंकर गुप्ता मिलती है। इस स्थल में एक प्राकृतिक गुफा है यहां पर किसी तपस्वी ने बड़े ही कलात्मक ढंग से पूरी गुफा में राम राम लिखा है। इसी के बाहर शिव पार्वती की अनेक मूर्तियां प्राप्त होती है। कुछ चट्टानों में मूर्ति शिल्पकारों ने किसी विशेष रंग से



चित्र संख्या - 3.13 चन्देल कालीन बड़ा मन्दिर

पत्थरों में रेखाकृति बनाई हुई है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है की मूर्ति निर्माण से पहले मूर्त शिल्पकार एक रेखा कृति प्रस्तर में बनाते थे और उसके पश्चात मूर्ति का निर्माण करते थे। इससे से तदयुगीन वास्तु एवं मूर्ति शिल्प का बोध होता है।

3.4.9 मडफा दुर्ग


चित्र संख्या - 3.14 मड़फा दुर्ग

मडफा दुर्ग कालिंजर दुर्ग जैसा ही था। कालिंजर की तरह एक सम्पूर्ण पर्वत को लाल बलुए पत्थरों की रक्षा प्राचीन से परिवेष्टित कर इसे दुर्ग का स्वरूप प्रदान किया गया था। जिस पर्वत पर यह दुर्ग निर्मित था, उसी की कगारें मैदान से एकदम सीधे ऊंची उठी हुई हैं, जिससे कोई भी आक्रमणकारी उसके शिखर पर स्थित दुर्ग तक आसानी से पहुंच नहीं सकता था। नीचे से पर्वत के शिखर तक पहुंचने के लिए कोई पक्का मार्ग नहीं है। इसकी तलहटी में बसे मानपुर, कुरहूं और खमरिया तीनों स्थानों से वहां तक वर्तमान में पगडंडी जैसे मार्ग से पहुंचा जाता है। इन तीनों में मानपुर वाला मार्ग अपेक्षाकृत अधिक सीधा तथा सुगम है। इसमें लगभग 50 मीटर की ऊंचाई तक पक्की सीढ़ियां बनी है।

अध्याय चतुर्थ
शोध अभिकल्प

4.1 शोध विधि

किसी भी अनुसंधान की मुख्यतया तीन श्रेणियाँ होती हैं|

- ❖ ऐतिहासिक विधि
- ❖ वर्णनात्मक विधि
- ❖ प्रयोगात्मक विधि

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण अनुसंधान पर आधारित है| वर्णनात्मक अनुसंधान का एक सर्वाधिक प्रचलित प्रकार सर्वेक्षण अनुसंधान है | सर्वेक्षण किसी क्षेत्र, समूह या संस्था की वर्तमान स्थिति को जानने , विश्लेषित करने , व्याख्यित करने तथा प्रतिवेदित करने का एक सुनियोजित प्रयास है| जिसमें प्राय: प्रश्नावली, साक्षात्कार या परीक्षणों के माध्यम से काफी अधिक व्यक्तियों से प्रदत्त संकलित किए जाते हैं | इसमें व्यक्तिगत इकाइयों की विशेषताओं को वैयक्तिक रूप से न देखकर समूह की विशेषताएं सामूहिक रूप में देखी जाती हैं एवं प्रदत्तों को समूह एवं उपसमूहों की विशेषताओं के रूप में संक्षिप्तीकरण कर प्रस्तुत किया जाता है| इस दृष्टि से सर्वेक्षण अनुसंधानों को अनुप्रस्थ प्रकार का अनुसंधान कार्य भी कहा जा सकता है| वर्तमान समय में सर्वेक्षण को अध्ययन का एक महत्वपूर्ण प्रकार माना जाता है| इसे सूचनाओं को प्राप्त करने व सारणीबद्ध करने का लिपकीय कार्य नहीं समझना चाहिए | वरन् यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित समस्या तथा उद्देश्यों पर आधारित होता है एवं इनमें विशेषज्ञतापूर्ण तथा कल्पनाशील नियोजन, प्रतिनिधित्व प्रतिदर्श में प्रदत्तों का व्यवस्थित संकलन, प्राप्त प्रदत्तों का सजग विश्लेषण

व व्याख्या , एवं परिणामों का तार्किक कौशलयुक्त प्रतिवेदन तैयार करने जैसी विभिन्न बौद्धिक क्रियाएं सम्मिलित रहती हैं|

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी शब्द Survey का हिंदी पर्याय है | अंग्रेजी शब्द Survey से तात्पर्य 'To look over' या 'to oversee' से हैं| अतः सर्वेक्षण से तात्पर्य किसी परिस्थिति या घटना की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए उसके किसी क्षेत्र का समालोचनात्मक निरीक्षण करने से है| इसके अंतर्गत किसी घटना , समूह या परिस्थिति , विभिन्न पक्षों से संबंधित सूचनाएं , आंकिक रूप से संग्रहित की जाती हैं एवं सांख्यिकीय प्रविधियों के द्वारा विश्लेषित की जाती हैं| सर्वेक्षण के लिए सामान्य सर्वेक्षण शब्द का प्रयोग भी होता है जो किसी समय विशेष पर प्रचलित दशाओं की जानकारी प्राप्त करता है|

सर्वेक्षण के प्रकारों को प्रतिदर्श सर्वेक्षण तथा संगणना सर्वेक्षण में भी बाँटा जा सकता है| प्रतिदर्श सर्वेक्षण में लक्ष्य जनसंख्या से छाँटे गए एक छोटे से प्रदर्शित किए जाते हैं एवं उनका सामान्यीकरण के संपूर्ण लक्षणों के बारे में निष्कर्ष निकाले जाते हैं | इसके विपरीत सर्वेक्षण में संपूर्ण जनसंख्या से प्राप्त निष्कर्ष निकाले जाते हैं| अनुसंधान कार्यों हेतु प्रतिदर्श सर्वेक्षण का प्रयोग किया जाता है एवं विधि द्वारा प्रतिदर्श का चयन करने पर जोर दिया जाता है | परिस्थितियों से जुड़े सर्वेक्षणों को शैक्षिक पर्यवेक्षण , सामाजिक परिस्थितियों से जुड़े सर्वेक्षणों को सामाजिक सर्वेक्षण , राजनीतिक मुद्दों से संबंधित सर्वेक्षण को आर्थिक सर्वेक्षण कहा जाता है | जनता के लिए जनमत सर्वेक्षण करने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है|

जॉन डब्लू वेस्ट (1959) "आंकड़ों का एकत्रीकरण संपूर्ण जनसंख्या में सर्वेक्षण द्वारा होना चाहिए|"

शैक्षिक सर्वेक्षण में विद्यालय सर्वेक्षण का विशेष महत्व है जिसके संबंध में गुड बार एवं स्केट्स (1941) ने अपने विचार व्यक्त किए है - यह इसी प्रकार कहा जा सकता है कि कोई भी एकीकृत कार्य इतनी पूर्णता के साथ अनुसंधान के आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का उसके विविध अवस्थाओं में प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है जितना कि विद्यालय सर्वेक्षण करता है|

पारसनाथ राय के अनुसार-

"वर्णनात्मक अनुसंधान (सर्वेक्षण उपागम) क्या है? का वर्णन एवं विश्लेषण करता है| परिस्थितियों एवं अभिवृत्ति या जो पाई जा रही हैं, प्रक्रिया जो चल रही है, अनुसंधान जो किए जा रहे हैं अथवा नई दिशाएँ जो विकसित हो रही हैं उन्हीं से इसका संबंध है|

4.2 अध्ययन समष्टि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थी समष्टि को समाहित किया गया है|

4.2.1 विद्यार्थी समष्टि

वर्तमान शोध समष्टि के अन्तर्गत छात्र-छात्राएँ समाविष्ट हैं। जो उत्तर प्रदेश के बाँदा एवं चित्रकूट जिले के विद्यार्थी हैं।

4.3 निर्धारित लक्षित प्रतिदर्श का चयन

शोध योजना के समय लक्षित न्यादर्श का आकार तथा उसका विभाजन निश्चित किया गया था, जो निम्नवत है-

तालिका संख्या 4.3 लक्षित न्यादर्श का आकार तथा उसका विभाजन

छात्र	छात्राएं
35	15

4.4 न्यादर्श चयन विधि

शोध के सन्दर्भ में प्रतिदर्श चयन के निमित्त असम्भाव्य प्रतिदर्श चयन प्राविधि (non-probability sampling technique) को ग्रहण किया गया| चित्रकूट मण्डल से बाँदा व चित्रकूट जिले के विद्यार्थियों का चयन आकस्मिक प्रतिदर्श चयन विधि (Accidantal sampling technique) द्वारा किया गया |

4.5 लक्षित न्यादर्श का चयन

लक्षित न्यादर्श के चयन हेतु निम्नांकित प्रक्रिया का अनुकरण किया गया-

4.5.1 जनपदों का चयन एवं न्यायोचितता

जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्तमान शोध अध्ययन हेतु, शोध कर्ता द्वारा उत्तर प्रदेश के चित्रकूट मण्डल के मानचित्र के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि इसके अंतर्गत बाँदा, चित्रकूट, महोबा, हमीरपुर आते हैं| शोध कर्ता बाँदा जनपद में रहकर अध्ययन कार्य कर रहा है| बुंदेलखंड में बाँदा एवं चित्रकूट जनपद की गिनती पिछड़े जिलों में होती है| इन पिछड़े जिलों को विकास की मुख्यधारा में लाने हेतु अधिकाधिक शोधकार्य किये जाने की आवश्यकता है| अतः उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श विधि को अंगीकृत कर, उत्तर प्रदेश में से, चित्रकूट मण्डल से बाँदा एवं चित्रकूट जनपद को चयनित किया गया है|

(परिशिष्ट-1)

4.6 शोध उपकरण

किसी भी शोध समस्या की परिकल्पना के परीक्षण के लिए आवश्यक एवं तर्कसंगत आंकड़ों की जरूरत होती है इन आंकड़ों के संकलन के लिए जिन साध नों का उपयोग किया जाता है उन्हें शोध उपकरण कहा जाता है | अनुसंधान के उपकरण ऐसे होने चाहिए जो वांछित उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक तथा संबंधित आंकड़ों के लिए उपयुक्त हो| प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में शोध उपकरण के रूप में प्रश्नावली का प्रयोग किया गया क्योंकि यह विधि प्रस्तुत समस्या के अनुकूल एवं शोधकर्ता के लिए सुविधाजनक रहा|

4.6.1 मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण

प्रायः प्रश्नावली प्रश्नों की वह क्रमबद्ध तालिका है , जो विषयवस्तु के संबंध में सूचनाएं प्राप्त करने में योगदान देती हैं|

गुड एवं हेड के अनुसार , " प्रश्नावली मापन की एक प्रविधि है जिसकी सहायता से प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए जाते हैं, जिन्हें न्यादर्श के सदस्यों द्वारा स्वयं उत्तर लिखना पड़ता है|"

प्रश्नावली उन प्रश्नों का सुव्यवस्थित संकलन है , जिसको समग्र के उ स न्यादर्श के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है , जिससे की सूचनाएं अपेक्षित हैं | प्रश्नावली के माध्यम से सहजता व सरलता से सीमित समय में एक साथ अधिकाधिक आँकड़े एक बड़े समूह से एकत्र किए जा सकते हैं|

इस प्रकार प्रश्नावली प्रश्नों की एक उद्देश्यपूर्ण सुनियोजित तालिका है , जो उत्तर प्राप्त करने के लिए अ भिप्रेरक का कार्य करती है तथा उससे प्राप्त उत्तरों का व्यवस्थापन एवं सांख्यिकी य विश्लेषण संभव है|

4.6.2 स्वनिर्मित प्रश्नावली की आवश्यकता

शोधकर्ता के समक्ष माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मड़फा प्रति जागरूकता के अध्ययन को ज्ञात करने के लिए कई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध न होने के कारण स्वनिर्मित प्रश्नावली , जो कि शोध के लिए आवश्यक है , का निर्माण किया गया | इस उपकरण का निर्माण अनुसंधानकर्ता ने शोध समस्या के उद्देश्यों एवं समस्या के घटकों को ध्यान में रखकर किया है|

4.7 परीक्षणों का प्रशासन

परीक्षण का प्रशासन शोधकर्ता द्वारा विद्यार्थियों पर किया गया|

सौहार्द्र सम्बन्ध स्थापन

परीक्षण प्रशासित करने हेतु मड़फा दुर्ग जाकर दर्शन करने आये हुये विद्यार्थियों को शोध उद्देश्यों से परिचित कराया गया। तथा सौहार्द्र स्थापन के पश्चात प्रश्नावली भरायी गयी।

4.8 परीक्षणों का फलांकन

समस्त उत्तर पुस्तिकाएं एकत्र करने के बाद परीक्षण का फलांकन परीक्षण उत्तर कुंजी में प्रदत्त विधि के अनुसार निम्नवत किया गया|

4.8.1 जागरूकता परीक्षण का फलांकन

जागरूकता परीक्षण पर प्राप्त अंकों की गणना करने में फलांकन उत्तर कुंजी का प्रयोग किया गया| उत्तर पत्र पर जिन प्रश्नों के विद्यार्थियों द्वारा सही उत्तर दिए गए थे, उन प्रश्नों पर विद्यार्थियों को एक अंक प्रदान किया गया तथा जिन प्रश्नों को छोड़ दिया गया था या गलत उत्तर

दिए गए थे उन प्रश्नों पर विद्यार्थियों को शून्य अंक प्रदान किया गया| इस प्रकार सही उत्तरों पर जितने भी अंक प्राप्त हुए उन सब का योग ही विद्यार्थी विशेष का मड़फा दुर्ग की जागरूकता संबंधी कुल प्राप्तांक माना गया|

4.9 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

वर्तमान लघु शोध अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक एवं अनुमानात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया-

4.9.1 प्रतिशत

किसी दिए गए न्यादर्श में प्रतिशत की गणना तब उपयोगी होती है, जब व्यवहार का प्रदर्शन निश्चित अभिवृद्धि की गहनशीलता या अन्य विशेषताएं प्रकट होती हैं एवं जब प्रत्यक्षतः इन विशेषताओं की गणना संभव हो जाती है| किसी व्यवहार की उपस्थिति में प्रतिशत दिया जाना प्रश्न उत्पन्न करता है कि हम इन संख्याओं में कितना विश्वास प्रकट कर सकते हैं, 100 के आधार पर जो संख्या प्राप्त होती है, उसे प्रतिशत (100 में से) कहते हैं| प्रतिशत को संक्षेप में प्र.श. से व्यक्त करते हैं उसे चिह्न % द्वारा व्यक्त किया जाता है प्रतिशत को ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है|

$$\text{प्रतिशत} = \frac{\text{प्राप्तांक की संख्या}}{\text{पूर्णांक की संख्या}} \times 100$$

4.9.2 दण्ड आरेख

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की विज्ञान प्रयोगशालाओं की वर्तमान स्थिति के अध्ययन हेतु दण्ड आरेख की रचना की गयी| इसके द्वारा एकल अथवा सामूहिक सांख्यिकीय

आंकड़ों के मानों को आयताकार डंडों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, जहाँ प्रत्येक दण्ड की लम्बाई उसके द्वारा प्रदर्शित किये जा रहे मान के अनुपात में राखी जाती है|

4.10 अनुमानात्मक सांख्यिकीय प्रविधियाँ

परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु अग्रांकित अनुमानात्मक सांख्यिकीय प्राविधि प्रयुक्त हुई-

4.10.1 .क्रांतिक अनुपात

दो बड़े स्वतंत्र समूहों के मध्यमानो में अंतर की सार्थकता की जाँच:- जब प्रतिदर्शों का आकर 30 या 30 से अधिक होता है, तो उनके मध्यमानो के अंतर की जाँच क्रांतिक अनुपात द्वारा की जाती है| क्रांतिक अनुपात की गणना निम्न सूत्रों द्वारा की जाती है-

$$t = \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1 - 1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2 - 1}}}$$

जहाँ, M_1 = पहले समूह का समान्तर माध्य

M_2 = दूसरे समूह का समान्तर माध्य

N_1 = पहले समूह का आकार

N_2 = दूसरे समूह का आकार

σ_1 = पहले समूह का मानक विचलन

σ_2 = दूसरे समूह का मानक विचलन

यह वर्तमान लघु शोध में ऑनलाइन कैलकूलेटर से किया गया है। यह सांख्यिकी य गणना की गयी है। जिन्हें परिशिष्ट में लगाया गया है।

अध्याय पंचम
प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य वर्णित शोध विधि द्वारा एकत्रित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तथा विवेचना करना है| प्रस्तुत अध्याय में सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया गया है|

5.1 विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

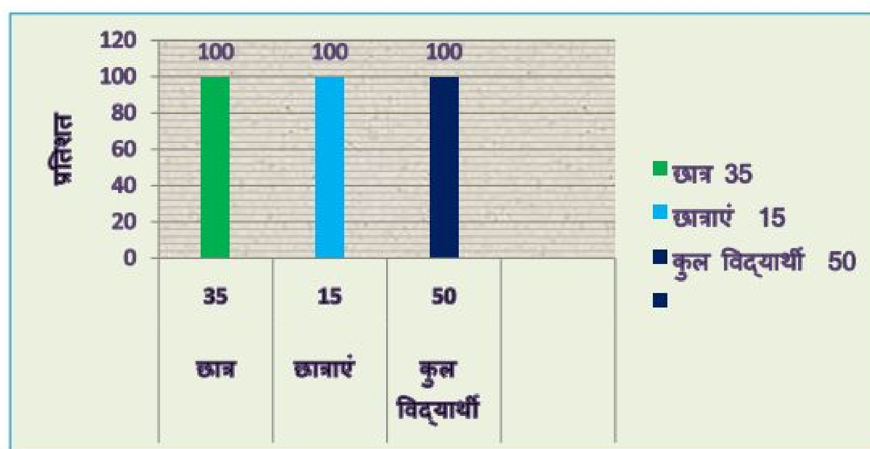
प्रश्न-1. मड़फा किला किस जिले में स्थित है?

(अ) चित्रकूट (ब) बाँदा (स) पन्ना (द) सतना

सही उत्तर – (अ) चित्रकूट

तालिका संख्या 5.1
प्रश्न-1 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	35	100
छात्राएं	15	15	100
कुल विद्यार्थी	50	50	100



71

प्रश्न-1 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.1

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.1 एवं चित्र संख्या 5.1 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि शत प्रतिशत (100%) विद्यार्थी छात्र-छात्राएं दोनों मड़फा दुर्ग से परिचित हैं।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, मड़फा दुर्ग से सभी विद्यार्थी परिचित हैं। यह अच्छी बात है कि विद्यार्थी मड़फा दुर्ग जैसे ऐतिहासिक स्थल के प्रति रूचि रखते हैं तथा इससे परिचित हैं।

प्रश्न -2. मड़फा दुर्ग तक पहुँचने के कितने मार्ग हैं?

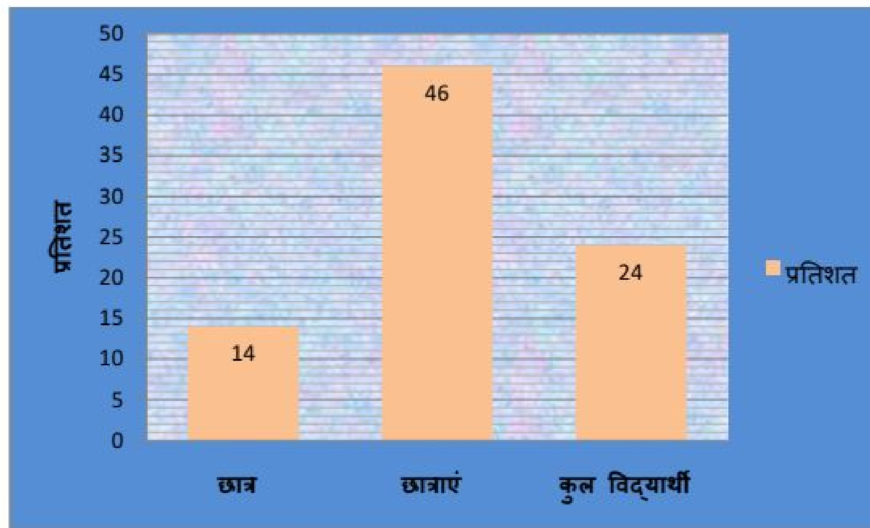
अ) एक (ब) दो (स) तीन (द) चार

सही उत्तर – (स) तीन

तालिका संख्या 5.2

प्रश्न-2 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	27	77
छात्राएं	15	15	100
कुल विद्यार्थी	50	42	84



चित्र संख्या-5.2

प्रश्न-2 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

विश्लेषण - उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2 एवं चित्र संख्या 5.2 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि 77 प्रतिशत छात्र मड़फा दुर्ग तक पहुचने के मार्ग से परिचित हैं । जबकि छात्राएं शत प्रतिशत परिचित हैं।

विवेचना - उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है , कि मड़फा दुर्ग तक पहुचने के मार्ग से छात्राओं की अपेक्षा छात्र कुछ कम परिचित हैं।

प्रश्न-3. मड़फा के निर्माण का श्रेय किस शासक को है?

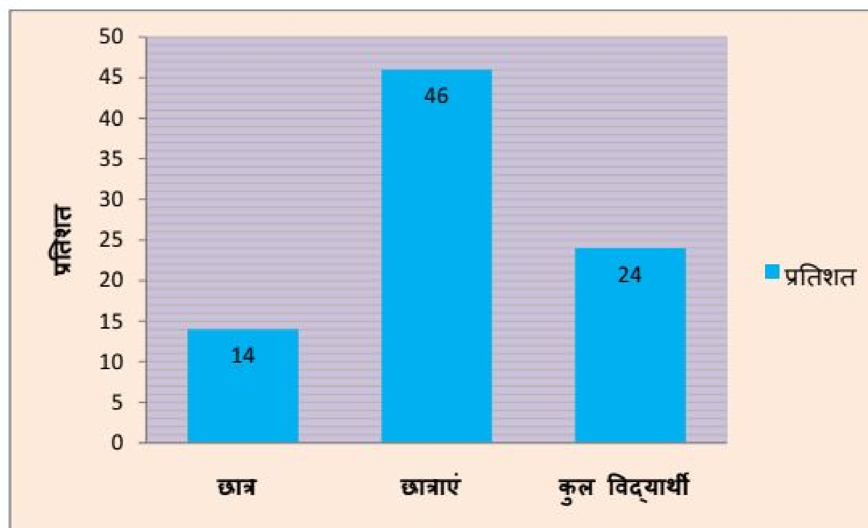
(अ) चौहान शासक (ब) चन्देल शासक (स) सोलंकी शासक (द) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर – (ब) चन्देल शासक

73

तालिका संख्या 5.3
प्रश्न 3 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	24	68
छात्राएं	15	10	66
कुल विद्यार्थी	50	34	68



प्रश्न 3 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.3

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3 एवं चित्र संख्या 5.3 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि 68 प्रतिशत प्रतिशत छात्र मड़फा के निर्माता से परिचित हैं। छात्रों से कुछ कम (66 प्रतिशत) परिचित हैं। सामूहिक रूप से कुल 68 प्रतिशत विद्यार्थी मड़फा के निर्माता से परिचित हैं।

विवेचना- उपरोक्त से तालिका से स्पष्ट है , कि मड़फा का निर्माण चन्देल शासक द्वारा हुआ। इस शासक से लगभग 1/3 विद्यार्थी परिचित नहीं हैं।

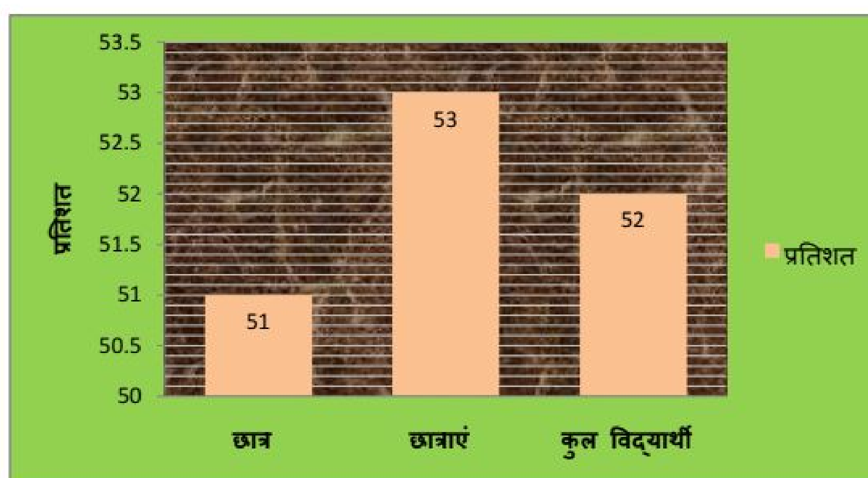
प्रश्न-4. मड़फा किन प्रस्तरों से निर्मित है?

(अ) लाल पत्थर (ब) चूना पत्थर (स) बलुआ पत्थर (द) ग्रेनाइट

सही उत्तर – (स) बलुआ पत्थर

तालिका संख्या 5.4
प्रश्न 4 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	18	51
छात्राएं	15	08	53
कुल विद्यार्थी	50	26	52



प्रश्न 4 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.4

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.4 एवं चित्र संख्या 5.4 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि 51 प्रतिशत एवं 53 प्रतिशत छात्राएं मड़फा के प्रस्तरों से परिचित हैं।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है , कि लगभग आधे विद्यार्थी ही मड़फा के प्रस्तरों से परिचित हैं। छात्राओं का जागरूकता प्रतिशत (53 प्रतिशत) छात्रों की तुलना में 51 प्रतिशत कुछ अधिक है।

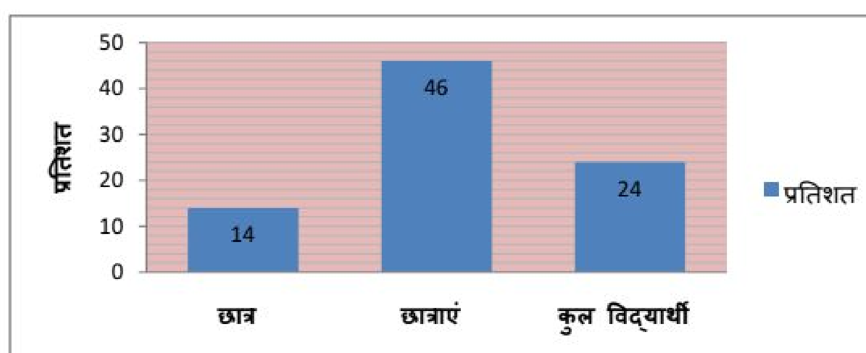
प्रश्न -5. मड़फा में कौन मुख्य रूप से पूजित है-

(अ) विष्णु (ब) शिव (स) राम (द) कृष्ण

सही उत्तर – (ब) शिव

तालिका संख्या 5.5
प्रश्न 5 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	34	97
छात्राएं	15	15	100
कुल विद्यार्थी	50	49	98



प्रश्न 5 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.5

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.5 एवं चित्र संख्या 5.5 को देखने से यह स्पष्ट होता है , 97 प्रतिशत छात्र तथा शत प्रतिशत छात्राएं मड़फा के उपास्य शिव से परिचित हैं।

विवेचना- उपरोक्त तालिका परिणामों से स्पष्ट है , कि लगभग सभी विद्यार्थी मड़फा के उपास्य शिव से परिचित हैं, यह अच्छी बात है।

प्रश्न -6. मड़फा स्थित शिव मूर्ति है-

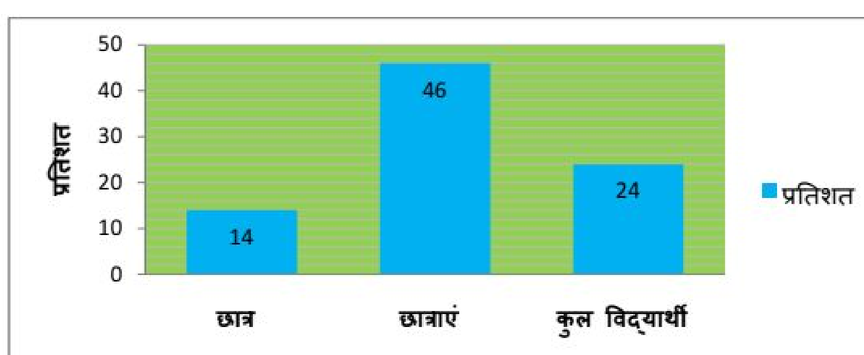
(अ) एक मुखी (ब) तीन मुखी (स) चतुर्मुखी (द) पञ्चमुखी

सही उत्तर – (द) पञ्चमुखी

तालिका संख्या 5.6

प्रश्न 6 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	32	91
छात्राएं	15	15	100
कुल विद्यार्थी	50	47	94



प्रश्न 6 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.6

77

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.6 एवं चित्र संख्या 5.6 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि मड़फा में स्थित शिवमूर्ती से 91 प्रतिशत छात्र तथा छात्राएँ शत प्रतिशत परिचित हैं।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है , कि लगभग अधिकांश विद्यार्थी मड़फा में पञ्चमुखी शिव से छात्र-छात्राओं की अपेक्षा कुछ कम जागरूक हैं।

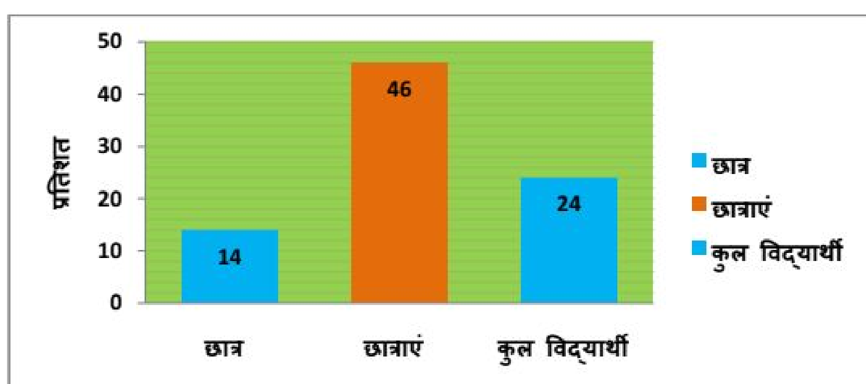
प्रश्न- 7. मड़फा में किस कुंड का जल पेयजल के रूप में प्रयोग किया जाता है-

(अ) बाबू तालाब (ब) पाप मोचन सरोवर (स) स्वर्गारोहण दीघी (द) न्याग्रोदक कुंड

सही उत्तर - (स) स्वर्गारोहण दीघी

तालिका संख्या 5.7
प्रश्न 7 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	14	40
छात्राएं	15	06	40
कुल विद्यार्थी	50	21	40



प्रश्न 7 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.7

78

विश्लेषण- उपरोक्त तालिका संख्या 5.7 एवं चित्र संख्या 5.7 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि मड़फा में उपलब्ध पेयजल स्थल से 40 प्रतिशत छात्र-छात्राएं परिचित हैं।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है , कि मड़फा में पेयजल के रूप में स्वर्गारोहण दीर्घी के प्रयोग से आधे से भी कम विद्यार्थी परिचित हैं। यह स्थिति अत्यंत चिंता जनक है पेयजल किसी भी स्थान की मूलभूत आवश्यकता है। जिसका ज्ञान सभी को होना चाहिय।

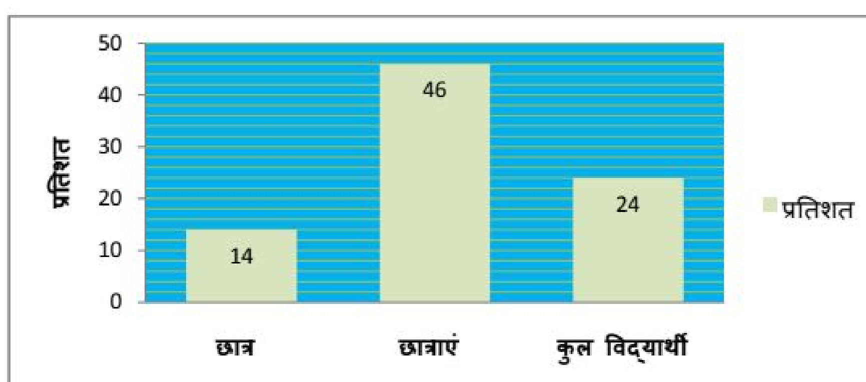
प्रश्न 8 मड़फा के किस जलाशय में स्नान करने से कुष्ठ रोग दूर हो जाता है?

(अ) पाप मोचन सरोवर (ब) बाबू तालाब (स) न्याग्रोदक कुंड
(द) स्वर्गारोहण दीघी

सही उत्तर – (स) न्याग्रोदक कुंड

तालिका संख्या 5.8
प्रश्न 8 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
छात्र	**35**	**14**	**40**
छात्राएं	**15**	**05**	**33**
कुल विद्यार्थी	**50**	**19**	**38**



प्रश्न 8 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.8

79

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.8 एवं चित्र संख्या 5.8को देखने से स्पष्ट होता है ,कि 40 प्रतिशत छात्र एवं 33 प्रतिशत छात्राएं मड़फा के कुष्ठ निवारक जलाशय से परिचित हैं।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि मड़फा में कुष्ठ निवारक जलाशय से आधे से भी कम विद्यार्थी परिचित हैं। यह स्थिति अत्यंत चिंता जनक है। यह 1/3 से भी कम छात्राएं इसके प्रति जागरूक हैं। यह स्थिति आपत्ति जनक है। न्याग्रोदक कुंड मड़फा की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। जिसमें उसमें प्रत्येक श्रद्धालू स्नान करता है। अतः इसके विषय में सभी को परिचित होना चाहिए।

प्रश्न 9 मड़फा मे कितनी सीढ़ियां हैं-

(अ) 300 (ब) 400 (स) 500 (द) 500 से अधिक

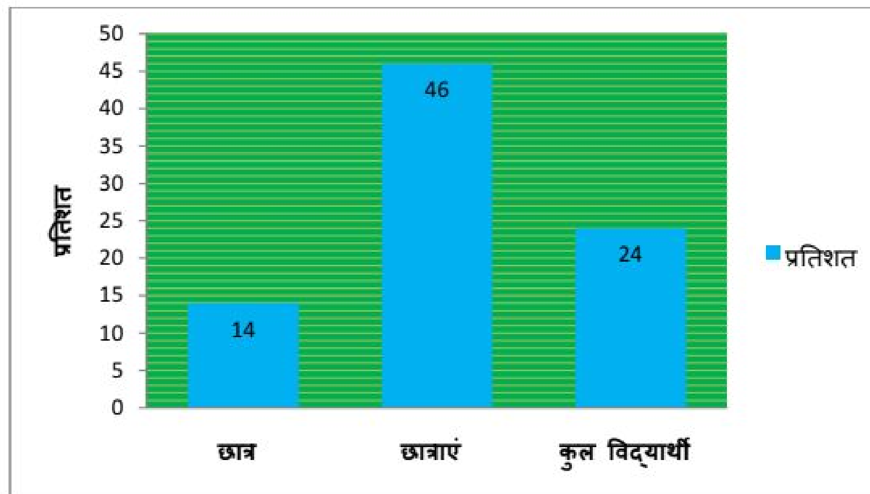
सही उत्तर - (द) 500 से अधिक

तालिका संख्या 5.9

प्रश्न 9 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	**35**	**20**	**57**
छात्राएं	**15**	**12**	**80**
कुल विद्यार्थी	**50**	**32**	**64**

80



प्रश्न 9 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.9

विश्लेषण- उपरोक्त तालिका संख्या 5.9 एवं चित्र संख्या 5.9 को देखने से स्पष्ट होता है, कि मात्र 57 प्रतिशत छात्र मड़फा में सीढ़ियों की संख्या से परिचित हैं , जबकि 80 प्रतिशत छात्राएँ इससे परिचित हैं। औसत रूप में 64 प्रतिशत विद्यार्थी मड़फा में सीढ़ियों की संख्या से परिचित हैं।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि मड़फा में सीढ़ियों की संख्या के प्रति छात्राओं की अपेक्षा कम जानकारी रखते हैं। 1/3 से भी अधिक विद्यार्थी इससे परिचित नहीं हैं , यह अत्यंत चिंता जनक है। मड़फा जाने के लिए सीढ़ी मार्ग ही सबसे सुगम मार्ग है। जिसके विषय में सभी को सही जानकारी होनी चाहिए।

प्रश्न-10 मड़फा क्षेत्र का निकटतम रेलवे स्टेशन है-

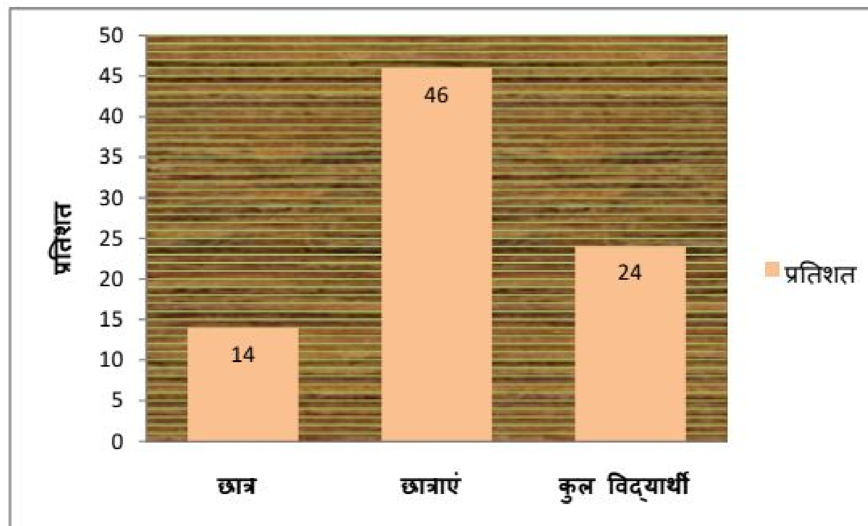
(अ) भरतकूप (ब) बदौसा (स) शिवरामपुर (द) अतर्रा

सही उत्तर - (अ) भरतकूप

तालिका संख्या 5.10

प्रश्न 10 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	22	62
छात्राएं	15	11	73
कुल विद्यार्थी	50	33	66



प्रश्न 10 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.10

विश्लेषण- उपरोक्त तालिका संख्या 5.10 एवं चित्र संख्या 5.10 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि 62 प्रतिशत छात्र एवं 73 प्रतिशत छात्राएं मड़फा के निकटतम रेलवे स्टेशन से परिचित हैं तथा लगभग 2/3 विद्यार्थी इससे परिचित हैं।

विवेचना- उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है, कि मड़फा के निकटतम रेलवे स्टेशन भरतकूप से लगभग छात्रों की अपेक्षा छात्राएं अधिक परिचित हैं। यह अच्छी बात है। 1/3 विद्यार्थी परिचित नहीं हैं। इस विषय में छात्रों की अपेक्षा छात्राएं अधिक जागरूक हैं। रेल यातायात आवागमन का एक प्रमुख साधन है। अतः इसके विषय में सभी को जानकारी होनी चाहिए।

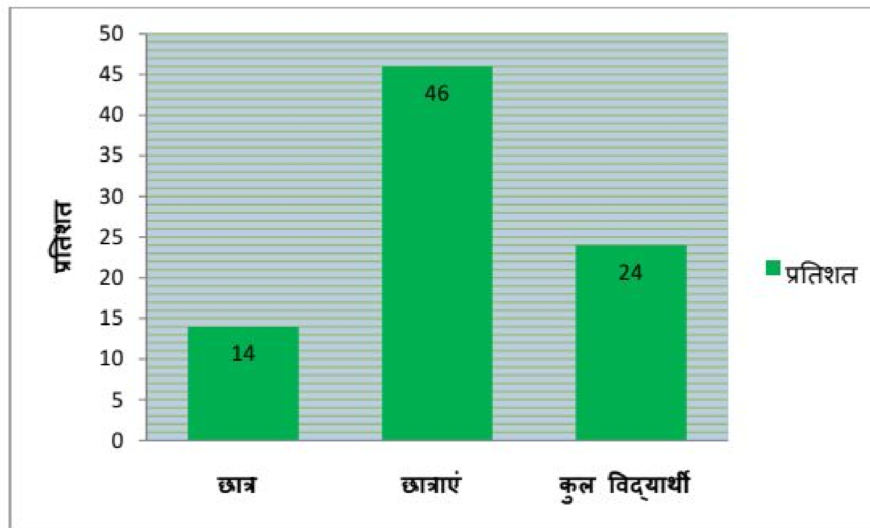
प्रश्न 11 न्याग्रोदक कुंड का पौराणिक कथानक किस अप्सरा से सम्बन्धित है-

(अ) तिलोत्तमा (ब) मेनका (स) मोहिनी (द) वेदवती

सही उत्तर - (द) वेदवती

तालिका संख्या 5.11
प्रश्न 11 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
छात्र	**35**	**02**	**05**
छात्राएं	**15**	**00**	**00**
कुल विद्यार्थी	**50**	**02**	**04**



प्रश्न 11 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.11

विश्लेषण- उपरोक्त तालिका संख्या 5.11 एवं चित्र संख्या 5.11 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि न्याग्रोदक कुंड के पौराणिक कथानक से केवल 5 प्रतिशत छात्र ही परिचित हैं, जबकि कोई छात्रा इससे परिचित नहीं है।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि न्याग्रोदक कुंड के पौराणिक कथानक से नगण्य छात्र तथा शून्य छात्राएं परिचित है। यह स्थिति अत्यंत चिंता जनक है। पौराणिक कथाएं हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है इसके विषय में सभी को जानकारी होनी चाहिए।

प्रश्न -12. महर्षि माडव्य की प्रारम्भिक तपस्थली मानी जाती है-

(अ) रामनामी गुफा   (ब) वर्तमान कुटी   (स) शिव मंदिर

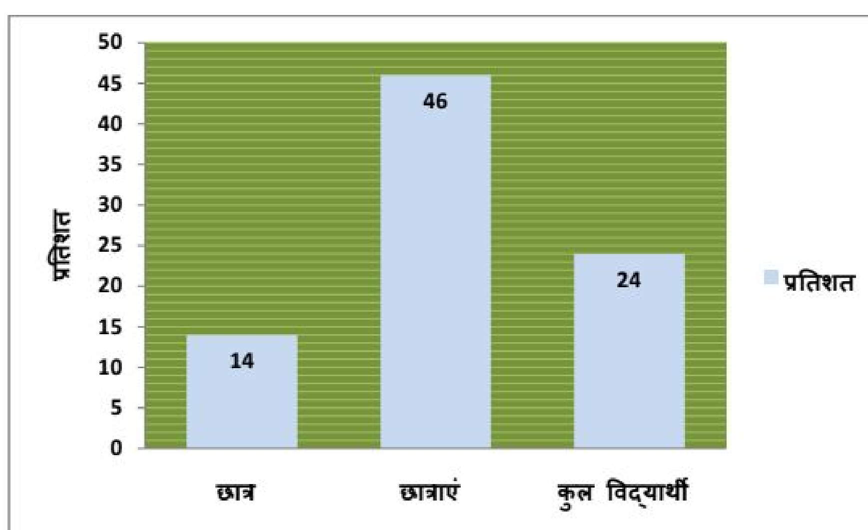
सही उत्तर -   **(अ) रामनामी गुफा**

84

तालिका संख्या 5.12

प्रश्न 12 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	18	51
छात्राएं	15	09	60
कुल विद्यार्थी	50	27	54



प्रश्न 12 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.12

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.12 एवं चित्र संख्या 5.12 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि महर्षि माडव्य प्रारम्भिक तपोस्थली से 51 प्रतिशत छात्र एवं 60 प्रतिशत छात्राएं परिचित हैं , तथा सामूहिक रूप से 54 प्रतिशत विद्यार्थी इससे परिचित हैं।

85

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि महर्षि माडव्य कि तपोस्थली रामनामी गुफा से लगभग आधे विद्यार्थी परिचित हैं। छात्रों कि अपेक्षा छात्राएं इसके प्रति कुछ अधिक जागरूक हैं। रामनामी गुफा कि प्रमुख विशेषताओं में से एक है जिसके विषय में सभी को जानकारी होनी चाहिए।

प्रश्न -13. रामनामी गुफा किस द्वार के समीप स्थित है-

(अ) हाथी दरवाजा (ब) कुरुहूँ द्वार (स) खमरिया द्वार

सही उत्तर - (स) खमरिया द्वार

तालिका संख्या 5.13
प्रश्न-13 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	20	57
छात्राएं	15	07	46
कुल विद्यार्थी	50	27	54



प्रश्न-13 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.13

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.13 एवं चित्र संख्या 5.13 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि रामनामी गुफा किस द्वार के समीप है इस तत्व से 54 प्रतिशत छात्र एवं 26 प्रतिशत छात्राएं ही परिचित हैं। सामूहिक रूप से सम्मिलित विद्यार्थी 46 प्रतिशत सम्मिलित हैं।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर यह ज्ञात होता है ,कि लगभग आधे विद्यार्थी रामनामी गुफा के निकटतम द्वार से परिचित हैं तथा ¼ छात्राएं ही इससे परिचित हैं। यह स्थिति भी चिंता जनक है। मड़फा जैसे एतिहासिक स्थल के सभी द्वारों के सम्यक जानकारी सभी होनी चाहिए।

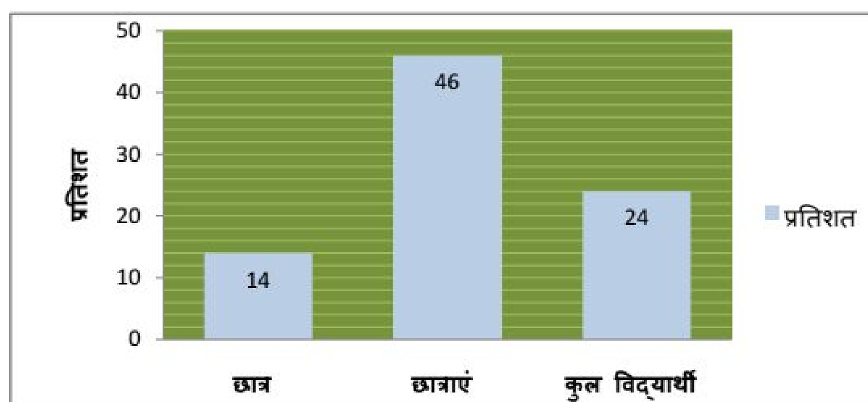
प्रश्न- 14. शिव मंदिर के निकटतम द्वार है-

(अ) हाथी दरवाजा (ब) कुरुहूँ द्वार (स) खमरिया द्वार

सही उत्तर - (अ) हाथी दरवाजा

तालिका संख्या 5.14
प्रश्न 14 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
छात्र	**35**	**24**	**68**
छात्राएं	**15**	**14**	**93**
कुल विद्यार्थी	**50**	**38**	**76**



87

प्रश्न 14 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.14

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.14 एवं चित्र संख्या 5.14 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि शिव मंदिर के निकटतम द्वार से 57 प्रतिशत छात्र एवं 46 प्रतिशत छात्राएं परिचित हैं। सामूहिक रूप से 54 प्रतिशत विद्यार्थी हाथी दरवाजा से परिचित हैं।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका से प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट है , कि शिव मंदिर के निकटतम द्वार हाथी दरवाजा से छात्राओं की अपेक्षा छात्र ज्यादा परिचित हैं। लगभग आधे विद्यार्थी इस सम्बन्ध में जागरूक हैं। यह स्थिति संतोषजनक है। शिव मंदिर तथा हाथी दरवाजा दोनों ही मड़फा के प्रमुख स्थलों में से एक है। जिसके सम्बन्ध में सभी को जानकारी होना चाहिए।

प्रश्न -15. मड़फा क्षेत्र की प्रमुख वनस्पतियां हैं-

(अ) महुआ, दवा (ब) सेज, तेंदू (स) खैर,जामुन

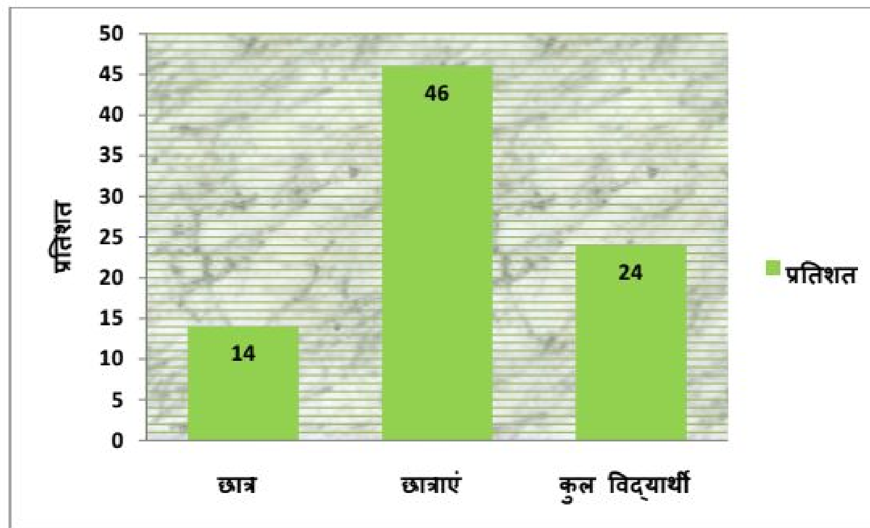
(द) बांस, बबूल (य) करौंदा, ढाक (र) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर - (र) उपर्युक्त

तालिका संख्या 5.15

प्रश्न 15 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	20	57
छात्राएं	15	07	46
कुल विद्यार्थी	50	27	54



प्रश्न 15 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.15

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.15 एवं चित्र संख्या 5.15 से स्पष्ट मड़फा क्षेत्र की प्रमुख वनस्पतियों से 68% छात्र एवं 93% छात्राएं परिचित हैं सामूहिक रूप से कुल 76% विद्यार्थी इन वनस्पतियों से परिचित हैं।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि मड़फा क्षेत्र की प्रमुख वनस्पतियों से छात्रों की अपेक्षा छात्राएं अधिक परिचित हैं। लगभग एक तिहाई विद्यार्थी मड़फा क्षेत्र की वनस्पतियों से परिचित नहीं है। यह स्थित भी संतोषजनक नहीं कही जा सकती । पेड़-पौधों से मानव का अस्तित्व है , अतः वनस्पतियों से भली-भांति परिचित होने की आवश्यकता है।

प्रश्न-16 मड़फा क्षेत्र में पाए जाने वाले प्रमुख वन्य जीव हैं-

(अ) नीलगाय (ब) जंगली सूअर (स) चीतल

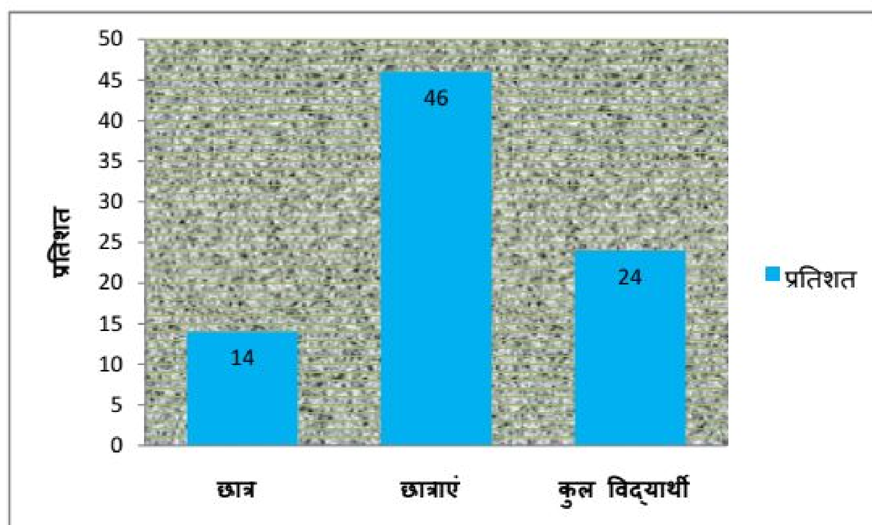
(द) लोमड़ी (य) लंगूर (र) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर - (र) उपर्युक्त

89

तालिका संख्या 5.16
प्रश्न 16 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
छात्र	**35**	**32**	**91**
छात्राएं	**15**	**12**	**80**
कुल विद्यार्थी	**50**	**44**	**88**



प्रश्न 16 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.16

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.16 एवं चित्र संख्या 5.16 से स्पष्ट है कि मड़फा क्षेत्र में पाए जाने वाले वन्यजीवों से 91% छात्र एवं 80% छात्राएं परिचित हैं तथा सामूहिक रूप से 88% विद्यार्थी इनसे परिचित हैं।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि मनपा क्षेत्र में पाए जाने वाले वन्यजीवों से अधिकांश विद्यार्थी परिचित हैं।

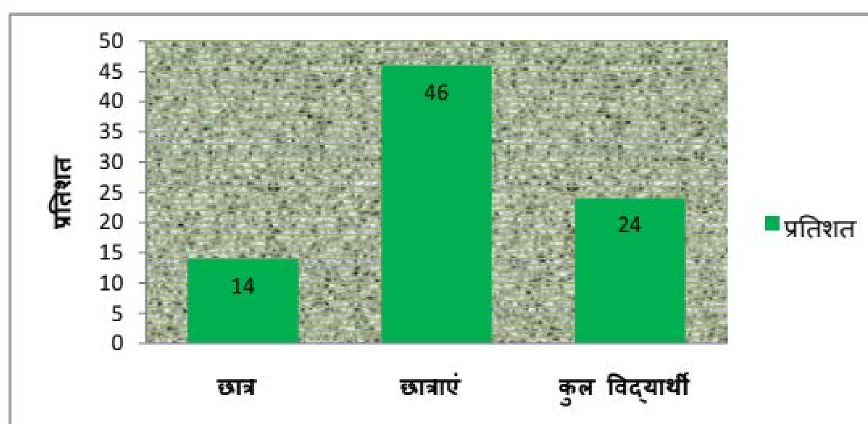
प्रश्न- 17. मड़फा का दुर्गपाल था?

(अ) बाघदेव (ब) बुद्धराज देव

सही उत्तर - (अ) बाघदेव

तालिका संख्या 5.17
प्रश्न 17 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	19	54
छात्राएं	15	06	40
कुल विद्यार्थी	50	25	50



प्रश्न 17 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.17

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.17 एवं चित्र संख्या 5.17 से स्पष्ट है कि मड़फा के दुर्गपाल से 54% छात्र एवं 40% छात्राएं परिचित हैं तथा सामूहिक रूप से 50% विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि मड़फा के दुर्गपाल से आधे ही विद्यार्थी परिचित हैं , जबकि छात्राओं का प्रतिशत आधे से भी कम है । मड़फा दुर्ग पाल था यह महत्वपूर्ण तथ्य है , ऐतिहासिक तत्वों की जानकारी सभी को होनी चाहिए।

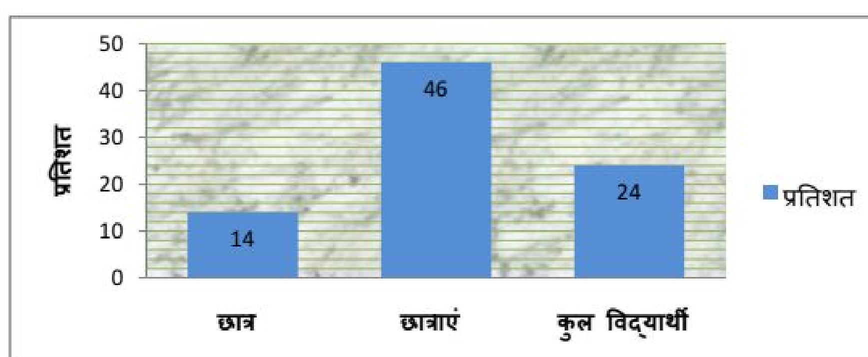
प्रश्न -18. मड़फा किस रेखा पर स्थित है-

(अ) कर्क रेखा (ब) मकर रेखा (स) विषुवत रेखा (द) भूमध्य रेखा

सही उत्तर - (अ) कर्क रेखा

तालिका संख्या 5.18
प्रश्न 18 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	15	42
छात्राएं	15	08	53
कुल विद्यार्थी	50	23	46



प्रश्न 18 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.18

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.18 एवं चित्र संख्या 5.18 से स्पष्ट है कि मड़फा कर्क रेखा पर स्थित के विषय में 42% छात्र एवं 53% छात्राएं ही जानकारी रखती हैं। सामूहिक रूप से 46% विद्यार्थी ही परिचित हैं।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि मड़फा कर्क रेखा स्थित के विषय में लगभग आधे विद्यार्थी परिचित हैं। छात्राओं की अपेक्षा छात्र इस विषय में कम जागरूक हैं । मड़फा की कर्क रेखा की स्थित एक महत्वपूर्ण भौगोलिक तथ्य है। इसके विषय में सभी विद्यार्थियों को जानकारी होनी चाहिए।

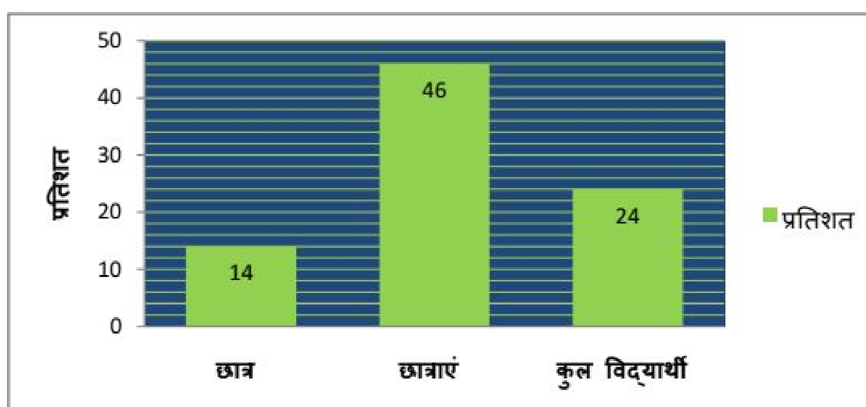
प्रश्न -19. मड़फा किस ऋषि की तपोस्थली थी-

(अ) महर्षि माण्डव्य (ब) महर्षि पतंजलि (स) महर्षि जाबालि (द) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर - (द) उपर्युक्त सभी

तालिका संख्या 5.19
प्रश्न 19 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	15	42
छात्राएं	15	03	20
कुल विद्यार्थी	50	18	36



93

प्रश्न 19 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.19

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.19 एवं चित्र संख्या 5.19 से स्पष्ट है कि मड़फा किस ऋषि की तपोस्थली थी। इससे 42% छात्राएं 20 % छात्राएं ही परिचित है । सामूहिक रूप से 36% विद्यार्थी इस तथ्य से परिचित हैं।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि मड़फा के ऋषि मुनियों के विषय में एक तिहाई से कुछ अधिक विद्यार्थी ही परिचित हैं। छात्रों की तुलना में छात्राओं का जागरूकता प्रतिशत अत्यंत कम है। यह अत्यंत चिंताजनक है। मड़फा की ऋषि मुनियों की जानकारी हमारी संस्कृ ति का अभिन्न अंग है, जिन के विषय में सभी विद्यार्थियों को जानकारी होनी चाहिए।

प्रश्न- 20. वर्तमान समय में मड़फा दुर्ग में सुरक्षित एक मात्र द्वार है-

(अ) कुरुहूँ द्वार (ब) खमरिया द्वार (स) हांथी दरवाजा

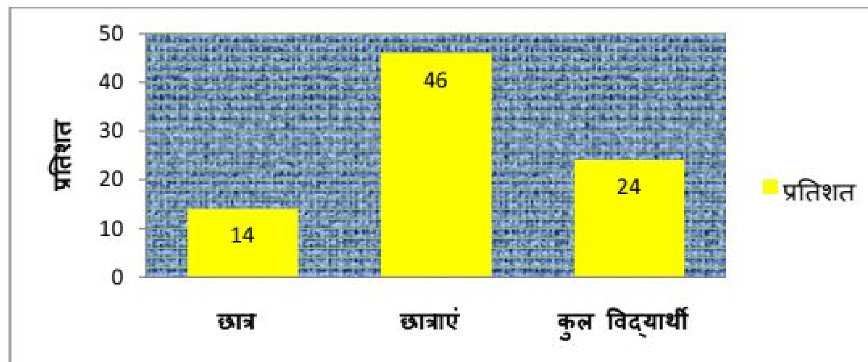
सही उत्तर - (स) हांथी दरवाजा

तालिका संख्या 5.20

प्रश्न 20 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	24	68
छात्राएं	15	13	86
कुल विद्यार्थी	50	37	74

94



प्रश्न 20 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.20

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.20 एवं चित्र संख्या 5.20 से स्पष्ट है कि वर्तमान समय में मड़फा दुर्ग में सुरक्षित हाथी दरवाजा से 8% छात्र एवं 20% छात्राएं ही परिचित हैं। सामूहिक रूप से 48 % विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि वर्तमान समय में मड़फा दुर्ग में सुरक्षित एकमात्र द्वार हाथी दरवाजा से आधे से कम विद्यार्थी परिचित हैं तथा छात्र छात्राएं मात्र 20% परिचित हैं । यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। सभी को मड़फा दुर्ग के वर्तमान में सुरक्षित स्थलों की जानकारी होनी चाहिए।

प्रश्न -21. जैन मन्दिर किससे निर्मित है?

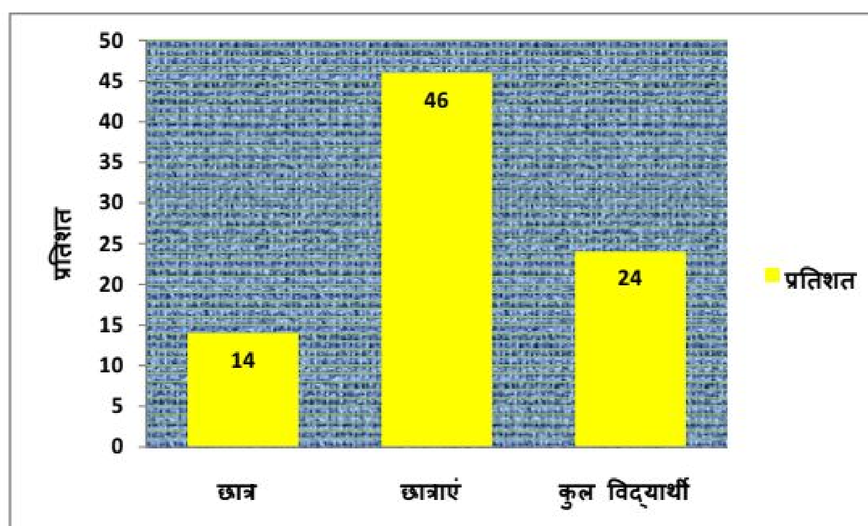
(अ) लाल बलुआ पत्थर (ब) ग्रेनाइट (स) संगमरमर

सही उत्तर - (अ) लाल बलुआ पत्थर

तालिका संख्या 5.21

प्रश्न 21 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	21	60
छात्राएं	15	03	20
कुल विद्यार्थी	50	24	48



प्रश्न 21 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.21

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.21 एवं चित्र संख्या 5.21 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि कालिंजर दुर्ग में स्थित सीता से जी की भांति दूसरे स्थान की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया है। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर कुल विद्यार्थी प्रतिशत शून्य पाया गया।

96

विवेचना- उपर्युक्त तालिका परिणामों से स्पष्ट है , कि एक भी विद्यार्थी कालिंजर दुर्ग में स्थित सीता से जी की भांति दूसरे स्थान की जानकारी नहीं रखते हैं क्योंकि वहां तक पहुंचने का रास्ता अत्यंत दुर्गम है। इसलिए कभी ही कोई वहां जाने का साहस करता है।

प्रश्न- 22. कुटी के प्रांगण में स्थित है-

(अ) बटुक भैरव (ब) भैरवी (स) उपर्युक्त दोनों

सही उत्तर - (स) उपर्युक्त दोनों

तालिका संख्या 5.22

प्रश्न 22 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
छात्र	**35**	**14**	**40**
छात्राएं	**15**	**02**	**13**
कुल विद्यार्थी	**50**	**16**	**32**



प्रश्न 22 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.22

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.22 एवं चित्र संख्या 5.22 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि कालिंजर दुर्ग में स्थित योगाभ्यास हेतु प्राचीन गुफा की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को दर्शाया गया है। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर कुल विद्यार्थी प्रतिशत शून्य पाया गया।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है, कि कोई भी विद्यार्थी सिद्ध की गुफा से परिचित नहीं है। क्योंकि पथ दुर्गम होने के कारण वहां कभी-कभी ही कोई जाने का साहस करता है। यह स्थान लोगों के संज्ञान में ही नहीं है।

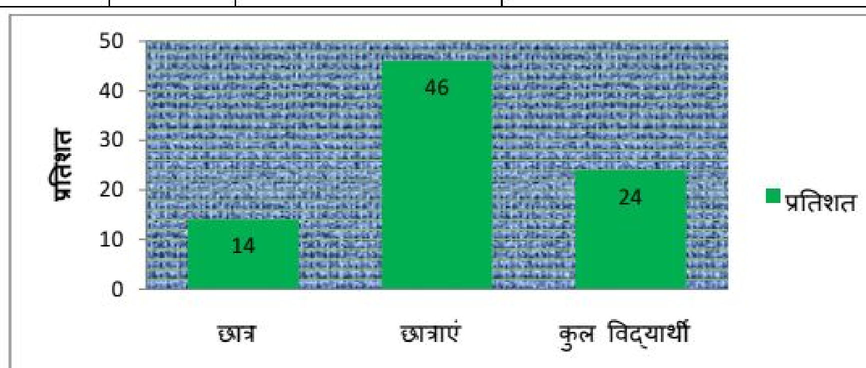
प्रश्न -23. मड़फा जाने हेतु पक्का सीढ़ी मार्ग किसके निकट है-

(अ) कुरुहूँ (ब) खमरिया (स) मानपुर

सही उत्तर - मानपुर

तालिका संख्या 5.23
प्रश्न 23 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
छात्र	**35**	**09**	**25**
छात्राएं	**15**	**02**	**13**
कुल विद्यार्थी	**50**	**11**	**22**



98

प्रश्न 23 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.23

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या5.23 एवं चित्र संख्या 5.23 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर में स्थित नीलकंठ मंदिर के ऊपर स्थित जल के प्राकृतिक स्रोत की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया है। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर कुल विद्यार्थी प्रतिशत शून्य पाया गया।

विवेचना- उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है , कि नीलकंठ मंदिर के ऊपर स्थित जल के प्राकृतिक स्रोत के बारे में कोई भी विद्यार्थी जानकारी नहीं रखते हैं। क्योंकि कोई भी विद्यार्थी नीलकंठ मंदिर के ऊपर स्थित जल के प्राकृतिक स्रोत के नाम से परिचित ही नहीं है , अतः उनके द्वारा कोई भी उत्तर नहीं दिया गया।

प्रश्न- 24. मड़फा के पश्चिम में कौन सी नदी प्रवाहित है-

(अ) बाघैन (ब) बाणगंगा (स) मन्दाकिनी (द) केन

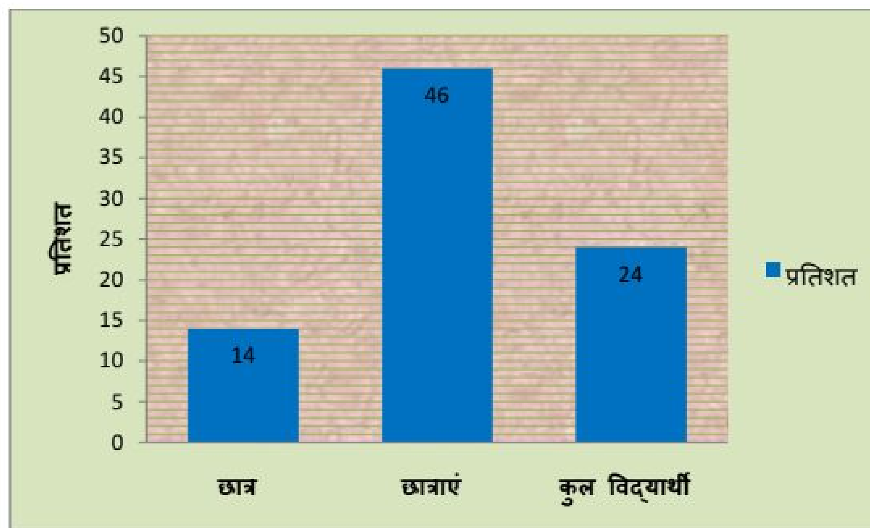
सही उत्तर - **(ब) बाणगंगा**

तालिका संख्या 5.24

प्रश्न 24 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	11	31
छात्राएं	15	03	20
कुल विद्यार्थी	50	14	28

99



प्रश्न 24 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.24

विश्लेषण- उपयोग तालिका संख्या 5.24 एवं चित्र संख्या 524 थी स्पष्ट है कि मडफा के पश्चिम में बहने वाली नदी बाढ़ गंगा से 31% छात्र एवं 20% छात्राएं ही परिचित हैं छात्रों की अपेक्षा छात्राएं कुछ कम परिचित हैं, जबकि कुल विद्यार्थी 28% ही परिचित हैं।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से से स्पष्ट है, कि मडफा के पश्चिम में प्रभावित बाणगंगा नदी से एक चौथाई विद्यार्थी कुछ अधिक परिचित हैं यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है नदियों का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है इनसे सभी को परिचित होना चाहिए

नीचे मड़फा से सम्बन्धित विभिन्न स्थलों के चित्र दिये गए हैं, इन्हें पहचानिए और चित्रों के सम्मुख दिये गए स्थान पर उनके नाम इंगित कीजिए।

प्रश्न- 25. चित्र को पहचानिए-

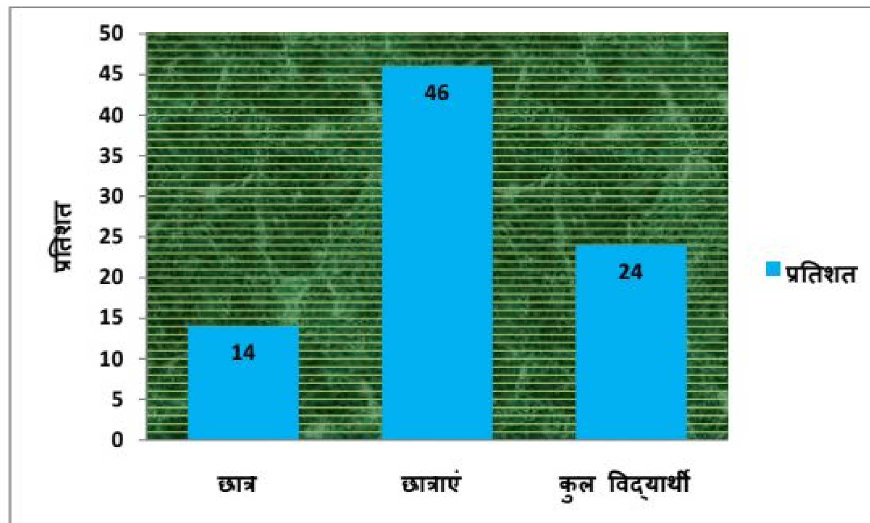


सही उत्तर – हाथी दरवाजा

तालिका संख्या 5.25

प्रश्न 25 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	21	60
छात्राएं	15	12	80
कुल विद्यार्थी	50	33	66



प्रश्न 25 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.25

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.25 एवं चित्र संख्या 5.25 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि हांथी दरवाजा से 60% छात्र 80% छात्राएं परिचित है कुल विद्यार्थी 66 प्रतिशत ही जागरूक हैं।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि हाथी दरवाजा से लगभग 2 तिहाई विद्यार्थी परिचिति है छात्रों की अपेक्षा छात्राएं अधिक परिचित हैं।

प्रश्न- 26. चित्र को पहचानिए-

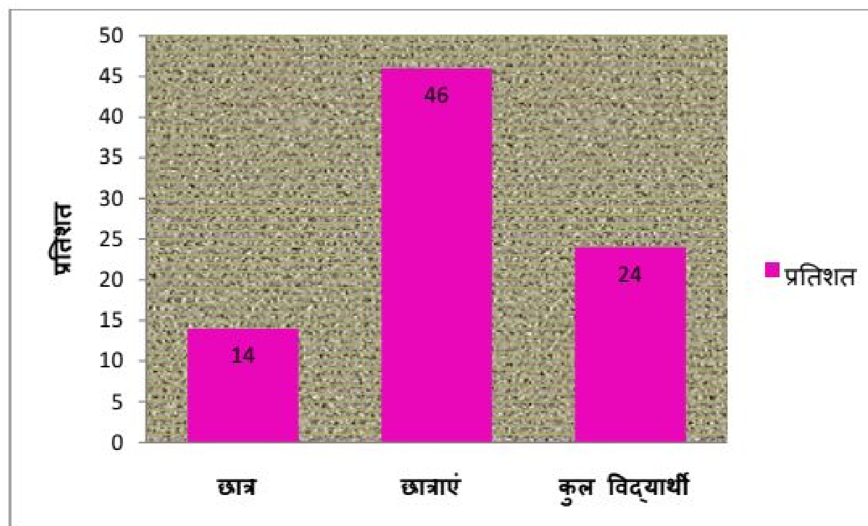


सही उत्तर – शिव मंदिर

तालिका संख्या 5.26

प्रश्न 26 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
छात्र	**35**	**17**	**48**
छात्राएं	**15**	**05**	**33**
कुल विद्यार्थी	**50**	**22**	**44**



प्रश्न 26 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.26

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.25 एवं चित्र संख्या 5.25 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि शिव मंदिर से 48% छात्र एवं 33% छात्राएं ही परिचित हैं। समूहिक रूप से 44 % विद्यार्थी ही परिचित हैं।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि शिव मन्दिर से आधे से भी कम विद्यार्थी परिचित है तथा एक तिहाई से कम छात्राएं इससे परिचित हैं। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है, क्योंकि शिव मन्दिर मड्फ़ा का सबसे प्रमुख दर्शनीय स्थल है जिससे सभी को परिचित होना चाहिए।

प्रश्न- 27. चित्र को पहचानिए-



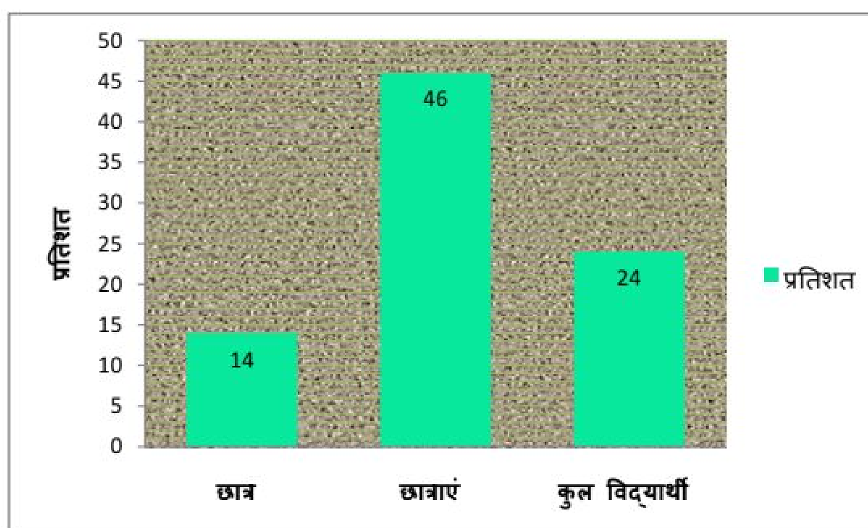
सही उत्तर – शिवमूर्ति

103

तालिका संख्या 5.27

प्रश्न 27 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	21	60
छात्राएं	15	12	80
कुल विद्यार्थी	50	33	66



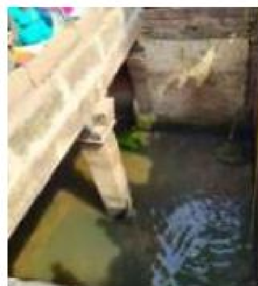
प्रश्न 27 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.27

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.27 एवं चित्र संख्या 5.27 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि मड़फा स्थित पञ्च मुखी शिवमूर्ति से 60% छात्र एवं 80% छात्राएं परिचित हैं जबकि कुल विद्यार्थी 66% ही परिचित हैं।

104

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि मड़फा की प्रसिद्ध पञ्चमुखी शिव मूर्ति से लगभग दो-तिहाई विद्यार्थी परिचित हैं छात्रों की अपेक्षा छात्राएं अधिक परिचित है यह एक अच्छी बात है।

प्रश्न- 28. चित्र को पहचानिए-

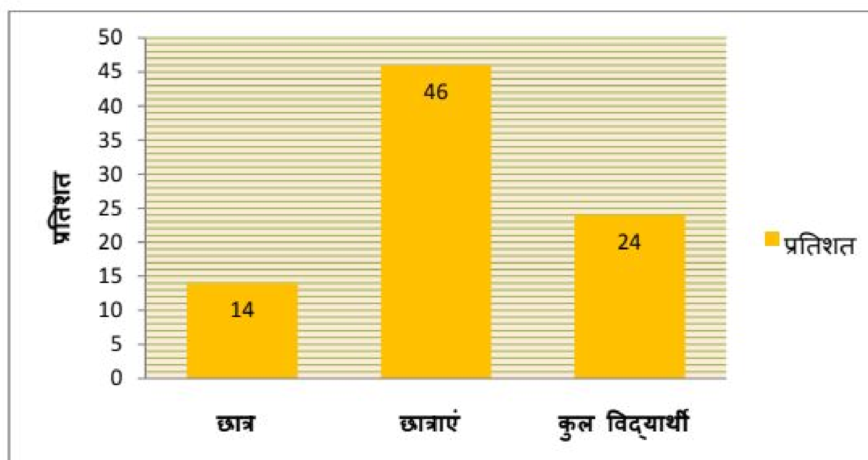


सही उत्तर – स्वर्गारोहण दीघी

तालिका संख्या 5.28

प्रश्न 28 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	13	37
छात्राएं	15	05	33
कुल विद्यार्थी	50	18	36



प्रश्न 26 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.28

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.28 एवं चित्र संख्या 5.28 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि स्वर्गारोहण दीघी से 37% छात्र एवं 33% छात्राएं परिचित है जबकि कुल विद्यार्थी 36% परिचित है।

विवेचना- उपरोक्त उपयोग तालिका से स्पष्ट है की स्वर्गारोहण दीघी से छात्रों की अपेक्षा छात्राएं कम जागरूक है यह चिन्ता का विषय है कि स्वर्गारोहण दीघी से लगभग एक तिहाई विद्यार्थी परिचित है यह अत्यंत चिंताजनक है क्योंकि यह मडफ़ा के प्रमुख स्थानों में से एक है, इससे सभी को परिचित होना चाहिए।

प्रश्न- 29. चित्र को पहचानिए-

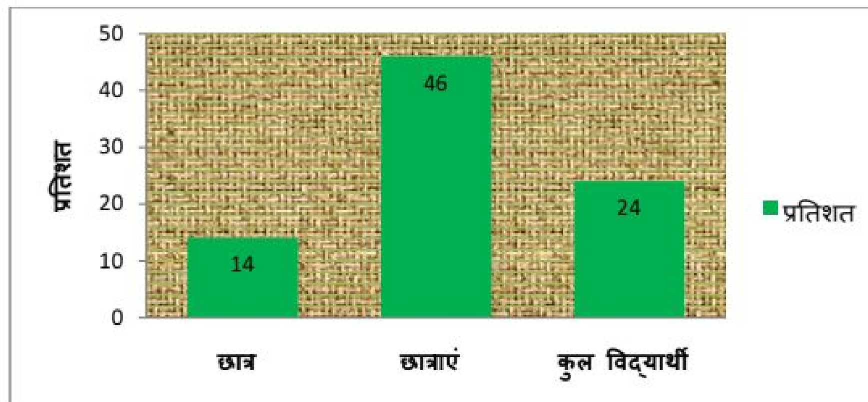


सही उत्तर – कुटी

तालिका संख्या 5.29

प्रश्न 29 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
छात्र	**35**	**14**	**35**
छात्राएं	**15**	**07**	**46**
कुल विद्यार्थी	**50**	**21**	**42**



प्रश्न 29 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.29

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.29 एवं चित्र संख्या 5.29 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि 34% छात्र एवं 46% छात्राएं मडफ़ा स्थित कुटी से परिचित हैं सामूहिक रूप से 42% विद्यार्थी ही परिचित हैं।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है मडफ़ा स्थित कुटी से आधे से भी कम विद्यार्थी परिचित हैं यह भी अत्यंत चिंताजनक है क्योंकि यह मडफ़ा के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में से एक है इससे सभी को परिचित होना चाहिए।

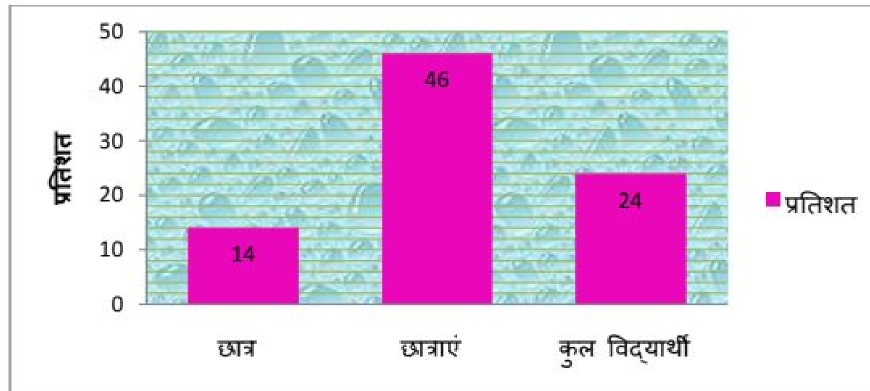
प्रश्न- 30. चित्र को पहचानिए-



सही उत्तर – जैन मूर्ति

तालिका संख्या 5.30
प्रश्न 30 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	04	11
छात्राएं	15	04	26
कुल विद्यार्थी	50	08	16



प्रश्न 30 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.30

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.30 एवं चित्र संख्या 5.30 से स्पष्ट है कि जैन मूर्ति से 37% छात्र एवं 53% छात्राएं परिचित हैं छात्रों की अपेक्षा छात्राएं ज्यादा जागरूक हैं सामूहिक रूप से 42% विद्यार्थी परिचित है।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि जैन मूर्ति से आधे से भी कम विद्यार्थी परिचित हैं यह भी अत्यंत चिंताजनक है क्योंकि यह मडफ़ा के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में से एक है इससे सभी को परिचित होना चाहिए।

प्रश्न- 31. चित्र को पहचानिए-

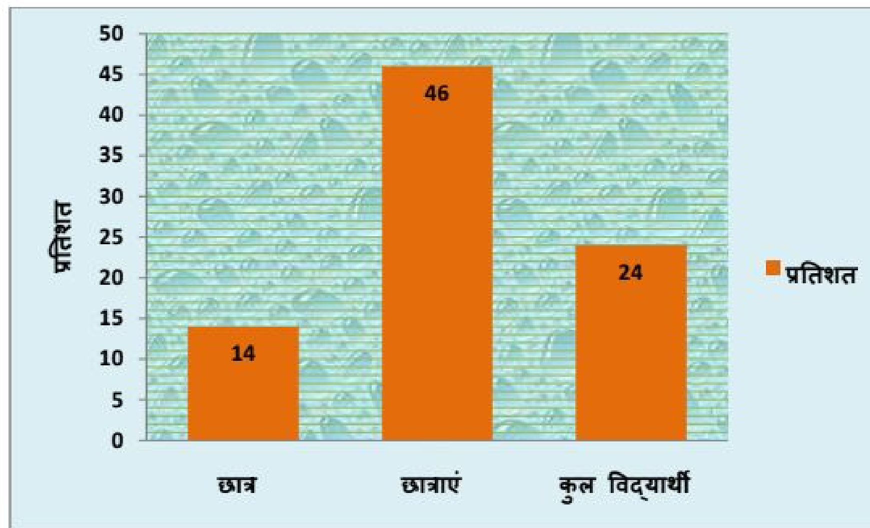


सही उत्तर – चन्देल कालीन बड़ा मंदिर

तालिका संख्या 5.31

प्रश्न 31 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	13	37
छात्राएं	15	08	53
कुल विद्यार्थी	50	21	42



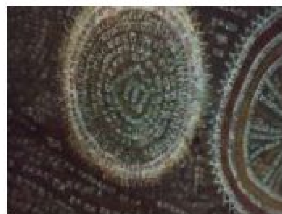
प्रश्न 31 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.31

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.31 एवं चित्र संख्या 5.31 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि चंदेलकालीन बड़ा मन्दिर से 11 प्रतिशत छात्र एवं 26 प्रतिशत छात्राएं ही परिचित हैं जबकि 16 प्रतिशत कुल विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है , कि चंदेलकालीन मन्दिर से बहुत कम विद्यार्थी परिचित यह भी अत्यंत चिन्ताजनक है क्योंकि यह भी मडफ़ा के प्रमुख दर्शनीय स्थलों मे से एक है। इससे सभी को परिचित होना चाहिए।

प्रश्न- 32. चित्र को पहचानिए-



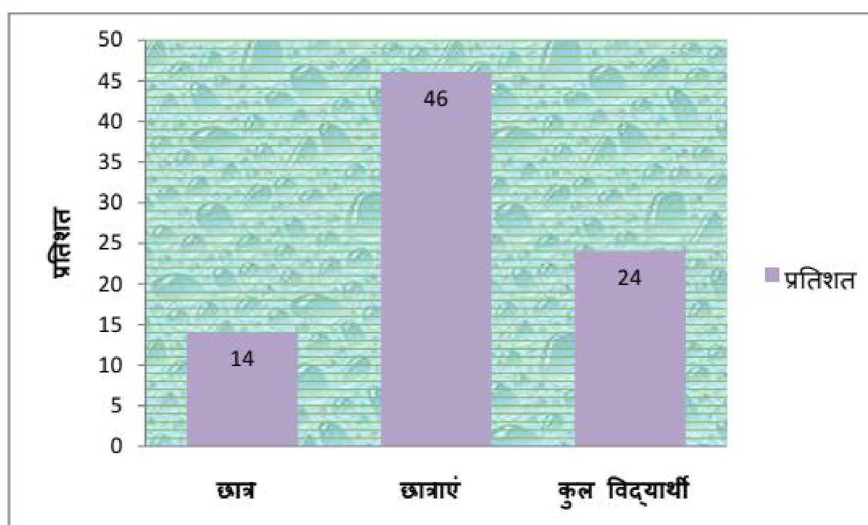
सही उत्तर – रामनामी गुफा

109

तालिका संख्या 5.32

प्रश्न 32 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	03	08
छात्राएं	15	01	06
कुल विद्यार्थी	50	04	08



प्रश्न 32 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.32

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.32 एवं चित्र संख्या 5.32 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि रामनामी गुफा से 8% छात्र 6 % छात्राएं ही परिचित हैं , रामनामी गुफा मडफ़ा के प्रमुख स्थलों मे से एक है समूहिक रूप से इससे 48% विद्यार्थी ही परिचित है।

110

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि रामनामी गुफा से अधिकांश विद्यार्थी परिचित नही है इससे सभी को परिचित होना चाहिए।

प्रश्न- 33. चित्र को पहचानिए-

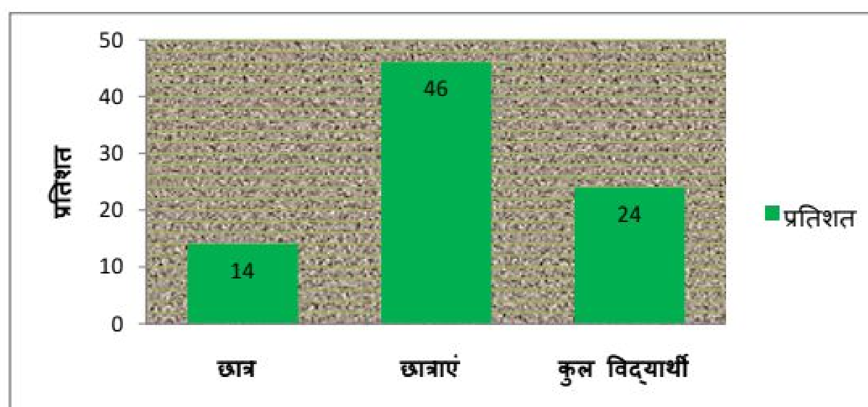


सही उत्तर – चन्देल कालीन छोटा मंदिर

तालिका संख्या 5.33

प्रश्न 33 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	04	11
छात्राएं	15	03	20
कुल विद्यार्थी	50	07	14



प्रश्न 33 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.33

111

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.33 एवं चित्र संख्या 5.33 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि चंदेलकालीन छोटा मन्दिर से 11% छात्र एवं 20% छात्राएं ही परिचित हैं जबकि समूहिक रूप से 14% विद्यार्थी ही परिचित है।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है , कि चंदेलकालीन छोटा मन्दिर से अधिकांश विद्यार्थी परिचित नही है यह अत्यंत चिन्ताजनक है क्योंकि यह भी मडफ़ा के प्रमुख दर्शनीय स्थलों मे से एक है, इससे सभी को परिचित होना चाहिए।

प्रश्न- 34. चित्र को पहचानिए-

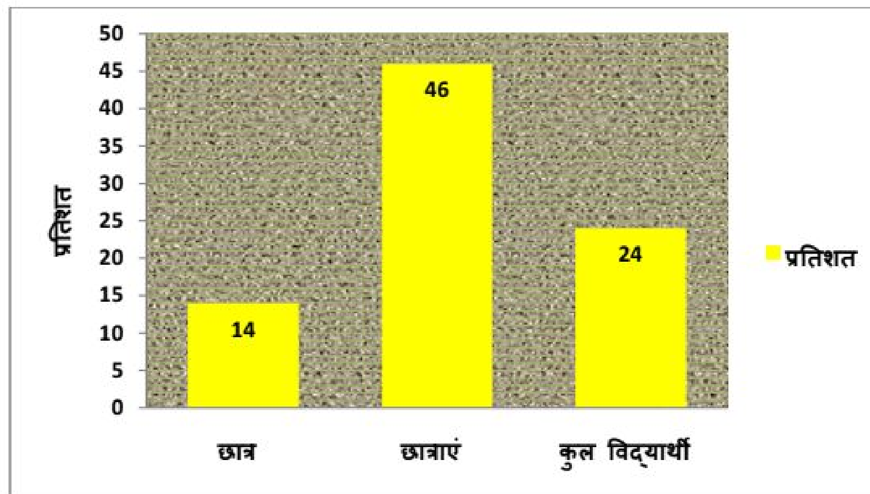


सही उत्तर – चरण पादुकाएँ

तालिका संख्या 5.34

प्रश्न 34 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सही उत्तर	
	N	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
छात्र	**35**	**10**	**28**
छात्राएं	**15**	**04**	**26**
कुल विद्यार्थी	**50**	**14**	**28**



प्रश्न 34 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.34

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.34 एवं चित्र संख्या 5.34 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि चरण पादुकाओं से 28% छात्र एवं 26% प्रतिशत छात्राएं परिचित हैं जबकि समूहिक रूप से 28% विद्यार्थी ही परिचित है।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि चरणचिह्न से एक चौथाई से भी कुछ अधिक विद्यार्थी परिचित हैं जागरूकता का यह प्रतिशत असंतोषजनक है यह न्यायग्रोदक कुण्ड के समीप स्थित है जिससे सभी को परिचित होना चाहिए।

प्रश्न- 35. चित्र को पहचानिए-

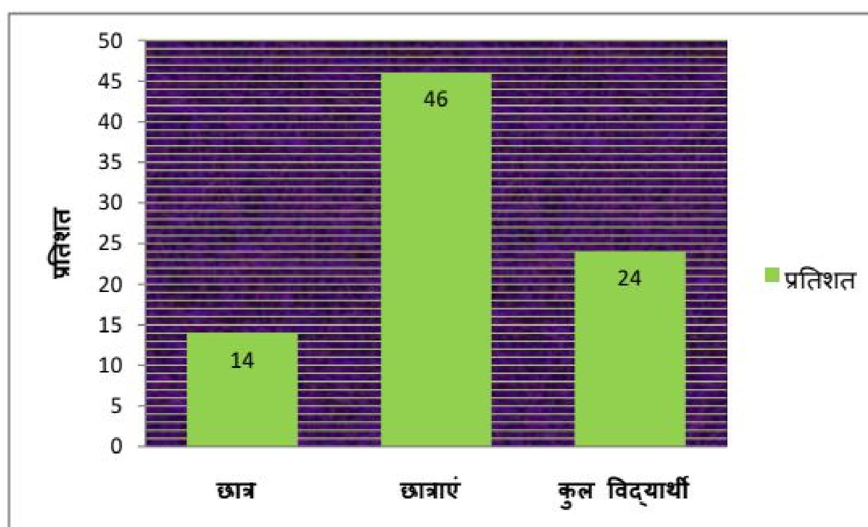


सही उत्तर – न्याग्रोदक कुंड

तालिका संख्या 5.35

प्रश्न 35 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	35	05	14
छात्राएं	15	07	46
कुल विद्यार्थी	50	12	24



प्रश्न 35 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.35

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.35 एवं चित्र संख्या 5.35 को देखने से यह स्पष्ट होता है , कि न्यायग्रोदक कुण्ड से 14% छात्र एवं 46% छात्राएं ही परिचित हैं समूहिक रूप से 24% विद्यार्थी ही परिचित हैं।

114

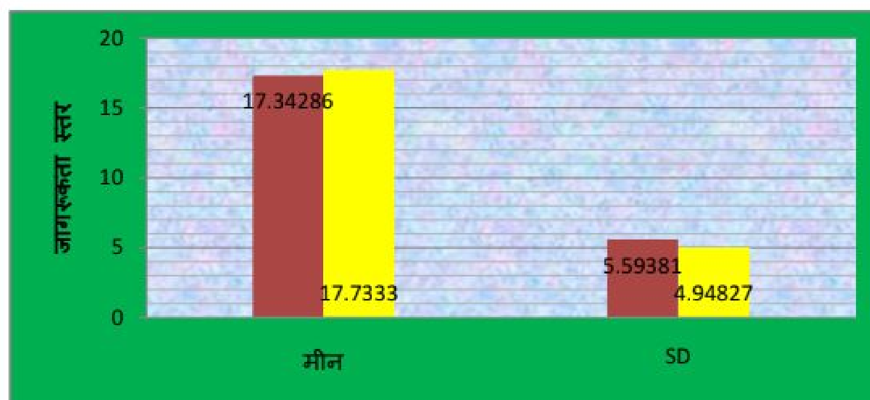
विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है , कि न्यायग्रोदक कुण्ड से कुल विद्यार्थी 24% ही जागरूक हैं एक चौथाई से कम विद्यार्थी परिचित हैं इस संबंध मे छात्राएं छात्रों की अपेक्षा अधिक जागरूक हैं न्यायग्रोदक कुण्ड मडफ़ा का एकमात्र कुण्ड है जिसमे स्नान करने से चर्म रोग दूर होते हैं अतः इसके विषय मे सभी को जानकारी होना चाहिए।

5.2 छात्र-छात्राओं में मडफ़ा दुर्ग के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.2

छात्र-छात्राओं में मडफ़ा दुर्ग के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	योग (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	स्वतंत्रांश (df)	t गणना मान	सार्थरता स्तर	t तालिका मान
छात्र	35	17.34286	5.59381	48	0.2456	0.05	2.0218
छात्राएं	15	17.7333	4.94927				



चित्र संख्या 5.2 : छात्र-छात्राओं में मडफ़ा दुर्ग के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

विश्लेषण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान 17.34286 एवं छात्राओं का मध्यमान 17.7333 है तथा परिगणित t गणना मान 0.2456 है , जो कि स्वतंत्रांश 48 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर t तालिका मान 2.0218 से बहुत कम है।

अतः शून्य परिकल्पना "छात्र-छात्राओं की मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता मे कोई सार्थक अन्तर नही है।" 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना परीक्षण में छात्र-छात्राओं की मडफ़ा दुर्ग के प्रति जागरूकता का स्तर समान पाया गया है।

विवेचना – उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं की मडफ़ा दुर्ग के प्रति जागरूकता का स्तर समान है।

अध्याय षष्ठ
निष्कर्ष एवं सुझाव

अनुसंधान की वैज्ञानिक प्रक्रिया में तथ्यों को सापेक्षित कर, निष्कर्षों का सामान्यीकरण करके वर्ग विशेष के लिए अनुमोदित करना, अनुसंधान का अन्तिम चरण माना गया है| अनुसंधान क्षेत्र में निष्कर्षों व सामान्य प्रदत्त को एक सार्वभौमिक आकार प्रदान करता है इसके द्वारा अनुसंधानकर्ता को निष्कर्षों के महत्व को मूल्यांकित कर सकने की योग्यता प्राप्त होती है|

किसी भी शोध कार्य द्वारा प्राप्त परिणामों के लिए यह पूर्णत: विश्वसनीयता के साथ नहीं कहा जा सकता है कि यह शोध पूर्णत: शोध क्षेत्र से सम्बन्धित सम्पूर्ण पहलुओं को पूर्ण करता है, क्योंकि प्रा य: कुछ पहलू अछूते रह जाते हैं | इसलिए परिणाम के साथ-साथ यह भी नितान्त आवश्यक है कि शोध अध्ययन के सन्दर्भ में उन सीमाओं का उल्लेख किया जा ये, जिनसे शोध अध्ययन सीमित हो जाता है | अतः प्रस्तुत अध्याय को उपर्युक्त वर्णित बिंदुओं के आधार पर निम्न सोपानों में प्रस्तुत किया गया है-

- ❖शोध अध्यन के निष्कर्ष
- ❖शोध अध्यन की शैक्षिक उपादेयता
- ❖अध्ययन के सुझाव
- ❖भावी शोध अध्यन हेतु सुझाव

6.1 शोध अध्यन के निष्कर्ष

सम्पूर्ण शोध कार्य के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात मुख्य कार्य उद्देश्यों की पूर्ति करना है | प्रस्तुत शोध कार्य में 4 उद्देश्य लिए गए थे | जिनका विवरण प्रथम अध्याय में प्रस्तुत किया जा चुका है| लघु शोध प्रबन्ध के उद्देश्यों के सन्दर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये गए-

उद्देश्य 1: छात्र-छात्राओं मे मडफ़ा दुर्ग के प्रति जागरूकता के अध्ययन हेतु मडफ़ा दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना।

शोधकर्ता द्वारा मडफ़ा दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया जिसमे मडफ़ा दुर्ग के प्रति जागरूकता के 35 प्रश्नो का सम्मिलित किया गया तथा मिश्रित प्रश्नावली का चयन किया गया जिसमे कथनो को 24 बहुविकल्पात्मक , 11 चित्रात्मक लघुउत्तरीय प्रश्न सम्मिलित है। जो कि छात्र-छात्राओं/विद्यार्थियों की जागरूकता अध्ययन हेतु उपर्युक्त हैं।

उद्देश्य 2: मडफ़ा दुर्ग के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना

मडफ़ा दुर्ग के विद्यार्थियों मे दुर्ग की जागरूकता के प्रति सार्थक अन्तर नही पाया गया।

उद्देश्य 3: मडफ़ा दुर्ग के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

मडफ़ा दुर्ग के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता मे कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

उद्देश्य 4: मडफ़ा दुर्ग की जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना|

प्रस्तुत उद्देश्य के संदर्भ में पाया गया कि मडफ़ा दुर्ग के प्रति पूर्णत: जागरूकता नही है, अतः जागरूकता के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं-

- मडफ़ा तक जाने वाले मार्ग मे थोड़ी-थोड़ी दूर संकेतक लगाए जाये।
- यहाँ पर चढ़ते समय रेलिंग लगी होनी चाहिए।
- पानी की व्यवस्था होनी चाहिए।
- सुरक्षा की उचित व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे यात्रियों को भय न हो।
- मडफ़ा दुर्ग तक आवागमन के साधनों का विकास तीव्र गति से किया जाए|
- शंकर जी की मूर्ति के पास भंडारा करने के लिए छाया के लिए टीन-सेट लगवाना चाहिए।

6.2 शोध अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा जगत, विद्यार्थियों, शिक्षकों, इतिहासकारों, पुरातत्विदों एवं समाज में लोगों के दृष्टिकोणों को विकसित करने में सहायक होंगे| ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के समाधान में विभन्न नये आयाम प्रस्तावित किये जा सकते है|

प्रस्तुत अध्ययन में मडफ़ा दुर्ग की दर्शनीय ऐतिहासिक विरासत हाथी दरवाजा शिव मंदिर, कुटी , रामनामी गुफा , चंदेलकालीन मन्दिर , छोटा चंदेलकालीन मन्दिर , चरण पादुकाएँ , न्यायग्रोदक कुण्ड , स्वर्गारोहण दीघी इत्यादि पर विस्तृत चर्चा की गई है | प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध होगा|

6.3 अध्ययन के सुझाव

- ❖ "महिमावान मड़फा क्षेत्र" नमक पुस्तक को , पुस्तक के अंश , सम्पूर्ण पुस्तक को चित्रकूट जनपद के विभिन्न स्तरों पर सम्मिलित किया जाना चाहिए अथवा पूरक पाठ्य पुस्तक के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- ❖ मड़फा दुर्ग के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए, संगोष्ठियाँ, कार्यशालाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन किया जाना चाहिए|
- ❖ ऐतिहासिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए लिए शासन-प्रशासन स्तर पर कार्य-योजना तैयार की जानी चाहिए
- ❖ मड़फा दुर्ग /प्रांत की ऐतिहासिक विरासत/शौर्य/वीरता/ पराक्रम/संस्कृति/पुरुषार्थ का इतिहास उस क्षेत्र विशेष में विस्तृत रूप से अतरिक्त सहायक पाठ्यपुस्तक के रूप में शामिल किए जाने की आवश्यकता है|
- ❖ शैक्षिक भ्रमण हेतु ऐतिहासिक स्थल तक पहुँचने के मार्ग संकेत नगर के मुख्य चौराहों में लगाया जाये|
- ❖ ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण एवं आस-पास की स्वच्छता के लिए लोगों को प्रेरित किया जाना चाहिए |
- ❖ यहां पर जुड़ी हुई लोक संगीत परंपराओं को विकसित करके समय-समय पर उसका प्रस्तुतीकरण हो|
- ❖ परंपरागत कुटीर उद्योगों को विकसित किया जाए|

6.4 भावी शोध अध्ययन हेतु सुझाव

शोध अध्ययन के क्षेत्र में सत्य की खोज निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है | कोई भी शोध कार्य पूर्ण व अन्तिम नहीं होता वरन् यह एक ऐसी श्रृंखला है जिसमें एक कड़ी के संपन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी की शुरुआत होती है| कोई भी अध्ययन एक निश्चित परिधि तक सीमित रहता है, किन्तु उसी क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों द्वारा किये जा सकते हैं| ताकि समस्या का अधिक स्पष्ट निरूपण हो सके| शोध अध्ययन के अधिक स्थिर एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए एक ही शोध समस्या पर कई शोध अध्ययन किया जाना आवश्यक होता है | शोध समस्या के लिए अधिक समय व धन की आवश्यकता होती है जो कि केवल एक शोधार्थी के लिए संभव नहीं होता जिसके कारण वह एक विषय के विभिन्न पहलुओं पर कार्य नहीं कर पाता| एक शोध समस्या पर किए गया शोध कार्य दूसरे शोधार्थी द्वारा किये गये शोध अध्ययन के लिए मार्गदर्शन और सुझाव का कार्य करता है | इस शोध कार्य के आधार पर भावी अध्ययन के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं –

- ❖ वर्तमान शोध अध्ययन मात्र उत्तर प्रदेश के केवल बाँदा व चित्रकूट जनपद तक सीमित है| भावी अनुसंधान में अन्य जनपदों को सम्मलित किया जा सकता है|
- ❖ प्रस्तुत अध्ययन चित्रकूट के मड़फा दुर्ग तक सीमित रहा भावी अध्ययन चित्रकूट जिले के अन्य दुर्गों पर किया जा सकता है।
- ❖ प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों की जागरूकता तक सीमित रहा| भावी अध्ययन उच्च माध्यमिक, स्नातक तथा परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता पर किया जा सकता है|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- शुक्ल, हरि: ओ३म तत्सत ब्रह्म (2018)। **महिमावान मड़फा क्षेत्र**। प्रयागराज : साधना सदन।
- चौरसिया, पूजा (2019)। **माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन। लघु शोध प्रबन्ध शिक्षाशात्र, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)।**
- देवी, प्रतिभा (2019)। **माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का अध्ययन। । लघु शोध प्रबन्ध शिक्षाशात्र, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)।**
- **गणेश बाग**

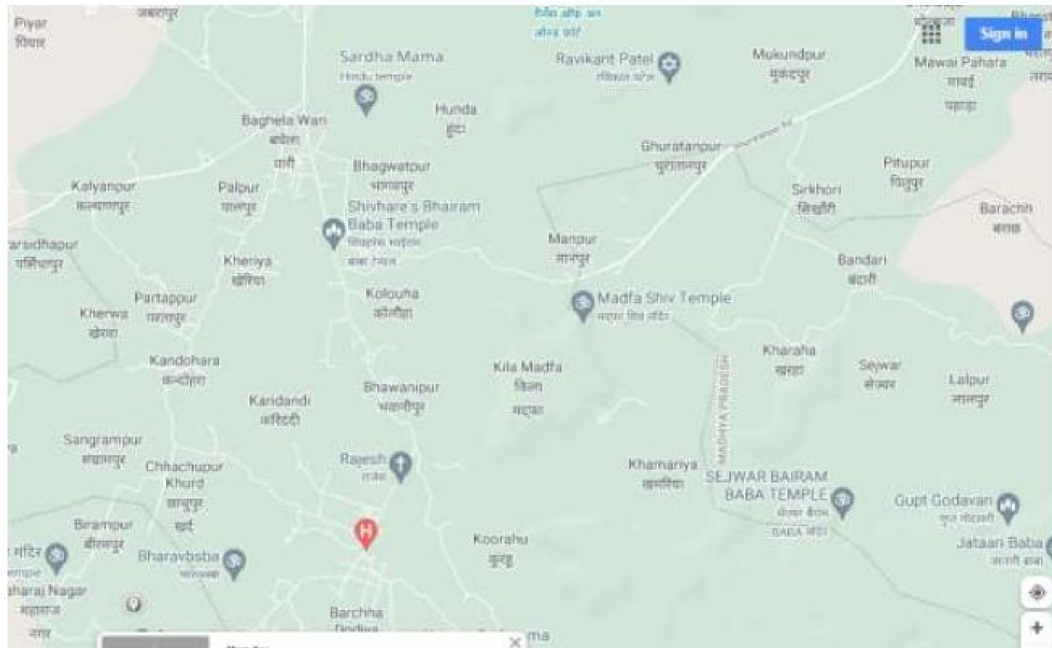
  https://khabarlahariya.org/%E0%A4%9B%E0%A5%8B%E0%A4%9F%E0%A4%BE%E0%A4%96%E0%A4%9C%E0%A5%81%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A5%8B-%E0%A4%B9%E0%A5%88-%E0%A4%97%E0%A4%A3%E0%A5%87%E0%A4%B6-%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%97/
- https://www-tourmyindia-com.translate.goog/states/uttarpradesh/ganesh-bagh-chitrakoot.html?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=ajax,nv,sc,elem
- **सोमनाथ मन्दिर चर -** https://www.jagran.com/uttar-pradesh/chitrakoot-14745498.html

  ऑनलाइन कैलकूलेटर
- **www.**qaaantititiveskills.com
- www.usablestats.com

परिशिष्ट

(I) चित्रकूट जिले का मानचित्र





(II) मड़फा दुर्ग के प्रति प्रश्नावली (प्रथम प्रारूप)

मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली

मार्गदर्शक	शोधार्थी
डॉ० राजीव अग्रवाल	दीपक कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर	एम0एड0 छात्र

निम्न सूचनाएँ भरिए-

नाम..

लिंग...

कक्षा...

विद्यालय/महाविद्यालय...

दिनांक..

निर्देश

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। इसमें मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न/कथन हैं। दिये गये विकल्पों में से किसी एक पर सही (√) का चिह्न लगाएँ। सभी प्रश्न करना अनिवार्य है। आपके के द्वारा दी गई जानकारी केवल शोधकार्य में प्रयुक्त की जाएगी, अत: आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

नोट- (केवल वही छात्र/छात्राएँ दी गयी प्रश्नावली को भरें, जिसने मड़फा दुर्ग का भ्रमण किया हो।)

प्रश्नावली

1. मड़फा किला किस जिले में स्थित है?

(अ) चित्रकूट (ब) बाँदा (स) पन्ना (द) सतना

2. मड़फा दुर्ग तक पहुँचने के कितने मार्ग हैं?

अ) एक (ब) दो (स) तीन ` (द) चार

3. मड़फा के निर्माण का श्रेय किस शासक को है?

(अ) चौहान शासक (ब) चन्देल शासक (स) सोलंकी शासक (द) उपर्युक्त सभी

4. मड़फा किन प्रस्तरों से निर्मित है?

(अ) लाल पत्थर (ब) चूना पत्थर (स) बलुआ पत्थर (द) ग्रेनाइट

5. मड़फा में कौन मुख्य रूप से पूजित है-

(अ) विष्णु (ब) शिव (स) राम (द) कृष्ण

6. मड़फा स्थित शिव मूर्ति है-

(अ) एक मुखी (ब) तीन मुखी (स) चतुर्मुखी (द) पञ्चमुखी

7. मड़फा में किस कुंड का जल पेयजल के रूप में प्रयोग किया जाता है-

(अ) बाबू तालाब (ब) पाप मोचन सरोवर (स) स्वर्गारोहण दीघी (द) न्याग्रोदक कुंड

8. मड़फा के किस जलाशय में स्नान करने से कुष्ठ रोग दूर हो जाता है?

(अ) पाप मोचन सरोवर (ब) बाबू तालाब (स) न्याग्रोदक कुंड (द) स्वर्गारोहण दीघी

9. मड़फा मे कितनी सीढ़ियां हैं-

(अ) 300 (ब) 400 (स) 500 (द) 500 से अधिक

10. मड़फा क्षेत्र का निकटतम रेलवे स्टेशन है-

(अ) भरतकूप (ब) बदौसा (स) शिवरामपुर (द) अतर्रा

11. न्याग्रोदक कुंड का पौराणिक कथानक किस अप्सरा से सम्बन्धित है-

(अ) तिलोत्तमा (ब) मेनका (स) मोहिनी (द) वेदवती

12. महर्षि माडव्य की प्रारम्भिक तपस्थली मानी जाती है-

(अ) रामनामी गुफा ☐ (ब) वर्तमान कुटी ☐ (स) शिव मंदिर ☐

13. रामनामी गुफा किस द्वार के समीप स्थित है-

(अ) हाथी दरवाजा ☐ (ब) कुरुहूँ द्वार ☐ (स) खमरिया द्वार ☐

14. शिव मंदिर के निकटतम द्वार है-

(अ) हाथी दरवाजा ☐ (ब) कुरुहूँ द्वार ☐ (स) खमरिया द्वार ☐

15. मड़फा क्षेत्र की प्रमुख वनस्पतियां हैं-

(अ) महुआ, दवा ☐ (ब) सेज, तेंदू ☐ (स) खैर,जामुन ☐

(द) बांस, बबूल ☐ (य) करौंदा, ढाक ☐ (र) उपर्युक्त सभी ☐

16. मड़फा क्षेत्र में पाए जाने वाले प्रमुख वन्य जीव हैं-

(अ) नीलगाय ☐ (ब) जंगली सूअर ☐ (स) चीतल ☐

(द) लोमड़ी ☐ (य) लंगूर ☐ (र) उपर्युक्त सभी ☐

17.मड़फा का दुर्गपाल था?

(अ) बाघदेव ☐ (ब) बुद्धराज देव ☐

18. मड़फा किस रेखा पर स्थित है-

(अ) कर्क रेखा ☐ (ब) मकर रेखा ☐ (स) विषुवत रेखा ☐ (द) भूमध्य रेखा ☐

19. मड़फा किस ऋषि की तपोस्थली थी-

(अ) महर्षि माण्डव्य ☐ (ब) महर्षि पतंजलि ☐ (स) महर्षि जाबालि ☐ (द) उपर्युक्त सभी ☐

20. वर्तमान समय में मड़फा दुर्ग में सुरक्षित एक मात्र द्वार है-

(अ) कुरुहूँ द्वार ☐ (ब) खमरिया द्वार ☐ (स) हांथी दरवाजा ☐

21. जैन मन्दिर किससे निर्मित है?

(अ) लाल बलुआ पत्थर ☐ (ब) ग्रेनाइट ☐ (स) संगमरमर ☐

22. कुटी के प्रांगण में स्थित है-

(अ) बटुक भैरव ☐ (ब) भैरवी ☐ (स) उपर्युक्त दोनों ☐

23. मड़फा जाने हेतु पक्का सीढ़ी मार्ग किसके निकट है-

(अ) कुरुहूँ ☐ (ब) खमरिया ☐ (स)मानपुर ☐

24. मड़फा के पश्चिम में कौन सी नदी प्रवाहित है-

(अ) बाघैन ☐ (ब) बाणगंगा ☐ (स) मन्दाकिनी ☐ (द) केन ☐

25. मड़फा की ऊचाई है-

(अ) 500 फीट ☐ (ब) 600 फीट ☐ (स) 316 फीट ☐ (द) 800 फीट ☐

26. महाभारत में कितने प्रकार के दुर्ग हैं-

(अ) 2 ☐ (ब) 4 ☐ (स) 6 ☐ (द) 8 ☐

27. नीचे मड़फा से सम्बन्धित विभिन्न स्थलों के चित्र दिये गए हैं, इन्हें पहचानिए और चित्रों के सम्मुख दिये गए स्थान पर उनके नाम इंगित कीजिए।



☐

(i)



☐

(ii)

127



(iii)



(iv)



(v)



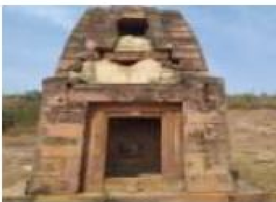
(vi)



(vii)



(viii



(ix)



(X)



(xi)

(III) मड़फा दुर्ग के प्रति प्रश्नावली (अन्तिम प्रारूप)

मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली

मार्गदर्शक **शोधार्थी**

डॉ० राजीव अग्रवाल **दीपक कुमार**

एसोसिएट प्रोफेसर **एम0एड0 छात्र**

निम्न सूचनाएँ भरिए-

नाम...

लिंग...

कक्षा...

विद्यालय/महाविद्यालय...

दिनांक..

निर्देश

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। इसमें मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न/कथन हैं। दिये गये विकल्पों में से किसी एक पर सही (√) का चिह्न लगाएँ। सभी प्रश्न करना अनिवार्य है। आपके के द्वारा दी गई जानकारी केवल शोधकार्य में प्रयुक्त की जाएगी, अत: आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

नोट- (केवल वही छात्र/छात्राएँ दी गयी प्रश्नावली को भरें, जिसने मड़फा दुर्ग का भ्रमण किया हो।)

प्रश्नावली

1. मड़फा किला किस जिले में स्थित है?

(अ) चित्रकूट (ब) बाँदा (स) पन्ना (द) सतना

2. मड़फा दुर्ग तक पहुँचने के कितने मार्ग हैं?

अ) एक (ब) दो (स) तीन (द) चार

3. मड़फा के निर्माण का श्रेय किस शासक को है?

(अ) चौहान शासक (ब) चन्देल शासक (स) सोलंकी शासक (द) उपर्युक्त सभी

4. मड़फा किन प्रस्तरों से निर्मित है?

(अ) लाल पत्थर (ब) चूना पत्थर (स) बलुआ पत्थर (द) ग्रेनाइट

5. मड़फा में कौन मुख्य रूप से पूजित है-

(अ) विष्णु (ब) शिव (स) राम (द) कृष्ण

6. मड़फा स्थित शिव मूर्ति है-

(अ) एक मुखी (ब) तीन मुखी (स) चतुर्मुखी (द) पञ्चमुखी

7. मड़फा में किस कुंड का जल पेयजल के रूप में प्रयोग किया जाता है-

(अ) बाबू तालाब (ब) पाप मोचन सरोवर (स) स्वर्गारोहण दीघी (द) न्याग्रोदक कुंड

8. मड़फा के किस जलाशय में स्नान करने से कुष्ठ रोग दूर हो जाता है?

(अ) पाप मोचन सरोवर (ब) बाबू तालाब (स) न्याग्रोदक कुंड (द) स्वर्गारोहण दीघी

9. मड़फा मे कितनी सीढ़ियां हैं-

(अ) 300 (ब) 400 (स) 500 (द) 500 से अधिक

10. मड़फा क्षेत्र का निकटतम रेलवे स्टेशन है-

(अ) भरतकूप (ब) बदौसा (स) शिवरामपुर (द) अतर्रा

11. न्याग्रोदक कुंड का पौराणिक कथानक किस अप्सरा से सम्बन्धित है-

(अ) तिलोत्तमा (ब) मेनका (स) मोहिनी (द) वेदवती

12. महर्षि माडव्य की प्रारम्भिक तपस्थली मानी जाती है-

(अ) रामनामी गुफा ☐ (ब) वर्तमान कुटी ☐ (स) शिव मंदिर ☐

13. रामनामी गुफा किस द्वार के समीप स्थित है-

(अ) हाथी दरवाजा ☐ (ब) कुरुहूँ द्वार ☐ (स) खमरिया द्वार ☐

14. शिव मंदिर के निकटतम द्वार है-

(अ) हाथी दरवाजा ☐ (ब) कुरुहूँ द्वार ☐ (स) खमरिया द्वार ☐

15. मड़फा क्षेत्र की प्रमुख वनस्पतियां हैं-

(अ) महुआ, दवा ☐ (ब) सेज, तेंदू ☐ (स) खैर,जामुन ☐

(द) बांस, बबूल ☐ (य) करौंदा, ढाक ☐ (र) उपर्युक्त सभी ☐

16. मड़फा क्षेत्र में पाए जाने वाले प्रमुख वन्य जीव हैं-

(अ) नीलगाय ☐ (ब) जंगली सूअर ☐ (स) चीतल ☐

(द) लोमड़ी ☐ (य) लंगूर ☐ (र) उपर्युक्त सभी ☐

17.मड़फा का दुर्गपाल था?

(अ) बाघदेव ☐ (ब) बुद्धराज देव ☐

18. मड़फा किस रेखा पर स्थित है-

(अ) कर्क रेखा ☐ (ब) मकर रेखा ☐ (स) विषुवत रेखा ☐ (द) भूमध्य रेखा ☐

19. मड़फा किस ऋषि की तपोस्थली थी-

(अ) महर्षि माण्डव्य ☐ (ब) महर्षि पतंजलि ☐ (स) महर्षि जाबालि ☐ (द) उपर्युक्त सभी ☐

20. वर्तमान समय में मड़फा दुर्ग में सुरक्षित एक मात्र द्वार है-

(अ) कुरुहूँ द्वार ☐ (ब) खमरिया द्वार ☐ (स) हांथी दरवाजा ☐

21. जैन मन्दिर किससे निर्मित है?

(अ) लाल बलुआ पत्थर ☐ (ब) ग्रेनाइट ☐ (स) संगमरमर ☐

22. कुटी के प्रांगण में स्थित है-

(अ) बटुक भैरव ☐ (ब) भैरवी ☐ (स) उपर्युक्त दोनों ☐

23. मड़फा जाने हेतु पक्का सीढ़ी मार्ग किसके निकट है-

(अ) कुरुहूँ ☐ (ब) खमरिया ☐ (स)मानपुर ☐

24. मड़फा के पश्चिम में कौन सी नदी प्रवाहित है-

(अ) बाघैन ☐ (ब) बाणगंगा ☐ (स) मन्दाकिनी ☐ (द) केन ☐

25. नीचे मड़फा से सम्बन्धित विभिन्न स्थलों के चित्र दिये गए हैं, इन्हें पहचानिए और चित्रों के सम्मुख दिये गए स्थान पर उनके नाम इंगित कीजिए।



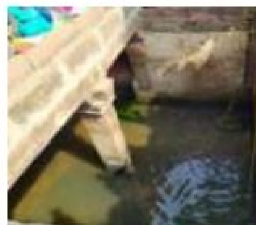
(i)



(ii)



(iii)



(iv)



(v)



(vi)



(vii)





(viii



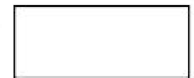


(ix)





(X)





(xi)



(V) उत्तर कुंजी

मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली सम्बन्धी उत्तर कुंजी

प्रश्न	उत्तर
1. मड़फा किला किस जिले में स्थित है?	**चित्रकूट**
2. मड़फा दुर्ग तक पहुंचने के कितने मार्ग हैं?	**तीन**
3. मड़फा के निर्माण का श्रेय किस शासक को है?	**चन्देल शासक**
4. मड़फा किन प्रस्तरों से निर्मित है?	**बलुआ पत्थर**
5. मड़फा में कौन मुख्य रूप से पूजित है-	**शिव**
6. मड़फा स्थित शिव मूर्ति है-	**पञ्चमुखी**
7. मड़फा में किस कुंड का जल पेयजल के रूप में प्रयोग किया जाता है-	**स्वर्गारोहण दीघी**
8. मड़फा के किस जलाशय में स्नान करने से कुष्ठ रोग दूर हो जाता है?	**न्याग्रोदक कुंड**
9. मड़फा मे कितनी सीढ़ियां हैं-	**500 से अधिक**
10. मड़फा क्षेत्र का निकटतम रेलवे स्टेशन है-	**भरतकूप**
11. न्याग्रोदक कुंड का पौराणिक कथानक किस अप्सरा से सम्बन्धित है-	**वेदवती**
12. महर्षि माडव्य की प्रारम्भिक तपस्थली मानी जाती है-	**रामनामी गुफा**
13. रामनामी गुफा किस द्वार के समीप स्थित है-	**खमरिया द्वार**
14. शिव मंदिर के निकटतम द्वार है-	**हाथी दरवाजा**
15. मड़फा क्षेत्र की प्रमुख वनस्पतियां हैं-	**उपर्युक्त सभी**
16. मड़फा क्षेत्र में पाए जाने वाले प्रमुख वन्य जीव हैं-	**उपर्युक्त सभी**
17. मड़फा का दुर्गपाल था?	**बाघदेव**
18. मड़फा किस रेखा पर स्थित है?	**कर्क रेखा**
19. मड़फा किस ऋषि की तपोस्थली थी?	**उपर्युक्त सभी**

20. वर्तमान समय में मड़फा दुर्ग में सुरक्षित एक मात्र द्वार है- **हाथी दरवाजा**

21. जैन मन्दिर किससे निर्मित है? **लाल बलुआ पत्थर**

22. कुटी के प्रांगण में स्थित है- **उपर्युक्त दोनों**

23. मड़फा जाने हेतु पक्का सीढ़ी मार्ग स्थित है- **मानपुर**

24. मड़फा के पश्चिम में कौन सी नदी प्रवाहित हैं- **बाणगंगा**

25. नीचे मड़फा से सम्बन्धित विभिन्न स्थलों के चित्र दिये गए हैं, इन्हें पहचानिए और चित्रों के सम्मुख दिये गए स्थान पर उनके नाम इंगित कीजिए?

i. **हाथी दरवाजा**
ii. **शिव मन्दिर**
iii. **पञ्चमुखी शिव**
iv. **स्वर्गारोहण दीघी**
v. **कुटी**
vi. **जैन मूर्ति**
vii. **चन्देल कालीन बडा मंदिर**
viii. **राम नामी गुफा**
ix. **लघु चन्देल कालीन मन्दिर**
x. **चरण पादुकाएँ**
xi. **न्याग्रोदक कुण्ड**

(V) एक्सल गणना शीट

क्रम संख्या	नाम	प्रश्न 1	प्रश्न 2	प्रश्न 3	प्रश्न 4	प्रश्न 5	प्रश्न 6	प्रश्न 7	प्रश्न 8	प्रश्न 9	प्रश्न 10	प्रश्न 11	प्रश्न 12	प्रश्न 13	प्रश्न 14	प्रश्न 15	प्रश्न 16	प्रश्न 17	प्रश्न 18	प्रश्न 19	प्रश्न 20	प्रश्न 21	प्रश्न 22	प्रश्न 23	प्रश्न 24	प्रश्न 25	प्रश्न 26	प्रश्न 27	प्रश्न 28	प्रश्न 29	प्रश्न 30	प्रश्न 31	प्रश्न 32	प्रश्न 33	प्रश्न 34	प्रश्न 35	
1	सूरज द्विवेदी	1	1	0	1	1	1	1	1	1	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	0	0	0	1	20
2	रामप्रकाश	1	1	0	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	0	1	1	1	0	27
3	विश्व देव यादव	1	1	1	0	1	1	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	15
4	रामविलास	1	1	1	1	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	15
5	पीयूष द्विवेदी	1	0	1	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	8
6	राजीव कुमार	1	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	16
7	अमोल तिवारी	1	1	0	1	1	1	0	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	0	0	0	0	0	0	16
8	रौशन कुमार	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	1	1	0	0	1	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	14
9	मनोज यादव	1	1	0	1	1	1	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	21
10	शिव प्रसाद	1	1	0	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	19
11	रामबाबू	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	11
12	अमर नाथ	1	0	1	1	1	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	14
13	रामबली	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	8
14	अनिल कुमार	1	1	1	0	1	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	13
15	अतुल पटेल	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	1	0	1	1	1	0	0	0	0	0	0	0	15
16	आनन्द कुमार पटेल	1	1	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	1	0	0	28
17	मो. मोफीस खान	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	0	26
18	पंकज कुमार	1	1	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	15
19	आसाराम पटेल	1	1	1	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	18
20	शुभम रामदेव	1	1	0	0	1	1	1	0	1	0	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	0	1	0	1	0	1	0	0	0	1	0	16
21	सुशील कुमार	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	1	1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	20
22	विवेक कुमार	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	17
23	अशोक प्रसाद	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	18
24	अजीत कुमार सिंह	1	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	0	1	1	0	0	0	1	0	20
25	राकेश यादव	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	0	1	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	12
26	दयाशंकर सिंह	1	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	6
27	चन्द्र शेखर	1	1	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	0	15
28	रोहित कुमार यादव	1	1	1	1	1	1	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	0	0	0	0	1	0	18
29	सुभाष चन्द	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	1	0	19
30	सुरेश कुमार	1	1	1	0	1	1	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	0	0	0	1	1	26
31	अशोक	1	1	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	10
32	सतीश कुमार	1	1	1	1	1	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	0	0	0	1	1	24
33	राम औतार साहू	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	23
34	अनिल कुमार पाल	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	28
35	लवकुश	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	0	0	15
	योग	35	27	24	18	34	32	14	14	20	22	2	18	19	20	24	32	19	15	15	21	24	18	9	11	21	17	21	13	18	13	4	3	4	10	5	
1	रजिया यादव	1	1	1	1	1	1	1	0	1	1	0	0	0	0	1	1	1	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	19
2	रजनी देवी वर्मा	1	1	1	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	15
3	सुधा सोनी	1	1	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	12
4	रीता यादव	1	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	7
5	रामदुलारी	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	14
6	आरती देवी	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	0	0	16
7	रजनी देवी	1	1	1	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	0	0	16
8	संध्या देवी	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	1	0	0	0	1	18
9	किरण तिवारी	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	0	1	24
10	कविता द्विवेदी	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	1	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	20
11	नीता देवी	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	28
12	सुधारानी	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	20
13	रानी देवी	1	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	20
14	हेमवती	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	1	0	1	0	0	0	0	0	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	20
15	आरती देवी साहू	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	0	1	0	1	1	1	1	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	17
	योग	15	15	10	8	15	15	6	5	12	11	0	9	4	7	14	12	6	8	3	3	13	2	2	3	12	5	11	5	7	8	4	1	3	6	7	
	छात्र	35	27	24	18	34	32	14	14	20	22	2	18	19	20	24	32	19	15	15	21	24	18	9	11	21	17	21	13	18	13	4	3	4	10	5	
	छात्राएँ	15	15	10	8	15	15	6	5	12	11	0	9	4	7	14	12	6	8	3	3	13	2	2	3	12	5	11	5	7	8	4	1	3	6	7	
	महायोग	50	42	34	26	49	47	20	19	32	33	2	27	23	27	38	44	25	23	18	24	37	20	11	14	33	22	32	18	25	21	8	4	7	16	12	

(VI) ऑनलाइन गणना कैलकूलेटर स्क्रीनशॉर्ट

Descriptive Statistics

	N	Mean	StDev	SE Mean
Sample 1	35	17.34286	5.59381	0.9455
Sample 2	15	17.73333	4.94927	1.2779

2 Sample t Tutorial

Observed difference (Sample 1 - Sample 2): -0.39047
Standard Deviation of Difference : 1.5897

Unequal Variances
DF : 29
95% Confidence Interval for the Difference (-3.6418 , 2.8608)
Test Statistic t = -0.2456
Population 1 ≠ Population 2: P-Value = 0.8078
Population 1 < Population 2: P-Value = 0.5961
Population 1 > Population 2: P-Value = 0.4039

Equal Variances
Pooled Standard Deviation: 5.4138
Pooled DF: 48
95% Confidence Interval for the Difference (-3.5868 , 2.8058)

Test Statistic t= -0.2337
Population 1 ≠ Population 2: P-Value = 0.8162
Population 1 < Population 2: P-Value = 0.5919
Population 1 > Population 2: P-Value = 0.4081

Download the 2-Sample t-test Excel Calculator

Data

Enter Raw Data

	Mean	StDev	n
Sample 1	17.34286	5.59381	35
Sample 2	17.73333	4.94927	15

Submit

Show Sample Data

Mean 1: 17.3429

Mean 2: 17.7333

N1: 35

N2: 15

Std Dev.1: 5.59381

Std Dev.2: 4.94927

---

t (0.025) for 95% CI= 2.0218
declare p larger than alpha=0.05 not significant.

mean1 eq: 17.343 (var1= 31.291) (se= 0.946)
mean2 eq: 17.733 (var2= 24.495) (se= 1.278)

Probability that var1<var2
p=0.32033 (left: 0.6797; double: 0.6406)

Difference between means:
M1-M2=17.343-17.733=-0.39047
sd=9.2217; se=1.5897
95% CI of difference:
-3.6045 <-0.39047< 2.8235 (Wald)
t-difference: -0.246
df-t: 33.2; p= 0.40324
(left p: 0.5968; two sided: 0.8064)

137

Give at least two means.

Mean 1 (E):	17.34286
Mean 2 (O,C):	17.73333
N of Cases 1:	35
N of Cases 2:	15
Std Dev 1:	5.59381
Std Dev 2:	4.94927
Width of C.I.: or 1-alpha	95 %

SISA

T-test

For help go to SISA

Give at least two means.

Mean 1 (E):	0
Mean 2 (O,C):	00.00
N of Cases 1:	000
N of Cases 2:	000
Std Dev 1:	00.00

E.g: 13,23,12,44,55

19,15,12,7,14,16,16,18,24,20,28,20,20,20,17,20,27,15,15
,9,16,16,14,21,19,11,14,9,13,15,28,26,14,18,16,20,17,18,
20,12,6,15,18,19,26,10,24,23,28,15

Calculate Reset

Total Numbers: 50
Mean (Average): 17.46
Standard deviation: 5.36127

Calculate Reset

Total Numbers: 15
Mean (Average): 17.73333
Standard deviation: 4.94927
Variance(Standard deviation): 24.49524
Population Standard deviation: 4.78145

विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन





